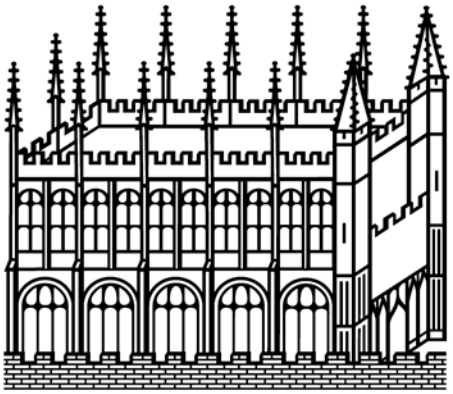


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

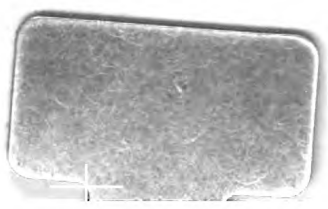
http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

(13.E.16) Hindi Puran Sk 1

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.



Brahmakarakhanda

Barmhotra Khand

ब्रह्मोत्तरखण्ड

का

भाषानुवाद

जिस में अनेक प्रकार के इतिहास. दाशार्ह राजा की कथा. शिव पंचाक्षर मंत्र माहात्म्य. कल्माषपाद राजा की कथा. चांडाली का इतिहास. शिवरात्रि व्रत माहात्म्य. गोकर्ण क्षेत्र माहात्म्य. चतुर्दशी को शिव पूजन का माहात्म्य. श्रीकर नाम गोपकुमार की कथा. प्रदोष माहात्म्य. सोमवार माहात्म्य. ब्रह्मरात कुमार और सीमंतिनी नाम राजपुत्री की कथा. भद्रायुध नाम राजकुमार और दैत्यकुमार का इतिहास. भद्रायुध के प्रति कश्यप योगीश्वर कृत शिव कवच का उपदेश. भद्रायुध कर के शत्रुओं का पराजय. एक ब्राह्मण और व्याघ्र की कथा. वामदेव योगी और एक राक्षस का संवाद. चंडक नाम भील और उस की भीलनी की कथा. उमा महेश्वर व्रत का विधान और फल. शारदा नाम कन्या ब्राह्मण कन्या की कथा. रुद्राक्ष माहात्म्य. कुक्कुट और मर्कट की कथा. रुद्राध्याय के पाठ का माहात्म्य. इतिहास और पुराण श्रवण का माहात्म्य. इत्यादि अनेक विषय वर्णित हैं ॥

जिस को

निखिलोत्तम पुराणगण मण्डित. निज यशश्चन्द्र चन्द्रिका धवलीकृत दिगन्त. कार्य्यजन हितैषि श्री मुंशी नवलकिशोर जी की ॥

आज्ञानुसार

काश्मीराधि पति श्रीमहाराज गुलाबसिंह के मुख्य पंडित श्रीपण्डित वासुदेव जी के पुत्र. अलवर प्रान्त वर्त्ति हसनाखुर्द ग्राम निवासि. गौतमिशाण्डिल्य विप्रकुलोत्पन्न. वर्त्तमान समय में जयपुर देशाधीश श्री महाराजाधिराज श्री १०८ माधवसिंह जी के आश्रित श्री पण्डित दुर्गाप्रसाद ने

स्कान्द पुराणान्तर्गत संस्कृत ब्रह्मोत्तरखण्ड से अति ललित आर्य भाषा में किया

पहली बार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के मुद्रालय में मुद्रित हुआ

सन १८८१ ई.

विज्ञप्ति।

इस महीने अर्थात् जून सन् १८८१ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लियेतय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी है और उनका मोल्य भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यापार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेज कर क़ीमत का निर्णय करलें।।

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	हरिवंश पर्व	रामायण रामविलास	विनय पत्रिका बालशि-
महाभारत	महाभारत पर्व अ	रामायण तुलसीकृत	नाटक
१ पहिले हिस्सा में	लेहदा भी है	रामायण सटीक मय	प्रबोध चंद्रोदयनाटक
आदिपर्व, सभापर्व	१ आदि पर्व	मानसदीपिका कोष	रामाभिषेक नाटक
वनपर्व॥	२ सभा पर्व	आदित्यहृदय स्तोत्र	आनंद रघुनंदन नाटक
२ दूसरे हिस्सा में	३ वन पर्व	तथा मोटे अक्षरों की	वेदान्त
विराटपर्व, उद्योग	४ विराट पर्व	जयतसवीरवाले पुस्तक	योग वाशिष्ठ
पर्व, भीष्म पर्व,	५ उद्योग पर्व	रामायण तुलसीकृत	आनन्दा स्तवर्षिणी
द्रोण पर्व॥	६ भीष्म	सातों काण्ड	काव्य
३ तीसरे हिस्सा में	७ द्रोण पर्व	१ बालकाण्ड	सूरसागर
कर्ण पर्व शल्य प-	८ कर्ण पर्व	२ अयोध्याकाण्ड	कृष्ण सागर
र्व गदा पर्व सौप्ति-	९ शल्यपर्व वग-	३ आरण्य काण्ड	विश्राम सागर
क पर्व स्त्री पर्व	दा पर्व सौप्तिक पर्व	४ किष्किन्धा काण्ड	प्रेम सागर
शोक पर्व शान्ति प-	स्त्री पर्व शान्ति	५ सुन्दरकाण्ड	ब्रजविलास छोटा बड़ा
र्व में राजधर्म आ-	पर्व राजधर्म आप	६ लंका काण्ड	कृष्ण प्रिया
पद धर्म मोक्ष धर्म	द धर्म मोक्ष धर्म	७ उत्तर काण्ड	विजयमुक्तावली
४ चौथे हिस्सा में	१० शान्ति पर्व राज	रामायण शब्दार्थ को	अनेकार्थ
शान्ति पर्व सा ध-	धर्म व आपद धर्म	रामायण का इतिहास	छन्दोर्णव पिंगल
र्म अश्वमेध आश्रम	व मोक्ष धर्म व ज्ञान ध	रामायण मानसदीपि-	कविकुलकल्पतरु
वासिक पर्व मुशल	११ अश्वमेध आश्रम	रामायण कवितावली	रसराज
पर्व महाप्रस्थान	वासक मुशल पर्व	रामायण गीतावली	सतसई मूल व टीका
स्वर्गारोहन पर्व	महाप्रस्थान स्वर्गा	रामायण गीतावली स	समा विलास
हरिवंश पर्व	रोहन	विनय पत्रिका बा- गो-	तुलसी शब्दार्थ
	१२ हरिवंश पर्व		

सूचीपत्र ब्रह्मोत्तर खण्ड का ॥

इस ग्रंथमें अनुष्टुप श्लोक २२०० हैं और २२ अध्याय भी हैं जिन्हों में नीचे लिखेहुये विषय वर्णित हैं ॥

अध्याय	विषय	पृ० से	पृ० त०
१	मथुरा के दाशार्ह नामक राजा की कथा और शिव पंचाक्षर मंत्र का माहात्म्य वर्णन	५	१०
२	कल्माष पाद नामक सूर्यवंश के एक राजा की कथा और पश्चिम समुद्र तीरस्थ गोकर्ण नाम शिवक्षेत्रका माहात्म्य कथन..	१०	१६
३	गोकर्ण क्षेत्र में चांडाली का मोक्ष होना जो पूर्वजन्म में एक दुराचार ब्राह्मणी थी उसकी अपूर्व कथा गौतम मुनि करके वर्णित और शिव रात्रि व्रत का माहात्म्य	१६	२६
४	किरात देश के विमर्दन नामक राजा की विचित्र कथा और चतुर्दशी के दिन शिव पूजा तथा व्रत का माहात्म्य और शिव पूजा दरशन का फल	२६	३३
५	परम शिव भक्त श्रीकर नाम गोप कुमार की कथा जिस के वंश में नन्दगोप वृंदाबन बासी उत्पन्न हुवा और जिस के घर में श्री कृष्णचन्द्र पुत्र होकर रहे..	३३	३६
६	प्रदोष व्रत और प्रदोष पूजा का माहात्म्य और एक राज कुमार तथा ब्राह्मण कुमार की मनोहर कथा का वर्णन ..	३६	४५
७	शांडिल्य मुनि प्रोक्त प्रदोष पूजन बिधि, राजकुमार और ब्राह्मण कुमार की कथा और प्रदोष व्रत महिमा	४५	५५
८	सोमवार व्रत महिमा और चन्द्रांगद नाम राजपुत्र तथा उसकी रानी सीमंतिनी की महा अद्भुत कथा	५५	६६
९	दोब्राह्मण कुमारों की कथा और परम शिव भक्ता सीमंतिनी नाम राज कुमारी का प्रभाव वर्णन	६०	७२
१०	भद्रायुष नाम राजपुत्र और वैश्य कुमार की कथा तथा शिव योगी के प्रभाव का वर्णन	७२	८०
११	भद्रायुष के प्रति ऋषभ योगीश्वर कृत सदुपदेश का वर्णन..	८०	८१
१२	भद्रायुष के प्रति ऋषभ योगीश्वर कृत शिवकवच का उपदेश जो शिव कवच सब देशों में प्रसिद्ध और प्रभाव युक्त है जिस को शिव वर्म भी कहते हैं	८१	८५

अध्याय	विषय	पृ० से	पृ० त०
१३	भद्रायुष करके शत्रु पराजय औ उस्की राज्य प्राप्ति तथा उस्के बिवाह का बर्णन	८५	९१
१४	एक ब्राह्मण औ ब्याघ्रकी कथा तथा भद्रायुष के प्रभाव का बर्णन	९१	९६
१५	बाम देव योगी औ एक राक्षस के कथा बर्णन द्वारा बिभूति का माहात्म्य बर्णन...	९६	१०१
१६	बाम देव योगी करके राक्षस प्रति भस्म धारण और त्रिपुंड्र माहात्म्य का कथन	१०१	१०५
१७	चण्डक नाम भील औ उस्की भीलनी की अद्भुत कथा जो परम शिव भक्तथे..	१०६	११०
१८	उमा महेश्वर व्रत का बिधान और शारदा नामक ब्राह्मण कन्या की कथा	११०	११५
१९	शारदा की कथा और शिव जीके प्रभाव का वर्णन ..	११५	१२०
२०	रुद्राक्ष का अनन्त माहात्म्य और प्रभाव का वर्णन तथा एक बेश्या के कुक्कुट और मर्कट की बिचित्र कथा ...	१२०	१२५
२१	एक राज कुमार की चमत्कार कथा और रुद्राध्याय के पाठ का माहात्म्य तथा प्रभाव बर्णन ...	१२५	१३०
२२	एक ब्राह्मणी की कथा का बर्णन और अंत्य में पुराण श्रवण का फल कथन	१३०	१३८

इति ॥

———

॥ भूमिका ॥

॥ विदित हो कि ॥

संपूर्ण श्रुति स्मृति इतिहास पुराण आदिकों का परिशीलन करनेवाले और संपूर्ण वर्ण आश्रमों के धर्म जानने वाले इसलोक तथा परलोक में भोग मोक्ष के अभिलाषी सत्पुरुषों के लिये धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ये चार पुरुषार्थ हैं इनमें मोक्ष भी प्रधान है ॥

इन पुरुषार्थों का लाभ बेदका अभ्यास करके बेदोक्त कर्मके अनुष्ठान से होता है जिस दिन से परमेश्वर ने इस संसार को उत्पन्न किया उसी दिनसे उसके श्वास रूप बेद और बेदोक्त कर्म का भी प्रचार हुवा और बहुत कालतक चला आया परंतु मंदबुद्धि, आलसी, अल्पायुष पुरुषोंकोइतनेबड़ेबेदसेऔर बेदोक्त कर्मकेअनुष्ठानसे पुरुषार्थप्राप्ति होना अत्यंत कठिनहै यहसमझ कर परम दयालुतासेश्रीबेद व्यासजीनेकलियुग के प्रारंभही में बेदके बिभाग कियेअर्थात् एक बेदको चार खंडोंमें बांटकर जुदे जुदे नामरक्खेऔर उन बेदों काहीआशयलेकर अठारह पुराण और सारेसंसारका सार श्रीमहाभारत रचा तबसे जो फल बेद सेकठिन रीति कर प्राप्त होताथा वही फल पुराणइतिहास आदि कों से बे परिश्रम मिलने लगा क्योंकि बेद में जितने बाक्य हैं सब प्रभु संमित हैं अर्थात् राजा की तरह आज्ञा देते हैं जैसा (अहरहः संध्या मुपासीत) दिन दिन संध्या करो इस से फल की इच्छा वाले कलियुग के जीवों की प्रवृत्ति कम होतीहै परंतु पुराण इतिहास आदि मित्र संमित हैं कि मित्र की भांति भला उपदेश करतेहैं जैसा (रामादिवत्प्रवर्तितव्यं नरावणादिवत्)

कि भाई राम की रीति पर चलना चाहिये रावण की रीति पर नहीं रामकी राह पर चलने से इस लोक में यश परलोक में कल्याण और रावण के मार्ग चलने वालों को इस संसार में निन्दा परलोक में दुर्गति होती है यह पुराण इतिहास आदि देखने से बोध होताहै इसी से पुराण आदिका अवलोकनकरने वाले पुरुष रामचंद्र जी की तरह सन्मार्ग में चलेंगे रावण की भांति कभी कुमार्ग का अनुशरण न करेंगे मित्रस्यचक्षुषेक्षेत यह श्रुति भी है कि मित्र के नेत्र से सब व्यवहार देखे और पुराण का माहात्म्य भी बेद से न्यून नहींहै क्योंकि वृहदार-एयक आदि उपनिषदों में बेदकी भांति पुराण इतिहास आदि को भी परमेश्वर का निश्वसित लिखा है और भारतं पंचमोबेदः पुराणंपंचमोबेदः। बेदःप्राचेतसादासीत्साक्षाद्रामायणात्मना ॥ इत्यादि बाक्यों से पुराण भी बेदके तुल्यही ठहरते हैं इसलिये जो पुरुष इसलोक और परलोक में अपना कल्याण चाहते हैं उनको पुराण का पठन श्रवण करना अवश्य योग्य है ॥

ऊपर लिख आयेहैं कि श्रीबेदव्यासजी नेअष्टादश पुराणरचे उनकेनाम और श्लोकोंकी संख्या नीचे लिखतेहैं ॥

१ ब्रह्मपुराण १००००	२ पद्मपुराण ५५०००	३ बिष्णु पुराण २३०००
४ शिवपुराण २४०००	५ भागवत १८०००	६ नारदपुराण २५०००
७ मार्कण्डेयपुराण ९०००	८ अग्निपुराण १५४००	९ भविष्यपुराण १४५००
१० ब्रह्मवैवर्त्तपुराण १८०००	११ लिंगपुराण ११०००	१२ बाराहपुराण २४०००
१३ स्कंदपुराण ८११००	१४ बामनपुराण १००००	१५ कूर्मपुराण १७०००
१६ मत्स्यपुराण १४०००	१७ गरुड़पुराण १९०००	१८ ब्रह्मांडपुराण १२०००

इनमें कई ग्रंथों के मत से शिवपुराण के स्थान में वायुपुराण लेते हैं इस प्रकार सब पुराण मिल कर चारलाख श्लोक हैं और एक लाख श्लोक महाभारत है परंतु आज कल समय के दोष से इन पुराणों का प्रचार बहुत कम होगया भागवत आदि दो चार पुराण केवल मिलते हैं जो कहीं और भी कोई पुराण मिलै तो इतना अशुद्ध होगा कि जिसके एक अध्याय का तात्पर्य भी बहुत कठिनता से ज्ञात होय यदि एक आध पुराण कहीं शुद्ध भी मिलजाय तो अच्छे संस्कृतज्ञ पंडित के बिना उस्का अभिप्राय जानना कठिन है परंतु समय के दोष से संस्कृत का पठन पाठन बहुत कम होगया संस्कृत न जानने से पुराण इतिहास आदिक का परिशीलन नहीं होसकता और पुराणादिका पठन श्रवण-छुट जानेसे सब बर्णाश्रमी आर्यजन अर्थात् हिन्दूलोग अपने प्राचीन धर्मों से अनजान रहने लगे इसी से धर्म प्रति दिन क्षीण होता चला अधर्म की वृद्धिभई और अधर्म बढ़ने से इस देश के मनुष्य भाग्यहीन बुद्धि शून्यपराक्रम रहित होगये क्योंकि (यतोधर्मस्ततोजयः)जहां धर्म वहांजय होताहै ॥

इन बातों से जान पड़ता है जो आर्य लोग अब भी पुराण इतिहास स्मृति आदि का अभ्यास करके अपने धर्म में प्रवृत्त होंय तो फिरभी इस देश का भाग्य उदय होजाय परंतु पुराण आदि देखना संस्कृत बिना जाने नहीं होसकता और संस्कृत को बुद्धिमान मनुष्य भी पांच सात बर्ष के परिश्रम बिना नहीं जान सकता है ॥

यह समझ कर भारत बर्ष के परम हितैषी अपने प्राचीन धर्म का जीर्णोद्धार करने में तन,मन,धनसे प्रवृत्त पंडित जनों के मनोर्थ पूर्ण करने को मानों कल्पतरु आर्यजन औ आर्या-

वर्त की उन्नति के लिये दिन रात तत्पर श्रुति स्मृति प्रोक्तधर्म के प्रचार के लिये पूरे सहायक श्रीयुत श्री मुनशी नवलकिशोर जीने बिचार कियाहै कि संपूर्ण पुराण इतिहास आदियदि अपने देश की सरल भाषा में अनुवाद होकर मुद्रित किये जायं तो सबका उपकार हो और हमारे देशके सब मनुष्य अपने धर्म में अभिज्ञ होकर उसका आचरण करें औ मनुष्यजन्मका फलपावें॥

अब पूर्वोक्त महाशय श्रीमुनशी नवलकिशोर जीकी आज्ञासे पुराणों के भाषामें अनूबाद करने का प्रारंभ करते हैं तिसमेंभी (स्वल्पारंभाः क्षेमकारा भवंति) अर्थात् छोटे आरंभ कल्याण दायक होते हैं इस शास्त्र की आज्ञा से औ इतने बड़े कामके प्रारंभमें मंगलमूर्ति श्रीसदा शिवजीका माहात्म्यही बर्णन करना उचित समझ कर औ इस ग्रंथमेंकी कथा अत्यंत रोचक औ सर्ब देश प्रसिद्ध जान्नकर स्कंद पुराण का एक भाग ब्रह्मोत्तर खंड नामक प्रथम अनुबाद किया जाताहै जो परमेश्वर का अनुग्रह रहा तो अपने बंधु सरल हृदय आर्यजनों के लिये सब पुराण का अनुबाद करवाकर श्रीमुनशी जी शीघ्रही मुद्रित करेंगे कि जिनके पठन श्रवण से संपूर्ण शिष्ट जनपरमेश्वरके अनुगृहीत हों और प्रति दिन सिद्धि वृद्धि पावें ॥

संबत् १९३६ माघकृष्ण २

स्कन्दपुराण ॥

के

ब्रह्मोत्तर खण्ड ॥

का

भाषाअनुवाद ॥

पहिला अध्याय ॥

श्रीगणेशायनमः नमःशिवाय ॥

दो० बिबुध मुकुटमणि दीपिका नीराजित दिन रैन।
बिघ्न हरैं हेरंब के चरण कमल सुख दैन १ ॥
भजौ नित्य गौरी गिरिश सकल सिद्धि के हेतु।
भक्त मनोरथ कल्प तरु भवसागर के सेतु २ ॥
शौनकादि सुनि बिष्णु की कथा परम शुभ दैन।
पूछत सूतहिं शिवकथा तथा सुमंगल ऐन ३ ॥

ग्रंथके आरंभ में श्रीवेदव्यास जी श्री सदाशिव स्मरण रूप मंगला चरण करते हैं ॥

दो० ज्योतिर्मात्र सुरूपजे निर्मल ज्ञान अधार।
शांतिलिंग रूपी शिवहि बिनवों बारंबार १ ॥

॥ कथा का प्रारंभ ॥

एक समय नैमिषारएय तीर्थ में ईश्वर की कथा में परम रसिक शौनकादि ऋषि इतिहास पुराण में अति प्रवीण जो श्रीव्यास जी के शिष्य सूतजी से पूछते भये कि हे सूतजी आपने संपूर्ण पापों का दूर करने हारा परम पबित्र श्रीबिष्णु महाराज का चरित्र बर्णन किया सो सुनिके अति आनंद भया अब श्रीशिव जीके परम मंगल देनहार नाना चरित्र तथा उनके भक्तों की

कथा और भक्ति का माहात्म्य शिव मंत्र के जपका फल आप कृपा करके बर्णन कीजिये इस प्रकार भक्ति और बिनय से भरी हुई ऋषियों की बाणी सुन श्रीसूत जी बोले कि हे ऋषियो जीवों के लिये यही परम कल्याण है कि जो शिवजी की कथा में भक्ति होय परंतु उस भक्ति का बर्णन कल्प भर की आयुष होय तौ भी पूरा नहीं होसकता इस लिये शिव भक्ति का थोड़ा सा बर्णन करता हूं जैसे सब प्रकार के पुण्य औ यज्ञों में जप यज्ञ मुख्य है और जिस प्रकार सब देवताओं में श्रीशिव जी मुख्य हैं इसी भांति सब मंत्रों में शिव षडक्षर मंत्र प्रधान है इसी मंत्र का प्रथम अक्षर छोड़ देने से जो पांच अक्षर का मंत्र होताहै उसको भी सिद्धि की इच्छावाले मुनि लोग मन लगाय निरंतर जपते हैं और भुक्ति मुक्ति पाते हैं इस पंचाक्षर मंत्र का माहात्म्य चतुर्मुख ब्रह्मा भी नहीं कह सकते क्यों कि श्री शिवजी इसी मंत्र में रमते हैं संसार की फांसी में बंधे हुये जीवों के उद्धार के लिये ओंनमःशिवाययह परम मंत्र है जिस मनुष्य के हृदय में यह मंत्र होय उसको तीर्थ,व्रत, जप,तप,यज्ञ आदि का कुछ प्रयोजन नहीं जीव तब तक ही संसार सागर की तरंगों के झकोरों में भ्रमते हैं जब तक महा पातक हरण हार और सबवेद बेदांत का सार इस मंत्रको ध्यान लगायनहीं जपते इसी मंत्रके आरंभ का प्रणव छोड़ कर स्त्री शूद्र और नीच जाति भी जपने से मुक्ति पाते हैं यह मंत्र मोक्ष मार्ग में दीपक के तुल्य है और अज्ञान रूपसमुद्रके सुखानेको मानों बड़वानलहै इस मंत्र में दीक्षा,होम,संस्कार,तर्पण आदि कर्म का कुछ प्रयोजन नहीं और न कुछ काल का नियम है केवल किसी अच्छे तीर्थ पर सद्गुरु के मुख से कान में सुन ले औ जपै तो अवश्यही मुक्ति

पावै खाली शिव यही दो अक्षर सब महा पातक दूर करने को बहुत हैं जो इनके अंतमें नमस्कार भी लगा दिया जाय तो फिर क्या कहना है मुक्ति तो हाथ परही धरीहै इस लिये सब मनुष्यों को उचित है कि सद्गुरु से इस मंत्र का ग्रहण कर उत्तम तीर्थ पर बैठ नियम से जप करै जिससे सब सिद्धि होय परंतु गुरू भी निर्मल शांत स्वभाव साधु थोड़ा बोलने वाले काम क्रोध से रहित अच्छे मार्ग में चलने वाले और जितेंद्रिय होना चाहिये ऐसे गुरु जो अपनी कृपासे मंत्र उपदेश करै तो मंत्र सिद्धि बहुत शीघ्रहोय और प्रयाग, पुष्कर, केदार, सेतुबंध-रामेश्वर, गोकर्ण, नैमिषारएय आदि उत्तम तीर्थों पर बैठकर जप ने से भी मंत्र अवश्यही सिद्ध होता है इस में हम एक पुराणी कथा कहते हैं जिसके सुनने से कल्याण होय॥

॥ कथा ॥

मथुरा पुरी में एक राजा बड़ा पराक्रमी दाता और नीति शास्त्र का जानने वाला यदुबंशी दाशार्ह नामक था उस राजा ने काशी के राजा की कन्या कलावती नामक अति रूपवती और शीलवती से अपना बिवाह किया बिवाह कर अपनीराज-धानी मथुरा में पहुंचा एक दिन रात्रिके समय अपनी प्राण-प्रिया रानी से सेज पर आने को कहा पर रानी ने राजा की आज्ञा अंगीकार न किया तबतो राजा ने उसको अनेक भांति समझाया बुझाया परंतु उसके चित्त में राजा का कहना एक न आया तब राजा हठ से पकड़ लाने को उठा तो रानी बोली कि महाराज मैं व्रत में हूं मुझे आप न छुवें इस में कुछ कारण है आप सब प्रकार का धर्म अधर्म जानते हैं इसलिये मेरे ऊपर हठ न कीजिये क्योंकि स्त्री पुरुष दोनों की इच्छा से जो संग

होता है उसी में आनंद है बलात्कार के भोग में न कुछ प्रीति हो औ न सुख होय इस भांति रानी ने बहुत समझाया परंतु राजाने कामके बशहो हठसे रानीका हाथ पकड़कर आलिंगन करहीलिया परंतु आलिंगन करतेही रानी का शरीर तप्तलोह पिंडसागरम मालूमदिया औउस्के स्पर्शसे राजाका शरीरजल-नेलगा तबतो राजाने भयभीतहो रानीको छोड़दिया और कहा किहे प्रियेबड़ाही आश्चर्य है कियह कमलसा कोमल तेरा देह मुझेअग्निकी भांतिजलाताहै इसप्रकार राजाने भयभीतहो और आश्चर्यसे रानीसे कहा तब रानी हाथ जोड़ बहुत बिनयसे कहनेलगी किमहाराज मुझे लड़कपनमेंदुर्वासामुनिनेअपनीकृपा से शिवपंचाक्षर मंत्रका उपदेश कियाथा उसके प्रभाव से मेरा शरीरनिष्पाप होगयाहै तबसेमंत्र करकेहीन औरपापी पुरुषमुझे स्पर्शनहीं करसकते आपभी रजोगुणीहैं और मदिरापान करने वाली कुलटा स्त्री तथा बेश्याआदिका सदासेवन करतेहैं स्नान संध्या मंत्रकाजप शिवकाआराधन आप कभी नहीं करते फिर आपमेरे आलिंगन करनेकी क्योंकरइच्छा करतेहैं यह रानीका बचन सुन राजा बोलाकिहे प्राणप्यारी उसशिव पंचाक्षर मंत्र कामुझेभी जल्दी उपदेशकर जिससे मैं निष्पापहो तुझे आलिं-गन करूं तबरानीबोली किमहाराज मैंआपको उपदेशनहीं कर सकती आप मेरे गुरु हैं क्योंकि धर्मशास्त्र में स्त्री का गुरु पतिही लिखाहै इसलिये आपअपने कुलगुरुश्रीगर्गमुनिकेपासप्रार्थनाकरें वेआपका मनोऽर्थ सफल करेंगे इसप्रकार बिचारकर राजा और रानीदोनों श्रीगर्गमुनिके समीपजाय उनकेचरण कमल परशिर नवाय एकांत में अपना मनोऽर्थ निबेदन किया कि कृपा निधान आपशैव पंचाक्षर मंत्रका मुझेउपदेश कीजिये जिससे मेरे ज्ञान

और अज्ञानसे किये हुये पातक के पहाड़ बिलाय जांय और मैं निष्पापहो इसमनुष्य जन्मका फल पाऊं इसप्रकार अति बिनय युक्तराजाकी बिनती सुनसब ब्राह्मणोंके शिरोमणि गर्गमुनिउन दोनों को यमुनाजीके तटपर लेगये औरवहां एक उत्तम वृक्ष के नीचे बैठकर राजा को श्रीयमुनाजी में स्नान कराय उस दिन उपवास रखवाय पूर्वाभिमुख अपने सम्मुख बैठाय राजाके शिर पर हाथ धरके दहिने कानमें शिवपंचाक्षर मंत्र का उपदेश कर दिया उसमंत्रके प्रभावसे और गर्गमुनिके हाथके स्पर्शसे राजा के देहसे करोड़ों काग जिनके पंखजल रहे हैं और बुरी भांति चिल्लाते हुये निकल २ करभूमिपर गिरने और वहांहीं भस्म होनेलगे यहकथा शौनक आदि सब ऋषियोंको सुनाय सूतजी बोले किहे ऋषियो यहचमत्कार देखराजा और रानी बड़े आश्चर्यसे गर्गमुनि से पूछते भये किमहाराज यह क्या लीला है किमनुष्यके शरीरसे इतनेकाग कहांसे निकले औरभस्म क्यों कर होगये यहआप हमारा संदेह दूर कीजिये यहसुन गर्गमुनि बोले किसुन राजा तूने अपने अनेक पूर्व जन्मोंमें बहुत पापकिये हैंऔर कुछपुण्य भी किया है परंतु तेरे पापों से पुण्य अधिक है जिससे उत्तम कुलमें जन्महुआ औरराज्य मिलाजो पापअधिक होयतो नीचयोनिमें जन्महोय जो दोनों बराबरहोयं तो साधारण मनुष्य जन्महोताहै यह शैव पंचाक्षरमंत्र तेरे हृदयमें जाते हीअनेक जन्मोंके पाप काकरूपहो निकल भगे और भस्म हुवे करोडों ब्रह्महत्या, अगम्यागमन, सुवर्ण की चोरी, सुरापान, भ्रूण हत्या आदि लाखों पाप और जो अनेक जन्मोंके पाप इकट्ठे होरहे हों येसब शैव पंचाक्षर मंत्र के केवल धारणसेही दूरहो जातेहैं हेराजा येतेरे करोड़ों पाप दग्धहोगये अबतू पबित्रशरीर

इस अपनी रानी के साथ सुखसे बिहार कर इस प्रकार गर्ग मुनि राजा को मंत्र उपदेश कर दोनोंको अपने आश्रममें लाये वहां राजा और रानी गुरूजी के चरणमें प्रणाम कर अपनी राज धानी में आये और सुख पूर्वक बिहार करनेलगे वहीरानी जो राजाको आलिंगन करते अग्निसी लगती थी अब चंदनसी शीतल लगने लगी राजाको भी रानीके लाभसे इतना आनन्द भया कि जितना दरिद्री मनुष्यको निधि अर्थात् भूमिमें गड़ाहुआ धन मिलने से आनन्द होता है इतनी कथा सुनाय सूतजीबोले कि हेमुनीश्वरो संपूर्ण वेद उपनिषद, पुराण, शास्त्र आदि के शिरोमणि शैव पंचाक्षर मंत्रका यह थोड़ासा माहात्म्य सबपाप दूर करने हारा तुमको संक्षेप से सुनाया है बिस्तारसे तो कहां लग कहैं ॥

दूसरा अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हेशौनकादि ऋषियोहम त्रिपुरारि श्री महादेवजी का और भी माहात्म्य सुनातेहैं जिसके सुनने सेसब संशय दूरहों श्री शिवजीका भक्तिसे पूजन सब पातकोंको दूर कर्ता हैंऔर सर्ब प्रकार के आनन्द, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष,दीर्घायुष्, बिजय,आरोग्यका देने वाला शिव पूजनसे अधिक उत्तम कोई कर्म नहींहै सबपाप दूर करनेको शिव पूजन से अधिक कोई प्रायश्चित्त नहींहै यह सब बड़े २ मुनियों का निश्चय है शास्त्रकाभी यहीनिश्चयहै कि शिवपूजन के तुल्य कल्याण देने वाला कोई कर्म नहींहै शिवपूजन जाने बिनाजाने न्यून अधिक आगे पीछे किसी भांति करो सदा उत्तमही फल देताहै शिवरात्रि नामक फाल्गुण महीने के कृष्ण पक्षकी चतुर्दशी के दिन

उपवास अति दुर्लभहै जो उपवास बनभी पड़ेतो रात्रिके समय जागरण दुर्लभ है जागरण होने पर भी रात्रि में शिवलिंग का दर्शन औ दर्शन होने पर शिवका पूजन दुर्लभ है पूजनमें भी बिल्वपत्र शिवलिंग के ऊपर अर्पण करना अत्यंत ही दुर्लभ है अनेक पूर्व जन्मकेसंचित पुण्योंकेउदयसेउस रात्रिमें बिल्वपत्र से शिवपूजा बनपड़े क्योंकि दशसहस्त्र बर्ष पर्यंत श्री गंगा में निरंतर स्नान करे औ एक बिल्वदल शिव लिंग पर चढ़ावे तो बराबर फल होता है अनेक दान औ पुण्य शिव रात्रिही में रहते हैं ब्रह्मादिक देवता औ बशिष्ठ आदि ऋषि इसी व्रतकी प्रशंसा करते हैं इस दिवस का उपवास अनन्त यज्ञोंके तुल्यहैजोकदाचित् रात्रिमें जागरणभी होजाय तो क्या कहनाहै इस रात्रिमें एक बिल्वपत्र शिव पर चढ़ाने से जो पुण्य होता है उसके सदृश तीनों लोक में भी कोई पुण्य नहीं इतना कह सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो इसमें एक बहुत उत्तम औ पुण्य बढ़ाने वाली कथा कहते हैं जो अत्यंत गुप्तथी औ गौतम मुनि ने प्रकाश करी ॥

इक्ष्वाकुबंश में बड़ा प्रतापी, परम धर्मात्मा, शास्त्रज्ञ, दयालु औ सदा उद्योगी मित्रसह नाम एक राजा था अनेक पुण्यों का मानों पुंज अनेक तेजों का समूह औ अनेक आश्चर्यों का स्थान जिसका शरीरथा जिस राजाके हृदयमें दया शरीरमें लक्ष्मी औ चरणों में अनेक और राजाओं के शीशमुकुट सदा बासकरते थे वह राजा एकदिन अपनी सेना साथ ले बनमें आखेट को गया और अनेक सिंह व्याघ्र बराह आदि जीव मारने लगा इसी अवसर में एक बड़ा क्रूर राक्षस उसके सन्मुख आया राजा ने उसे संमुख आते देख अपने धनुष में बाण चढाय ऐसा मारा कि वह राक्षस भूमि पर गिरा और यमलोक को सिधारा उस राक्षस का

छोटा भाई इस भांति अपने बड़े भाई का मृत्यु देख भय औ शोक से व्याकुल मनमें बिचार करने लगा कि मैं अपने भाई का बदला इससे क्योंकर पाऊंबलसे तो पा नहीं सक्ताक्योंकि यह राजा बड़ा प्रतापी है और देवताओं करके भी दुर्धर्षहै इस लिये कोई कपट रच इसे जीतना चाहिये यह माया मनमें ठान मनुष्यका रूपधरकर अति नम्रतासे राजाके संमुख जाय प्रणाम कर बिनती करता भया कि हे महाराजमैं आपके शरणमें जीविका के निमित्त आया हूं और आप जगत्के अनेक मनुष्योंका पालन करनेहारे हैं इस लिये इस दीनका भी पोषण आपके शरण में होना चाहिये इस भांति बहुत दीनता उसकी देख परम दयालुतासे राजा ने अपने महानस अर्थात् रसोई का अधिकारी उस कपटी मनुष्य रूपधारी राक्षसको कर दिया और आखेटके बिहारको समाप्त कर अपनी राजधानी में आया इसी समय में बशिष्ठजीको राजाने श्राद्धका निमंत्रण दे अपने घर बुलाया औ राजा तथा उसकी मदयंती नाम रानी बड़ी भक्तिसे बशिष्ठजीके चरणमें प्रणामकर आसन पर बैठाय अनेक भांतिके भोजन औ व्यंजन बशिष्ठजीके आगे परोसने लगी इसी अवसरमें उस राक्षसनेभी घात पाया औ मनुष्य का मांस शाकमें मिलाय भली भांति रांध बशिष्ठजीके लिये ले आया औउनके आगे निवेदनकर दिया बशिष्ठजी शाक युक्त उस मनुष्यके मांसको अपने आगे धरा देख अति क्रोधयुक्त बचनबोलेकि रे राजा तू बड़ा दुष्टहै तैनेकपट से हमको मनुष्यके मांसका भोजन कराना चाहा इसलिये तूराक्षस होजा औ अपने अपराध का फल पा इस प्रकार शाप दे बशिष्ठजीने बिचार किया तो बिदित भया कि यह राजाका अपराध नहीं उस राक्षस का सब काम है यह जान बहुत पछताये

और शाप की बारह बरस की अवधिकरी इसभांति बिना अपराध गुरूका शाप सुन राजाभी कुपितहोकर बोलाकि बिना समझे गुरूने मुझेशाप दिया है इसलिये मैं भी शाप देताहूं यह कहकर शाप देने को हाथ में जल लिया तबतो मदयंती रानी राजाके चरणों पर गिरी औ अनेक भांति राजा को समझाय बशिष्ठजीको शाप देने से रोंका राजा भी रानी का बचन मान शापदेनेसे निवृत्त हुआ औ जो जल शाप देनेके अर्थ हाथ में लियाथा वह अपनेही चरणों पर गेरलिया इससे राजा के पैर कल्माष अर्थात् चित्रवर्ण के होगये औ उसी दिन से राजाका कल्माषपाद यह दूसरानाम पड़ा और वशिष्ठ जीकेशापसे उसी समय राक्षस देह होकर बनमें बिचरनेलगा औअनेक जीवजंतु मनुष्य जो बन में मिलजाता उसेही खाय लेता एकदिन वह राक्षस बनमें बिचरताहुवा एक मुनि कुमार अपनी नवोढ़ाबधू के साथ बिहार करते हुवे को देख बहुत प्रसन्न भया औ झटपट जायजैसे बाघ हरिण के बच्चे को धरले इसीभांति मुनिकुमार को भक्षण करनेके लिये उठा लिया मुनिकुमार की बधू इस प्रकार अपने भर्ताकोकालके हाथमें पड़ेदेख भयभीतहो कांपती औ बिलाप करती हूई बड़ी दीनता से बोली हे महाराज सूर्य बंश के भूषण तू यह पापमतकर तूराक्षस नहीं है मदयंतीरानी का पति मित्र सह नाम राजा है मेरे प्राण प्यारे पति को मत भक्षण कर दीन अनाथों का तूही शरण है और इस पति के बिना मेरा भी जीवन न होगा यह बालक है औ वेदवेत्ता शांतस्वभाव, तपस्वी बहुत शास्त्र जानने वाला है इसके प्राण दानसे आपको संपूर्ण जगत् की रक्षा के तुल्य पुण्य होगा अ-नाथ ब्राह्मणी बाला मैहूं मेरे ऊपरही आप करुणा करके इसे

छोड़िये क्योंकि दीन पीडित कृपणों पर सत्पुरुष अवश्यही दया करते हैं इस भांति बहुतसा उस ब्राह्मणी ने उसके आगे बिलाप किया परंतु उस निर्दय के मन में एक भी न पड़ी औ झट पट मुनि कुमार का मस्तक नख से उखाड़ चबा गया वह मुनि कुमार की स्त्री भी अनेक प्रकाररोदन करती हुई अपने पति क अस्थि इकट्ठे कर चिता रच उसपर आप बैठ अग्नि लगाय राजा को शाप देती भई कि रे दुष्टराजा तैंने मेरापति भक्षण किया इसलिये तू भी जब अपनी किसी स्त्री से संग करेगा उसी समय मृत्यु के बश होगा इस भांति शाप दे अग्नि में प्रबेशकर अपने पति के लोक को सिधारी इधर राजा नेभी बन में बिचरते हुवे औ राक्षस रूप से अनेक जीवों को मारते हुवे अपने शाप के बारह बर्ष पूरे करे और बारह बर्ष के अनन्तर फिर मनुष्य देह पाय अपनी राजधानी में आया औ राज करने लगा परंतु उसकी मदयंती राणी को उसपतिव्रता ब्राह्मणी के शाप का वृत्तांत बिदित होगया इससे वह अपने पतिको रति से सब प्रकार रोंकती रहती थी इस कारण संतान हीन राजा अपने राज्य से बिरक्त हो सब संपत्ति छोड़ फिरतप करने के अर्थ बन कोही जाता भया और राणी गद्दीपर बैठी इतने में बशिष्ठ जीने देखा कि अब सूर्य बंश का उच्छेद होता है तब आप आय कर मदयंती राणी में बंश को करने वाला बड़ा धर्मात्मा औ प्रतापी पुत्र उत्पन्न किया राजाभी राज छोड बन मेंतोचलागया परंतु ब्रह्महत्या साथही लगीचली गई जब २ पीछे देखता तो वही बड़ी भयानक रूप पिशाचीसी मुनिकुमार की हत्या देख पड़ती राजा उस ब्रह्म हत्या के दूर करने को अनेक तीर्थ औ अनेक मुनियों के आश्रमों में बहुत बरसों तक

भ्रमण करता फिरा परंतु उसघोर ब्रह्महत्या से पीछा नछुटा तो राजा बहुत चिंता से ब्याकुल हो मिथिला में पहुंचा औ नगर के बाहर एक उपबन में बैठा वहां क्या देखता है कि सूर्य के तुल्य तेजस्वी औ चंद्र से आनंददायक शांतमूर्ति महातपस्वी साक्षात् शिवस्वरूप गौतम ऋषि संमुख चले आते हैं राजा ऋषि को देख उठखड़ा हुवा औ प्रणाम किया ऋषि भी आशीर्वाद देकर राजा से कुशल पूछते भये कि हे राजन् तुम प्रसन्न हो औ तुह्मारी प्रजा में तथा अंतःपुर में कल्याण है औ तुम सब राजछोड़ एकाकी इस निर्जन बनमें किसकारण आये औ दीर्घ तथा उष्णश्वास किस दुःख से लेतेहो यह गौतम मुनिका बचन सुनराजा बोला कि महाराज और तो सर्बत्र आप की अनुग्रह से कुशल ही है परंतु बशिष्ठ जी के शाप से मोहित हो मुझसे एक ब्रह्महत्या बनपड़ी उसकी निवृत्ति के लिये मैंने अनेक यज्ञ,दान,व्रत,प्रायश्चित्त किये औ अनेक पुण्य क्षेत्र, नदी, सर, तीर्थों में स्नान किये नाना प्रकार के मंत्रजपे परंतु वह हत्या मुझे अब भी नहीं छोड़ती घोर पिशाची के रूप से मुझे बारबार त्रास दिखाती है औ दूसरे मनुष्य को नहीं दीखती इससे मुझे क्षणमात्र भी सुखनहीं मिलता इतना कह राजाबोला कि महाराज आज मेरा जन्म सफल भया औ आप के दर्शन से क्षणमात्रमेंरा क्लेश दूरहुआ कि सब संसारके जीवोंका दुःखदूर करने हारे आप नयन गोचर भये अब मैं आप के शरण हूं ऐसा अनुग्रह कीजिये जिस से यह हत्या मुझेछोड़ देवे कि मैं सुखी हो जाऊं औ आपयहभी कहैं कि अब आपकिसदेश से आये हैं मुझे आप श्रांत देख पड़ते हैं इस प्रकार राजा का बचन सुन गोतमऋषि बोले किहे राजा भक्तोंकी रक्षा करने हारे श्री महादेवजीके होते पापों

से क्या भयहै तू इस महापातक का भय छोड़दे हम तुझे एक उत्तम क्षेत्र गोकर्णनामक बताते हैं जिस के खाली स्मरण से भी महापातक दूरहोजायं जिस प्रकार कैलास पर्बतऔरमंदराचल में शिवजी सदा निवास करते हैं इसी प्रकार गोकर्ण क्षेत्र में भी निरंतर ही बास करते हैं जो पाप किसी तीर्थ में भी निवृत्त नहीं होसकते वे सब गोकर्ण क्षेत्र में नाश होतेहैं बड़े भारी ब्रह्म हत्यादि पाप करके भी गोकर्ण क्षेत्र में पहुंचजाने से ही पुरुष निर्भय होजाता है उसी क्षेत्र में अनेक ऋषि तप करके सिद्धि को प्राप्तभये औ इंद्र, चंद्र, बिष्णु, ब्रह्मा आदि देवता तोउस क्षेत्र का निरंतर ही सेवन करते हैं उस क्षेत्र में जो एक दिन के ब्रत से फल होता है वह और स्थान में लाख बर्ष तप करने से भी नहीं होता जहां इंद्रादि देवताओं के अनुग्रहके लिये महाबल नामक शिवजी आप निवास करते हैं जो लिंग बड़े तप करने से रावण को मिला औ उसी ने गोकर्ण क्षेत्र में स्थापन किया है इन्द्र, चंद्र, रुद्र, ब्रह्म, बिष्णु, आदित्य, बिश्वेदेव, बसु, आदि देवता जिस स्थान के पूर्बद्वार का सेवते हैं यम, चित्रगुप्त अग्नि, पितर आदि देवगण दक्षिण द्वार पर पड़े रहते हैं सब नदियों का नाथ बरुण गंगादि नदियों सहित पश्चिम द्वारमें निवास कर महादेव की सेवा में तत्पर रहता है बायु, कुबेर, देवेशी, भद्रकर्णिका, रंभा, घृताची, मेनका, उर्बशी, तिलोत्तमा, सुकेशी आदि अप्सराओं बिश्वावसु, चित्ररथ, चित्रसेनआदि गंधर्ब श्रीशिवजी के आगे नाचते औ गाते हैं बशिष्ठ, कण्व, बिश्वामित्र जैमिनि, भरद्वाज, जाबालि, क्रतु, अंगिरा, आदि बड़े २ ऋषीश्वर महाबलदेव को भक्ति से उपासन करते हैं और भी मरीचि अत्रि, दक्ष आदि मुनीश्वर औ सनकादि महात्मा तथा दंडकमं-

डलु मृगचर्म धारण किये बड़े बड़े ब्रह्मचारी जिनके शरीरमें अत्यंत घोर तप करते २ केवल अस्थिऔ चर्महीरहगयाहै औ गंधर्व, सिद्ध, चारण, बिद्याधर, किन्नर, गुह्यक, नाग, पिशाच, बैताल, दैत्य, परम भक्ति से देव देव श्रीमहादेव जीको सेवते हैं सब देवता सूर्य के तुल्य प्रकाशमान बिमानों पर बैठ अनेक प्रकार के भूषण बस्त्रों से सुशोभितहोपरम ऐश्वर्ययुक्त श्रीमहादेवजी को चारोंओर से सेवते हैं स्तुति करतेहैं कोई गाते हैं कोई पढ़ते हैं कोई प्रणाम कर रहे हैं कोई कोई अति भक्ति से महादेवजी के सन्मुख नृत्य करके प्रसन्न होतेहैं औ अपना २ मन बांछित फल पातेहैं इतना कह गोतम मुनि बोले कि हे राजा हम अधिक महिमा कहांतक कहें गोकर्ण के तुल्य दूसरा क्षेत्र ब्रह्मांड में नहींहै उसी क्षेत्रमें अगस्त्य मुनिने घोर तप कियाहै औ सनत्कुमार, उत्तानपाद, अग्नि, कामदेव, भद्रकालीदेवी, एलापत्र आदिनाग, गरुड़, औ रावण, कुंभकर्ण, बिभीषण आदि बड़े २ राक्षसों ने इस क्षेत्र में तपकिया और अपने २ नाम के अनेक लिंग स्थापन किये इसी भांति और भी देवता मनुष्य गोकर्ण क्षेत्रमें भक्ति से श्रीशिवजी का आराधन कर औ अपने२ नामसे शिवलिंग औ तीर्थ स्थापन कर परम सिद्धि को प्राप्त भये और इस क्षेत्र में बिष्णु, ब्रह्मा, स्वामकार्तिकेय, गणपति, धर्म, क्षेत्रपाल, दुर्गा आदि सब देवताओं के स्थान हैं हे राजा बहुतमाहात्म्य कहांतक कहें गोकर्णक्षेत्र में जितने पाषाण हैं सब शिव लिंग हैं औ जितने जलहैं सबतीर्थ हैं गोकर्ण के शिवलिंग औ तीर्थों की महिमा पुराणों में बेदब्यास आदि बड़े बड़े ऋषियों नेबर्णन करीहैगोकर्ण क्षेत्र के सब तीर्थों में कोटि तीर्थ मुख्य हैं औ सब शिवलिंगों में महाबल नाम लिंग श्रेष्ठ

है यह महाबल लिंग सत्ययुग में शुक्लबर्ण औ त्रेता में अति रक्तबर्ण द्वापर में पीत औ कलियुग में श्यामबर्ण होताहै इस लिंग के मूलका अंत सात पाताल तकभी नहीं मिलता पश्चिम समुद्र के तीरपर यह गोकर्ण क्षेत्र ब्रह्म हत्यादि पापों के दूर करने वाला बर्तमानहै इसक्षेत्र में ब्रह्मघाती परदारा में रत दुर्वृत्त, दुःशील, कृपण, दुष्ट, अतिकामी पुरुष भी तीर्थों में स्नान कर महाबललिंग का दर्शन कर शिवजी के लोक को प्राप्त होतेहैं और जो पुरुष उत्तम तिथि को इस क्षेत्र में भक्तिसे शिव पूजन करते हैं वे तो साक्षात् शिव स्वरूपही होजातेहैं साधारण दिनमेंभी यहां शिवपूजन करनेसे ब्रह्मलोक प्राप्तिहोताही है जब कभी आदित्य सोम औ बुधबार को अमावश्या हो उस दिन समुद्र में स्नान करे और दान पितरों का तर्पण जप होम ब्राह्मण भोजन आदि शुभ कर्म करे तो सब अनंत फल दायक होताहै व्यतिपात आदि योग संक्रांति प्रदोष आदि समयोंमें यहां शिव पूजाकी हुई मुक्ति देतीहै इतना सुनाय गौतम ऋषि बोले कि हे राजा एक उत्तम तिथि तुझे कहताहूं जिस के प्रभाव से एक ब्याधको भी शिवलोक मिला वह तिथि फाल्गुण कृष्ण चतुर्दशी है इस दिन शिवलिंग का बिल्वपत्र से गोकर्ण क्षेत्र में पूजन अति दुर्लभ दे यह अति पुण्य तिथि मूढ़ औ मंद भाग्य मनुष्यों को नहीं मिलती है इस तिथि को उपवास जागरण बिल्वपत्र से शिव पूजन यह मानों भक्तों के लिये स्वर्ग को सोपान अर्थात् सीढ़ी लगीहै इतना कह गोतम ऋषि बोले कि हे राजा अब मैं उस फाल्गुण कृष्ण चतुर्दशी का गोकर्ण में उत्सव देख कर चलाही आताहूं और भी सब देशों के मनुष्य ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, नारी, बालक,

वृद्ध,ब्रह्मचारी, गृहस्थ, बानप्रस्थ, सन्यासी वहां आये थे औ महाबल का दर्शन कर कृतार्थ भये और राजऋषि तथा सनकादि ब्रह्मऋषि सब वहां एकत्र भयेथे सो सब वहां तीर्थमें स्नान कर महाबल नाम शिव लिंग का दर्शन पाय अपना जन्म सफल मानते हुये अपने २ देशको गये हमकोभी अपुत्र जनक राजा ने निमंत्रण किया था इस लिये हम मिथिला को आये गोकर्ण से मिथिला आते समय एकबड़ा आश्चर्य मार्गमें देखा उसीसे मेरा चित्त अति हर्ष युक्त हो रहाहै॥

तीसरा अध्याय॥

यह गौतम जीका बचन सुन राजा बोला कि आपने क्या आश्चर्य देखा औ कहां देखा यह मुझेभी अनुग्रह करके सुनाइये जिससे आनंद हो इस भांति राजा का बचन सुन गोतम ऋषि बोले कि हे राजा गोकर्णसे आते हुये एक दिन मध्यान्ह के समय किसी स्थान में एक सरोबर हमको मिला हमभी उस सरकी रमणीयता देख औ उसमें बिहार करते हुये हंस सारस आदि पक्षियों का मनोहर शब्द सुन शीतल मंद औ कमलोंका सुगंध लिये बहते पवनसे श्रम निवृत्त करनेको उस सरके तीर पर बट वृक्षकी शीतल सघन छाया में बैठे औ थोड़ेही कालके अनंतरउसका अमृतसेभीअधिक उत्तमजलपानकर मार्गका सब खेददूर किया इतनेमें एकवृद्ध चंडाली भी उसी बटवृक्षके नीचे मरती गिरती आय पहुंची उस चण्डाली की दुर्दशा हम कहां तक बर्णन करें कि कुष्ट के व्रणों से जिसका सब देह रुधिर औ पूप अर्थात् रायकोट पक रहा हैकास श्वास करके जिसके कण्ठ

से घरघरशब्द निकलता है अत्यंत दुर्बल अंधी तृषासे जिसका मुख सूखरहा है कई दिनों से निराहार शरीर के व्रणोंमें कृमि पड़ रहे हैं बिष्टामूत्र से सब देह भीज रही है अति वृद्धा औ दुर्बल जिसके समीप अति दुर्गन्ध से कोई नहीं ठहर सकता औ मरने को उद्यत यह उसकी दशा देख मेरे हृदय में अत्यंत करुणा उत्पन्न भई औ यह बिचार कियाकि जबतक इसकी मृत्यु होय तबतक क्षणमात्र यहांहीं ठहर जाय इसी समय एक अति उत्तम जिसका सूर्यकासा प्रकाश औ रत्नों से जड़ा हुआ बिमान आकाश में देखपड़ा औ क्षण मात्रमेंही समीप आपहुंचा औ देखाकि उसके भीतर चार शिवजीके गण बैठे हैं त्रिशूल खट्वांग खड्गचर्म हाथ में लिये मस्तक पर अर्द्धचन्द्र धारण किये मुकुट कुण्डल केयूर कंकण आदि अनेक भूषणों से भूषित औ मस्तकमें भस्मका त्रिपुण्ड्र दिये अति तेजस्वी गौरवर्ण मानों साक्षात् शिवही चार रूप धारकर आये होंय इसभांति उनको देखअति आश्चर्य युक्त होय उनके पासजाय अति नम्रता से प्रणामकर हमनेकहा कि हे शिव के गणों आपधन्य हौ औ सब देवताओं में उत्तम हौ कि निरंतर परमेश्वर के चरण सेवा में तत्पर रहते हौ अब आप अनुग्रहकर कहिये कि आपका यह शुभआगमन लोक के कल्याण निमित्त है अथवा सबजीवों के पाप निवृत्तिके अर्थ है वा बिनोद के हेतुही है यह हमारा बचन सुन शिवजी के गणबोले कि हे गोतम जी यहजो वृद्ध चण्डाली मरण को उद्यत आपके संमुख देख पड़ती है इसको परमदयालु श्रीमहादेवजी की आज्ञापाय बिमान संगले शिवलोक ले जाने को हमारा आगमन है यह शिवदूतों का बचन सुन अति चकितहो हमने कहा कि बड़ा आश्चर्य है यह पापिनी दुष्टा अति मलिन

चण्डाली इसदिव्य बिमानपर क्योंकर आरोहण कर सकती है क्या कहीं शुनी अर्थात् कुतिया भी यज्ञवेदीपर चढ़सकती है इस दुराचार चण्डाली जन्मसे अपवित्र अनेक पापों के करने हारी नित्यजीव हिंसा में प्रवृत्त सदा मद्य मांस भोजन करने वाली को किस पुण्य से आप शिवलोक ले जाना चाहते हैं सत्य,दया,तप,ज्ञान आदि उत्तम कर्मों का इसमें लेश मात्र नहीं औ शिवपूजन पंचाक्षर मंत्रका जप शिवका ध्यान शिव रात्रि का उपवास तीर्थों में स्नान दान व्रत आदि कभी न किये न कोई यज्ञादि करे न बापी कूप तड़ाग आदि बनवाये न जीवोंपर प्रीति करी यह कौन कारण शिवलोक में निवास करनेके योग्य ठहराई इसका दर्शन भी योग्य नहीं संभाषण औ स्पर्श की तो क्या कथा है जो पूर्वजन्मकाही कुछ पुण्य इसका होता तो इस दुर्गति को क्यों पहुंचती कि राजयक्ष्म कुष्ठआदि का रोगों से पीड़ित औ शरीर को कृमि खाये जातेहैं परंतु ईश्वर की माया अपार है कि ऐसे २ प्राणीभी बिमानपर आरूढ़ हो कैलास को जांय यह हमारा बचन सुन शिवदूत कहने लगे कि हे गौतम ऋषि आपने कहा सो सब सत्य है परंतु बड़े आश्चर्य की कथा इस चण्डालीकी सुनिये यह पूर्व जन्ममें अति रूपवती चन्द्रसा जिसका मुख मृगकसे नेत्र मालती पुष्प के तुल्य जिसके कोमल अंग मानों साक्षात् कामदेव की पत्नी रतिही होय केकय देश में एक उत्तम ब्राह्मण की कन्या थी औ नाम उसका सौमिनी था बाल्य अवस्था मेंही उसका रूप देख मनुष्य अति मोहितहोते थे वह कन्या चन्द्रकला की भांति दिन २ वृद्धिको प्राप्त होने लगी औ यौवन अवस्था में पहुंची तब उसको बर योग्य देख पिताने विधि पूर्वक एक ब्राह्मकुमारसे

ब्याह दिया वह नव यौवना भी अपने पतिके घर जाय सुखपूर्वक संसार का आनन्द भोगने लगी ईश्वर की इच्छा कि कुछकालके अनंतर वह उसका युवा औअति रूपवान बुद्धिमान् पतिरोग ग्रस्त होगया औ थोड़ेही दिनों में मृत्यु वश भया वह उसकी प्राणप्रिया भी अपने प्रिय के परलोक जानेके अनन्तर कुछदिनतो अपने शील औ पतिव्रतमें रही परंतु वहनयीअवस्था औ अति मनोहररूप कहां तक पतिव्रत रहनेदे कामदेव उसको सतानेलगा उसके बन्धुलोग उसकी बहुतरक्षाभी करतेथे औसदा धर्मकी शिक्षा भी देते रहते थे तौ भी वह कामदेव के अधीन हो धर्ममार्ग छोड़ व्यभिचार करनेमें प्रवृत्त भई कुछ काल तक तो उसका यह दुरा चरण छिपारहा परन्तु जब मुखपीत बर्ण औ कुचोंका अग्र भाग नील होने लगा तब तो उसके गर्भ के चिन्ह देख बंधु भी अति चिन्ता से आकुल हुये औ आपस में कहने लगे कि स्त्री कामसे नष्ट होती है ब्राह्मण नीचेकी सेवा से राजा ब्राह्मणों पर दंड करने से औ संन्यासी भोग के पदार्थों का संग्रह करने से नष्ट होते हैं जैसे श्वान का उच्छिष्ट अन्न मद्य के पात्रमें जल कुष्ट रोग से दूषित उत्तमरूपकलंकित होजाता है इसी भांति दुष्टा स्त्री कुल को मलिन करदेती है इस भांति उसके बंधुजनों ने अनेक बिचार कर अति अनादर से उसस्त्री को अपने ग्राम के बाहर निकाल दिया वह स्त्री भी अपने देश से निकल कुछ दिनों के अनंतर एक शूद्रों के ग्राम में पहुंची वहां एक धनवान् औ युवा शूद्र ने उस को देख औ रूप के बश हो बड़ी प्रीति से अपने घरले जाय अपनी सब स्त्रियों में मुख्य ठहराय रखली औ दिन रात उसी शूद्र के साथ रमण करती औ मांस खाती मद्य पीती थी कुछ काल के अनंतर उस

के एक कन्या उत्पन्न भई एक दिन वह शूद्र उसका पति तो किसी ग्राम को गया था औ उस ने पीछे से रात्रि के समय बहुत मद्यपान किया औ मांसखाने की इच्छा भई तब हाथ में खड्ग उठाय जहां बहुत से बकरे मेढ़े बांधरक्खे थे वहांगई औ उस गाढ़े अंधेरेमेंही एक गौका बछड़ा जो उनमेंढ़ों में बंध रहा था उसने मेढ़ेकी भ्रांति से खड्ग से मारदिया औ उठाकर घर लेआई वहां आकर दीपक के प्रकाश में देखा तो वह गोवत्सथा तबतो कुछ खेद से शिव शिव यह शब्द दोबार उच्चारण किया औ पश्चात्ताप भी किया परंतु मदिराके मदसे फिरभी न रहा-गया औ उस बत्सका आधा मांस पकाकर खागई औ आधेको घरके द्वारपर गेर पुकारने लगी कि हमारे बछड़े को बाघ मार गया इसप्रकार उसका आक्रन्दन सुन सबलोग इधर उधर से एकत्र हुये औ ठीक गोवत्स मरा हुआ देख पछताने लगे औ उसका कपट किसी ने न समझा दूसरेदिन उसका पतिग्रामसे आया वहभी यह वृत्तान्त सुन कुछशोक कर चुपरहा इसप्रकार अनेक घोर पाप करते २ उस ब्राह्मणी का आयुष् पूराभया औ कालबश हो यमलोक को गई यमराजने भी उसके पापदेख नरकबास दिया औ नरक बास पूरा होने पर उसके कर्मों के अनुसार चण्डाल जाति में जन्म दिया वह जन्मसेही अन्धी औ अति कृष्ण वर्णथी तौभी उसके पिता ने दयासे कुत्ते बिल्ली-यों का जूठा अन्न औ जो कुछ मिला उसीसे उसकन्याका पोषण किया वह जन्मांध तो थीही परंतु कुष्ट रोग भी होगया इस लिये उसका बिवाह भी न भया कुछ काल के अनंतर माता-पिता भी मरगये तब उसके भाई बंधुओं ने उस कन्या को अति कुलक्षणा जान घर से बाहर निकाल दिया तब वह आंखों से

अंधी भूखसे ब्याकुल हाथमें लाठीले गांव२घर २ मांगनेलगी औ जो कुछ कहीं रूखा सूखा मिलजाता उसी से अपना उदर पूरण करती इस भांति कष्ट भोगते २ वृद्ध अवस्था को पहुंची तब और भी अधिक दुखी भई इसरीति दुःख सहते २ एकदिन शिवरात्रि का उत्सव आया उस दिवस देश २ के मनुष्य बड़े२ महात्मा ब्राह्मण अपनी स्त्रियोंके सहित औ अनेक देशोंके राजा हाथी घोड़े रथ सेना आदि सामग्री साथ लिये औ रानियों समेत तथा हजारों वैश्य शूद्र कोई हंसताहै कोई गाताहै नाचता है कोई दौड़ताहै इस प्रकार लाखों मनुष्य बड़ी धूम धाम औ भक्ति से गोकर्ण क्षेत्रको चले जाते थे औ देवताओं के समूह के समूह बिमानों पर बैठ २ गोकर्ण क्षेत्रको जातेहैं यह भीड़भाड़ देख वह चंडाली भी भोजन की लालसा से उसी मेले के संग होलई औ कुछ दिनों में गोकर्ण क्षेत्रमें जाय पहुंची औ मार्गके एक ओरअपना फटा वस्त्र बिछाय पुकारने लगी कि हे यात्रियो पूर्व जन्म के पाप से मेरी यह दुर्दशा होरहीहै औ अन्नमात्र मुझेनहीं मिलता मेरे ऊपर दया करो मैं अति पापिनी हूं अंधी वृद्धा औ भूखी वस्त्रसे हीन शीत से पीड़ित मंद भाग्याहूं मेरे ऊपर करुणाकरो औ कुछ अन्न वस्त्र मुझेदोइसभांति वहदोनों हाथ की अंजलिकिये सारे दिन चिल्लाती रही परंतु किसी ने कुछ न दिया एक यात्री ने हास्य से उसकी अंजलिमें एक बिल्वपत्र पटक दिया उस बिल्वपत्र को उस चंडाली ने हाथ से टटोला तोजाना कि यह तो कुछ पत्तासा है खाने की वस्तुनहीं यह समझ दूर फेंकदिया दैवयोग से वह बिल्वपत्र किसी शिव लिंगके ऊपर जापड़ा औ वह चंडाली फिर यात्रियों से मांगने लगी इसी प्रकार मांगते २ रात्रि भी बीत गई इस प्रकार

गोकर्ण क्षेत्र में भद्रकाली देवीके स्थान के पिछली ओर भूखी औ प्यासी उस चंडाली का दिन औ रात्रि बीतगया औ क्षुधा के मारे रात्रिको निद्रा भी न आई औ प्रभात होगया प्रभात होतेही वह चंडालीअति शोकातुर भूखी निराशहोअपने देश की ओर चली परंतु रोग से औ वृद्धता से तथा क्षुधा से इतनी व्याकुल थी कि एक एक पांव रखना उसको अति कठिन था तौभी किसी भांति पड़ती गिरती रोती कांपती लाठीके सहारे चली मार्ग में अति प्रचंड धूप लगने से औ बहुत तृषा होने से बड़े कष्टकर यहां पहुंचतेही मूर्छित हो गिर पड़ी इसी अवसर दया के सागर श्री महादेवजी ने हमको आज्ञा दी कि बिमान लेजाओ औ उसमें बैठा कर आदर पूर्वक उस चंडाली को हमारे समीप लेआवो यह महादेवजी की आज्ञा पाय हम यहां आये औ आपसे समागम भया यह इस चंडाली का वृत्तांतहै औ दीनों पर शिवजी ऐसी दया करते हैं हे गौतमऋषि यह कर्मों की बिचित्र गति देखो कि ऐसे २ पापी अधम भी शिवलोक को प्राप्त होते हैं जो इस चंडाली ने अन्नदान आदि पूर्व जन्म में नहीं किया इस कारण यह क्षुधा तृषा करके दुःखी रहती है जो इसने मदिरा से मत्त होकर घोरपाप किया अर्थात् गोबत्स का बधकिया उस पापसे यह जन्मांध भई औ गोबत्स जानकर भी उसका मांस भक्षण किया उस कर्म से चंडाली भई जो इसने पूर्वजन्म में पतिव्रत धर्म छोड़ व्यभिचारमें प्रीत करी उस पातक से इसका बिवाह नहीं भया औ उप पति का आलिंगन करने से कुष्ट युक्त भई शूद्र के साथ संग करने से शरीर मेंव्रण औ व्रणों में कृमि पड़े जो इसने मद्यपान किया उस पाप से राज यक्ष्म रोग ने इसको सताया नतो इसनेकोई

व्रत किया न दान न बापी कूप तड़ाग आदि बनाये जिससे इस दारुण क्लेश का अनुभव कर रहीहै मनुष्यों ने जोपाप पूर्वजन्म में किये हैं उनके चिन्ह इस जन्ममें सबदेख पड़ते हैं जो पुरुष बहुत रोगी पुत्रओं धनसे हीन दुर्लक्षण क्लेश युक्त,याचक,निस्तेज,अन्न,वस्त्र,भूषण,विद्या से हीन कुरूप,काणे,कुबड़े आदि बिकलांग जिनको उत्तम भोजन नहीं मिलता मंदभागी,निंदित परसेवक आदि इस संसार में दृष्टि आते हैं वे सब पूर्व जन्मके पापी हैं इस प्रकार बुद्धिमान् मनुष्य लोक में पापी पुरुषों की दुर्दशा देख कभी पाप न करें यह मनुष्य का शरीर उत्तम कर्मों के लिये है इसको पाय कभी दुष्कर्म न करे जो पुरुष सुख की इच्छा रखता हो वहतो पुण्यही करे और दुखकी इच्छा होय तो पापकरे इस परम दुर्लभ मनुष्य देहको पायकर एक उत्तम देव का आश्रय अवश्य करे निरंतर भी पुरुष पाप करे परंतु एकाग्र चित्त हो शिव का ध्यान करने से सब पाप दूर हो जातेहैं जैसा कमल के दलों को जल नहीं स्पर्श कर सकता इसी भांति उस मनुष्य से सब पातक अलग रहते हैं पूर्वजन्म में मृत्यु के बश हो यह चंडाली जब यमलोक को गई तो यम की सभामें बड़ा बिचार भया कि यद्यपि यह उत्तम कुल में उत्पन्न भई औ ब्राह्मणी है परंतु आचरण इसका बुरा था अब यह नर्क में जाय कि नहीं औ यह भी निश्चय करना चाहिये कि कुछ पुण्य भी इसने कभी किया है कि नहीं यहसब बिचार कर इसको दंड देना उचितहै क्योंकि अनेक पूर्व जन्मोंके पुण्य से ब्राह्मण के कुलमें जन्म होता है इससे ज्ञात होताहै कि पूर्व जन्मों में तो इसने पुण्य कियाहै नहीं तो ब्राह्मण कुलमें जन्म क्योंकर होता जोकुछ पाप इससे बन पड़ा सो इसी जन्ममें

इसने गोवत्स को मारकर पश्चात्ताप से शिव २ यह कहा यह नाम पापों के दूर करने को समर्थ है अब यह चांडाल जाति में उत्पन्न होय इससे अधिक नर्क क्या होगा दुःकुलमेंजन्म दारिद्र्य रोगोंका क्लेश अंधता ये सब एक २ नर्क के तुल्य हैं परंतु जो इसने पूर्वजन्म के पुण्य से शिवनाम स्मरण किया उसके प्रभाव से अंतकाल में इससे बड़ा भारी पुण्य बन पड़ेगा कि जिससे यह शिवलोकमें प्राप्तहोगी वहां शिवजी महाराज आपहीविचारजो इच्छाहोगीसोकरेंगे क्योंकिऐसेपुरुषोंको हम दंड नहीं दे सकते इस भांति चित्रगुप्त आदि यमराज की सभा के सभासद विचार कर चांडाल योनिमें इसको जन्म देते भये औ यह भी पूर्व जन्मोपार्जित पापोंका फल भोगती हुई प्रति दिन दुःखी रही औ उस शिव नाम स्मरण के पुण्य से गोकर्ण क्षेत्र में शिवलिंग के ऊपर इसके हाथसे बिल्वपत्र चढ़गया औ भोजन न मिलने से उपवास होगया रात्रि भर मांगते २ शिव रात्रि का जागरण भी बनपड़ा अब यह उस महा पुण्य से शिवलोकमें जाय अति आनंद से निवास करेगी गौतमजी बोले कि हे राजा शिवदूत इतनीकथा उस चांडालीकी हमको सुनाय उस चांडाली के जीवको उस जर्जर शरीर से अलग कर दिव्य देह धराय अति हर्षसे बिमान में बैठाते भये वह भी दिव्यरूप धारे उत्तम २ भूषण वस्त्र पहिने सुन्दर कस्तूरी आदि सुगंध शरीर में लेपकिये पुष्पों की माला पहिने बिमान में अतिही शोभित होती भई रत्न के जड़े छत्र ध्वजादि जिस बिमान के ऊपर लग रहेहैं औ अनेक मनोहर बाजे जिसके चारों ओर बज रहेहैं उस बिमानमें शिवदूतों के बीच बैठीहुई वह चंडाली अपनी पहिलीदुर्दशा स्मरण करती है औ बड़ा आश्चर्य मानती

है कि यह स्वप्न सा क्या है कहां मैं चंडाली कहां यह उत्तम पुरुषों के सहित दिव्य बिमान वहमेरा कुष्ट आदि रोगोंसेजीर्ण चंडाल कुल में उपजा देह कहां औ यह दिव्य अति तेजो युक्त शरीर कहां यह सब उसी सत्कर्म का फलहै जो मुझसे गोकर्ण क्षेत्र में अज्ञात भी बन पड़ा अहो ईश्वर की पूजा का माहात्म्य कितना बड़ा है कि एक बिल्वपत्र से प्रसन्न हो अपना लोक मुझेदिया इसभांति भक्तिसे निचारकरती औ शिवजीका स्मरण करती उस चांडालीको शिवदूत बिमानपर चढ़ाय हमारेदेखते२ बड़े आदर से शिवलोक को लेगये हे राजन् यह अति आश्चर्य हमने अपने नेत्रोंसे देखा कि शिवपूजाका इतनाबड़ामाहात्म्यहै इतनी कथा गोतमजी से सुन राजा पूछता भया कि महाराज शिवलोक किसप्रकार का है उसका लक्षण कृपाकर आप मुझे सुनाइये गोतमजी बोले कि हे राजा जो आनन्द शिवलोक में है न वह बिष्णुलोक में न ब्रह्मलोक में। जहां कहीं अन्धकार का लेशमात्र नहीं सर्बत्र प्रकाशही है। औ योगीजन सत्व,रज तम,इन तीनों गुणों को उत्तीर्ण हो जिसलोक में पहुंच फिर नहीं लौटते औ जहां लोभ,मोह,मद आदि नहींरहते औ जिस लोककी प्राप्तिके लिये ऋषिलोग तप,समाधि,ध्यान, प्राणायाम आदि योग करते हैं जहां शिवजी सदा पार्बती जीको संगलिये बिहार करते हैं औ अनेक जन्मों के पुण्य से वहां प्राप्तभयेहुवे पुरुष औ स्त्री सुखसे बिहार करतेहैं जहां विरंतर प्रकाशमान तेजके प्रभाव से दिन रात्रि का भेदही नहीं बिदित होता वह शिवलोक है औ जहां कुयोगी कभी नहीं जाय सकते जो पुरुष परमेश्वर के गुण भक्ति से सुनते हैं औ सब जीवों पर करुणा रखते हैं शांत स्वभाव परमेश्वर के भक्त हैं वेही उसलोक में

प्राप्त होते हैं इतना कह गोतमजी बोले कि हे राजा तूभी गोकर्ण क्षेत्र में जा इस ब्रह्महत्या को निवृत्त कर कृतकृत्य हो वहां के सब तीर्थों में स्नानकर औ महाबल नाम शिवलिंग का दर्शन तथा पूजनकर औ शिवरात्रि को उपबास जागरण तथा बिल्व पत्रों से शिवपूजन भक्ति पूर्बक कर शिवलोक को प्राप्त हो यह उत्तम पवित्र कल्याण देनेवाला उपदेश हमने तुमको दिया अब हम जनक राजा के नगरको जाते हैं ईश्वर तुम्हारा भी कल्याण करे इतनाकह गोतममुनि तो मिथलाको गये औ राजा गोकर्ण क्षेत्रको चला थोड़े दिनके अनंतर गोकर्ण क्षेत्रमें पहुंच सब तीर्थों में स्नान कर भक्तिसे महादेवका पूजन किया पूजन करतेही राजा के ब्रह्महत्यादि पाप सब दूर होगये औ निर्मल शरीर होगया कुछ काल ब्यतीत होनेपर इस मनुष्य देहको त्याग शिवलोक में प्राप्तभया इतनी कथा सुनाय शौनक आदि ऋषियों से सूतजी बोले कि हे ऋषियों इसकथा को जो पुरुष नित्य सुने अथवा और जीवों को सुनावे वह अवश्यही परम धाम पावे जो भक्ति से इसकथा को एकबार भी सुने वह सात कुलके साथ शिवलोक में जाय हे ऋषियों यह सब कल्याणों का मूल अनेक पाप दूर करनेहारा मोहरूप अन्धकार के लिये सूर्य तुल्य देवताओं करके गायाहुआ श्रीमहादेव जीका चरित बर्णन किया यह निरन्तर सेवन करना योग्य है जिस से कल्याण हो ॥ ३ ॥

चतुर्थ अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हे ऋषीश्वरो मैं और भी परम अद्भुत शिवका प्रभाव बर्णन करता हूं जो श्रवण करने से सब पाप

दूरकर मनुष्य को इस संसार की फांसी से मुक्त करता है दुष्कर्म समुद्र में पापों से दग्ध औ डूबते हुवे मनुष्यों के पारलगाने-वाली नौका एक शिवपूजा है दूसरा कोई उपाय नहीं बुद्धिमान् पुरुष सदा शिवपूजन करे जो करने में असमर्थ होय तो दूसरे मनुष्य की करी पूजा को भक्ति से देखे जो बिना भक्ति भी शिव पूजाकरे अथवा देखे वहभी कुछकाल में मुक्ति का भागी होताहै भक्तों की तो क्या महिमा कहैं एक हम बहुत अद्भुत कथा कहतेहैं किरात देश में एक राजा प्रतापवान् शत्रुओं के जीतने वाला अति क्रूर स्वभाव औ निरंतर मृगया में आसक्त सब जीवों का मांस भक्षण करनेहारा औ सबवर्ण की स्त्रियों के संगमें प्रवृत्त अति चपल निर्दय बिमर्षण नाम था ऐसा दुराचरण होकरभी वह राजा शिवपूजा नित्य करता औ चतुर्दशी तिथिको तो बड़े ऐश्वर्य से औ भक्तिसे शिवपूजा करता हर्षित हो नाचता गाता स्तुति करता परंतु उसकी रानी कुमुद्वती नाम अपने सर्वभक्षी भर्ता का दुराचार देख २ अति खेद पाती थी एकदिन अपने पतिके समीप जाय करजोर एकांत में बिनती करनेलगी कि हे महाराज आपका आचरण देख मुझेबड़ा आश्चर्य होताहै कहां तोयह अतिदुराचारपना कि सबजीवोंकामांसभक्षणकरनासबकी हिंसा करनीसबजातिकी नारियों से रमना स्वभाव में इतनी क्रूरता कहां यह शिवजी में निष्कपट भक्ति इसका भेद आप अनुग्रह कर मुझे सुनावें जिससेमेरा संदेह निवृत्तहो यहरानी का बचन सुन थोड़ेकाल कुछ बिचार कर हंसकर वह त्रिकालज्ञ राजा कहने लगा किहे रानी जो तेरी यही इच्छाहै तोसुन मैं पूर्व जन्ममें श्वानथा औ चंपा नगरकी गलियों में सदा घूमता रहता इस प्रकार कुछकाल बीतने पर एक दिन घूमता २ एक

शिवालय के द्वार पर गया वहां जाके देखातो बड़ाभारी उत्सव शिव पूजा का होरहा है औ चतुर्दशी तिथि को शिव पूजने के अर्थ नगर के नर और नारी हाथोंमें पूजाकी सामग्री क थाल लिये झुण्ड के झुण्ड चले आते हैं मैंभी एक द्वार परबाहिर की ओर खड़ा हुआ परंतु कई मनुष्य लाठी ले मेरी ओर उठ धाये इस हेतु अपने प्राण बचानेको मैंभी भगा और उस शिवालय की प्रदक्षिणा कर उसी द्वारमें फिर आकर खड़ा होगया परंतु उन क्रूर पुरुषों ने मुझे फिरभी वहांन ठहरने दिया तबमैं उसी शिवालय के चारों ओर घूम घाम वहांहीं फिर पहुंचा तौभी उन निर्दयी मनुष्यों ने वहां न रहने दिया तब फिर शिवालय की प्रदक्षिणा कर बलि पिंड आदि कुछ भक्ष्य बस्तुके लोभसे उसी द्वारपर मुझे आते देख उन पुरुषोंने धनुष पर बाणचढ़ाय मेरे हृदय में ऐसा मारा कि पार होगया औ प्राण जाते रहे शिवालय की तीन प्रदक्षिणा होजानेसे औ शिव मंदिरमें प्राण त्यागने से राजाओं के कुलमें मेरा जन्म भया औ वह चतुर्दशी की पूजा तथा शिवजी के आगे कीहुई दीप मालिका देखने से त्रिकालज्ञ हुआ परंतु पूर्व जन्म की बासना से अर्थात् श्वानपने की बासना से मैं सर्वभक्षी औ निर्घृणहूं क्योंकि पूर्व जन्म की बासना पंडित भी नहीं मिटा सकते इसी हेतु मैं चतुर्दशी के दिन जगत् के गुरुश्री शिवजी की पूजा किया करता हूं हेरानी तूभी श्रद्धा से भक्त बत्सल श्रीमहादेव जीका भजन कर यह राजा का बचन सुन रानी बोली कि महाराज शिवजीके अनुग्रह से आप त्रिकाल दर्शी हैं इसलिये कृपाकर मेरे भी पूर्व जन्म का चरित्र कहें किमैं कौन थी यह रानी का कहा सुन राजा कथन करने लगा कि हे रानी तू पूर्व जन्म में कपोती नाम

पक्षिणी थी एक दिन आकाश में उड़ते २ तुझे एक मांस का पिंडमिला वह मांस पिंड तेरे पास देख एक गीध उसके लोभ से तेरे पीछे लगा औ तूभी उस भयंकर गीध के त्रास से वह मांस का गोला मुख से लेकर उड़ी परंतु उड़ते २ जब थकगई तब एक शिवालय तुझे देख पड़ा तू उसशिवालयकी प्रदक्षिणाकर अर्थात् उस केदाहिनेओरसेघूमउसशिवालयकी ध्वजापर बैठगई औवहदुष्टगीधभी वहांपहुंच तुझेमारकर भूमि परगिरायवहमांस पिंडले चलदिया उस शिवालयकी प्रदक्षिणा करनेसे औ शिवके समीपप्राणत्याग होनेसे तूवही कपोतीराज कुमारीभई इतनीकथा राजाके मुखसे सुन रानी बोली कि महाराज मैंने अपने पूर्व जन्मका चरित्र सुना बड़ा आश्चर्य औ शिवमें भक्ति मेरे चित्तमें उत्पन्न भई अब महाराज मैं यह जानना चाहती हूं कि हम दोनों ये शरीर त्यागकर किस गतिको प्राप्त होंगे सोआपकृपा कर कहें कि आप त्रिकालज्ञ हैं यह रानी का प्रश्न सुन राजा बोला कि हेरानी इस शरीर को त्याग कर मैंतो सिंधु देश का राजा हूंगा तू संजयेश राजा की कुमारी हो मुझे प्राप्त होगी तीसरे जन्म में मैं सौराष्ट्र देश का भूपाल हूंगा तू कलिंगराज की कन्या हो मेरी पत्नी बनेगी चौथे जन्ममें गंधार का नृपति मैं बनूंगा तू मगध राजकी सुताहो मुझे बरैगी पांचवे जन्म में उज्जैन का स्वामी मैं हूंगा तू दशार्णराज की तनुजा हो मेरी पत्नीहोगी छठे जन्ममें मैंतो मानस देशका राजा औतू ययाति बंशके राजाकी पुत्रीहो मेरी भार्या बनेगी सप्तम जन्ममें मैं तो पांडुराजका कुमार अति सुकुमार रूपऔ उदारता का आधार सब शास्त्र का तत्व जानने वाला सब लोक का मन हरने हारा सब शुभ लक्षणों करके युक्त पद्म वर्ण नाम हूंगा औ तूभी

बिदर्भराज की कुमारी अति रूपवती सब राज कुमारों के नेत्र आकर्षण करने हारी बसुमती नाम होगी सो तू अपने स्वयंबर में अनेक राज पुत्रों को छोड़ जैसा दमयंती नलको इसी भांति मुझे बरेगी मैंभी सब राजाओं को जीत तुझे प्राप्त हो अपनी राजधानी में लाकर बहुत काल तेरे सहित संसार के उत्तम २ भोग भोग कर औ बाजपेय अश्वमेध आदि बिबिध यज्ञों से परमेश्वर का यजन कर देवता पितर औ ब्राह्मणों को सबप्रकार से संतुष्टकर श्री शिवजीको भक्ति से बहुतकाल भज वृद्धावस्था में पुत्रको राजगद्दी पर बैठाय तपकरने के अर्थ तेरे सहित तपोबन को जाऊंगा तपोबन में अगस्त्यमुनि से ब्रह्म ज्ञानका उपदेश पायतेरे सहित ही शिवजीके परम पद को पाऊंगा इसभांति प्रति चतुर्दशी को शिवपूजाकर सात जन्मों में राजा हो अन्त में कैलाशबास मुझे मिलेगा हे रानी देख शिवपूजाका प्रभावकहांतो वहदुष्टात्मा श्वान औ कहां यह सद्गति जो भक्तों को भी यत्न से मिले इस से श्रीमहादेव जीके तुल्य कृपालु और कोई देव नहीं इसप्रकार राजा से सुन रानी अति हर्षित होतीभई वह राजाभी उसरानीके सं ग सात जन्मतक संसारके यथेष्ट उत्तम २ भोग भोगकर अन्त में रानीसहित शिवलोकमें प्राप्त होताभया सूतजी कहते हैं कि जो पुरुष इस शिवपूजाके माहात्म्य को सुनै अथवा सुनावै वे दोनोंही शिवलोक पावैं ॥

पांचवां अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि मुनि जनों शिवही गुरु हैं शिव देवता औ जीवों का शिवही बंधु है आत्मा भी वही है और जीव भी शिवही है इस संसार में शिव से दूसरा कोई पदार्थ नहीं है

शिवके नाम से जो कुछ दिया जप किया हवनकरा वह अनंत फलद होता है भक्ति से शिवजीको पत्र,पुष्प,फल औ जल भी अर्पण किआहुआ अनन्त फल देता है सब कामना औ सब धर्मों को छोड़ एक शिवकाही स्मरण करने से जीव कर्म बन्धनों से छुटजाता है जो प्रीति अपने स्त्री औ पुत्र तथा धनमें होतीहै वह कदाचित् शिवपूजा में होय तो क्या कहना है मुक्ति औ भुक्ति हाथजोड़ेही खडी है कई महात्मा शिव के निमित्त सब भोगों को त्यागते हैं औ शरीर भी त्यागदेते हैं और पदार्थों की तो क्याबात है वही जिह्वा सफल है जो शिवकी स्तुति करै मन वह जो शिव का ध्यान धरै कान वे जो शिवकी कथा सुनें हाथ जो शिवपूजन करें नेत्रजो शिव का औ शिवपूजाका दर्शन करें शिर वही सफल है जो शिव को प्रणाम करे चरण वही हैं जो शिव क्षेत्रों में गमन करें जिस पुरुष के सब इन्द्रिय शिवके कर्मोंमें तत्पररहैं वह संसार सागरके पारहोता है औ भोग मोक्ष अवश्य पाता है शिव भक्ति करके युक्त चाहे चण्डाल हो चाहे शूद्र स्त्री वा पुरुष अथवा नपुन्सक हो ये सब भी बहुत शीघ्र पापों से छुटते हैं कुल से आचार से शील से औ गुणों से कुछ प्रयोजन नहीं जिस में शिव भक्ति लेशमात्र भी है वही सब जीवों में बन्दनीय है हे मुनीश्वरो अबहम एक कथा शिवभक्ति की वृद्धि करनेहारी सुनाते हैं ॥ कथा ॥

उज्जयिनी नगरी में इन्द्र के तुल्य ऐश्वर्यवान् चन्द्रसेन नाम राजा था वह सदा महाकाल नाम शिवजीके ज्योतिर्लिंग की जो उसी पुरी में स्थापित हैं परमभक्तिसे पूजा कियाकरता औ शिवजीके पार्षदों में प्रधान सबलोक करके पूजित अमंगल दूर करने हारा मणिभद्र नामक यक्ष उस राजा का मित्र था

एकदिन मणिभद्र ने प्रसन्नहो राजा को एक चिन्तामणि दी कि जो मणि मनुष्यों को देखीहुई सुनीहुई औ ध्यान की भई भी कल्याण देतीथी औ जिस मणि के तेजके स्पर्श से तांबा, लोहा, कांसी, पाषाण आदि धातु भी कांचन होजाती थीं राजा चन्द्रसेन उस मणिके धारण से और राजाओं में अति शोभित होताथा जैसा देवताओं के समूह में सूर्य शोभित हो इसभांति चन्द्रसेन राजा के पास उत्तम मणि देख और राजा अतिक्षोभित होते भये औ सबके हृदयमें यही मनोऽर्थ था कि यह चिंतामणि मुझेही मिलजाय इसीहेतु कईतो सस्नेह राजासे मणिकीयाचना करते भये औ कई अहंकारी अपना बल पराक्रम बखानकर राजा से मणि लेनाचाहतेथे परन्तुयह नजानतेथेकि यहमणिपरमेश्वरके अनुग्रह से मिलताहै कुछ पराक्रमसे नहीं इसभांति सब राजाओं ने याचना की परन्तु चन्द्रसेनने मणि एक कोनदीतबतो सब अति कुपित हो अपनी २ सेना साथ ले उठ धाये इसप्रकार अनेक सौराष्ट्र, केकय, शाल्व, कलिंग, शक, मद्रक, पांचाल, अवंति, सौवीर मागध, मत्स्यसृंजय आदिदेशोंके बडे २ नरनाथों की चतुरंगिनी अर्थात् हाथी घोडे रथओं पयादोंकी सेना भूमिको कंपाती औशेष-नागकोभी दबाती चन्द्रसेन राजाकेजीतनेको उज्जयिनीके द्वार पर आपहुंची औनगरी चारों ओरसे घेर ली तबराजा चंद्रसेन शत्रुओंके दलकोदेख आकुलहो महाकालजीकी शरण मेंगया औ वहांजाय अन्नजल त्यागसब मनकेबिकल्प छोड़ दिन रातशिवजी की पूजामें तत्परहुआ इसी अवसरमें एक गोपीअपने पांचबर्षके बालकको साथलियेदही दूधबेचती हुईउसी महाकालके स्थान मेंपहुंची जहां राजा चंद्रसेन व्रत धारे महादेवजीकी प्रसन्नताके अर्थबैठाथा औ भक्तिसे शिवपूजन कररहाथा वहपूजा उसगोपी

केपुत्रने भलीभांतिदेखी औजबउसकी माता दही दूध बेच अपने घरपहुंची वहउसका बालक तबहींसे एक ओर जाय सुन्दर चिकना एक गोल मटोल पत्थर लाय उसको महादेव बनाय अपने आगे धरराय पूजनेलगा औ जो फूल पात उसके हाथआता अथवाजोकुछ खानेकी वस्तु दहीदूध आदि कहीं पाता वही अपने महादेवको लाचढ़ाता और गंध अक्षत धूपदीप वस्त्रभूषण जोउस कोमिलता वही महादेवके अर्पण करता औ पूजन कर भक्तिसे नाचता औ बार २ प्रणामकर पीछे आंख मूद पलथी मार महादेवके आगे ध्यान धर बैठजाता एक दिन इसी भांति ध्यान लगाये बैठाथा किउसकी माताने भोजन करने को बुलाया परंतु वह बालक बहुत बार बुलाने सेभी न आया तब उसकी माता क्रोधकर उसके समीपगई औ देखा तो वह आंख मूदे शिव लिंग के आगे बैठाहै तबतो उस बालक का हाथ पकड कर उठालिया औ ताडन भी किया तिसपर भी वह भोजन करने न गया तब उसकी माताने वह शिव लिंग उठाय दूरफेंक दिया औ सब पूजाकी सामग्री भी इधर उधर फेंकदी इस भांति उस बालक को मार पीट उसको रोताही छोड़ सब पूजा बिगाड़ रोष से अपने घरको चली गई वह बालक भी अपनी सब शिव पूजा नष्ट भई देख हेशिव हेशिव कहकर ऊंचे२स्वरसे रोने लगा औ मूर्च्छित हो भूमिपर गिरपड़ा थोड़े कालमें जब उसकी मूर्च्छा खुली तो क्या देखताहै कि वहां एक बहुत उत्तम शिवालय बन गया कि जिसमें मणियों के खंभे औ सुवर्ण के जड़ाऊ कपाट लगेहैं इन्द्रनीलमणि से जिसकी भूमि जड़ीहै हीरा आदि रत्नों की बेदी उसके बीच बनीहै औ बेदी में उत्तम रत्न खचित जलहरी औ तिस पर अति प्रकाशमान शिवलिंग बिराजमान हो

रहाहै यह देख वह बालक अति आश्चर्य औ भय से झट पट उठा औ शिवलिंग का दर्शन करतेही आनंद के समुद्र में मानों मग्न होगया औ यह बिचार किया कि यह सब मेरी शिवपूजा काही प्रभाव है और कुछ नहीं इस हेतु अपनी माता का अपराध क्षमा कराने को बार बार भूमि पर दंडवत् प्रणाम करने लगा औ यही कहता कि हे देव उस मेरी मूढ़ माता का अपराध आप क्षमा करें वह आपका प्रभाव नहीं जानती थी आप भक्त वत्सल हैं इसलिये मेरे ऊपर अनुग्रह कीजिये जो कुछ मेरेमें आपकी भक्ति का लेश है तो मेरी माता का अपराध क्षमा हो औ उसपर भी आपकी कृपाहो इसभांति बारंबार शिवजी से प्रार्थना कर सूर्यास्त के समय बहुत बेर नमस्कार कर शिवालय से निकल अपने घर आया तो देखा कि वह अपनी पुरानी झोपड़ी नहीं औ उसके स्थानमें एक अतिऊंचा सुवर्णका प्रासाद अर्थात् महल बनगया औ अनेक प्रकार की संपत्ति वहा दीखने लगी तब वह गोपकुमार उस महल के भीतर गया तो देखा कि उसकी माता उत्तम पलंग पर सोतीहै औ दिव्य वस्त्र तथा रत्नों के भूषणों से भूषित मानों कोई देवांगना हो यह देख उसने अपनी माता को जगाया औ कहा कि हे माता यह आश्चर्य देख वहभी घबड़ा कर उठी औ देखा तो सब औरका और हो रहाहै तबतो चकित भई कि यह स्वप्न सा क्या है फिर पुत्रके कथन से जाना कि यह सब परम दयालु श्रीशिवजीका अनुग्रहहै तब तो अति प्रसन्न भई और यह वृत्तांत राजा को भी विदितकिया जो महाकालका निरंतर आराधन कर रहाथा राजा भी सुनतेही वहां आया औ शिवका दर्शन पाया औ उस गोपकुमार की भक्ति से प्रकट हुये उस स्थान को देख अतिही

हर्षित हो उस बालक को अपने हृदय से लगालिया औ आनंद अश्रुपात करने लगा इतने में सब नगर के लोग भी यह महा अद्भुत वृत्तांत सुन वहां आये औ उस बालक पर श्रीमहादेव जीका अनुग्रह देख चकितभये इसभांति अति हर्षसे वह रात्रि सबको एक क्षण के तुल्य बीती औ प्रभात होतेही जो राजा उज्जयिनी पुरी को घेरेथे वेभी इस अपूर्व वृत्तांत को अपने दूतों के मुख से सुन सब वैर छोड़ शस्त्र धर चंद्रसेन राजा की शरण में आये औ महाकाल का दर्शन कर उस गोपी के स्थान पर आय उस समय प्रकट भये शिवालय में शिवका दर्शन पाय अपने को कृतार्थ मानते भये औ उस गोप कुमार को वस्त्र, भूषण, रत्न हाथी, घोड़े, गौ, महिषी, धन, दासी, दास आदिसब उत्तम २ सामग्री देते भये औ उन राजाओं के देशोंमें जो गोपथे उन सबका राजा उस गोपकुमार को बनाय अति प्रसन्न भये इतने में सब देवताओं करके पूजित हनुमान्‌जी वहां प्रकट भये उनको देखतेही सब राजा सिंहासन से उठ कर प्रणाम करते भये हनूमान्‌जी भी उस गोपकुमार को आलिंगन कर कहने लगे कि हे राजाओ सुनों शिव पूजा बिना मनुष्यों का कल्याण करने हारा कोई उपाय नहीं देखों यह गोप कुमार शनि प्रदोष के दिन राजाको शिव पूजा करते देख बिना मंत्रही आपभी पूजा करने लगा उस पूजा का इतना फल इसको भया जो मंत्रसे बिधि पूर्वक शनिवार के प्रदोष में शिव पूजन करते हैं उनपर तो अतिही शिवजी प्रसन्न होते हैं क्योंकि यह शनि प्रदोष मनुष्यों को दुर्लभ है तिसमें भी कृष्ण पक्ष मेंतो अतिही दुर्लभ है औ यह बालक अति पुण्यात्मा सब गोपों की कीर्ति बढ़ाने हारा है इस की आठवीं पीढ़ीमें नंदगोप होगा कि साक्षात् नारायण श्रीकृष्ण

जिसके पुत्र होकर वृन्दावन में रहेंगे औ आज से इसका नाम श्रीकर यहलोक में प्रसिद्ध होगा सूतजी कहते हैं कि हे शौनकादि ऋषीश्वरो हनुमान्‌जी सबराजाओं से यह कहकर औ उस गोप कुमार को शैव आचार का उपदेश दे अंतर्द्धान भये वेसब राजा भी चंद्रसेन की पूजा कर औ उसके सत्कार पूर्वक बिदा किये हुये अपने २ देश को गये श्रीकर भी हनुमान् जीसे शिवपूजा का उपदेश पाकर ब्राह्मणोंके सहित शिवजीका पूजन करनेलगा इसभांति बहुत कालतक चंद्रसेन राजा औ श्रीकर गोप संसारके सब ऐश्वर्य भोग अंतमें शिवलोकको जातेभये सूतजी कहतेहैं कि यह परम पवित्र गुप्त उत्तम गति देनेवाला पाप दूर करने हारा और शिवके चरणमें भक्ति बढ़ाने वाला आख्यान हमने कहाहै॥

छठा अध्याय॥

इस भांति परम रमणीय शिवकी कथा सुन अति मुदित हो शौनक आदि ऋषि कहतेहैं कि हे सूतजी आपने सब पातक निवृत्त करने हारी शिवके माहात्म्य की बड़ी उत्तम कथाकही फिरभी हम यह सुनना चाहतेहैं कि प्रदोष के समय पूजन करनेसे शिवजी क्या सिद्धि देतेहैं यहआप कृपाकर कहैं आपके मुखारविंद से यह अमृतसेभी अधिक मीठी शिव कथा सुनते २ हमको तृप्ति नहीं होती इसभांति मुनियोंका बचन सुनओ शिवमें उनकी दृढ़ भक्ति देख सूतजी बोले कि आपने बहुत उत्तम बात पूछी जिससे सुनने वाले औ कहनेवाले का कल्याण होताहै फलकी इच्छा वाले पुरुषों को तो शिवपूजा निरंतरही करनी चाहिये तिस में प्रदोष पूजाका माहात्म्य तो कौन वर्णन कर सकता है क्योंकि

सब देवता प्रदोषके समय शिवजी के समीपही होतेहैं औ उस समय कैलाशमें सबदेवों करके पूजित शिवजी नृत्य करतेहैं इस समयमें पूजा,होम, शिवकी कथा अवश्य कल्याणकीइच्छावाले पुरुषोंको करना योग्यहै दरिद्रियोंका दरिद्र दूर करनेका यह प्रदोष पूजा परम उपायहै ऋण समुद्रमें डूबे हुयोंके हेतु पार लगाने हारी नौकाहै औ दुःखशोक भयसे पीड़ित मनुष्योंका मंगलदेती है प्रदोष में शिवकी पूजा सब दुःख पाप दूरकर भक्तोंको भुक्ति मुक्ति देने वालीहै दुर्बुद्धि नीच मंद भाग्य शठ पाखंडी धूर्त्त भी प्रदोषमें शिव पूजाकर सब बिपत्तियोंसे छूटतेहैं शत्रुओं करके सर्पों करके औ दुष्टों करके पीड़ित समुद्रमें डूबता हुआ रोगोंसे दुःखी भी प्रदोषमें शिवपूजा करनेसे सुखी हो जाता है दारिद्र्य मरण दुःख पर्वतके बरोबर ऋणका भार शीघ्रही दूरकर शिव पूजन करने से सब संपत्तियों करके युक्त मनुष्य होजाता है इसमें एक प्राचीन इतिहास हम कहते हैं जिसके सुननेसे आप सब कृतकृत्य होंगे बिदर्भ नगरमें अति धर्मात्मा प्रतापी सत्यरथ नाम राजा था वह चिरकाल तक धर्मसे राज्य करता औ प्रजा का पुत्रवत् पालन करता था एक समय शाल्व देश के दुर्मर्षण आदि राजा अपनी सेनाले इस सत्यरथ राजा पर चढ़ आयेऔ बिदर्भ नगर को चारोंओर से घेर लिया इसभांति अपने नगर को घिरा देख बिदर्भ नगर का राजा भी अपनी सेना सजाय युद्ध को निकला औ दोनों सेनाओं का युद्ध होने लगा जैसा पातालमें बासुकिके साथ गन्धर्वोंका युद्ध भयाथा इसी भांतिघोर युद्ध होते २ सत्यरथ राजा शाल्वोंके हाथ से मारा गया औउस क अनेक उत्तम २ मंत्री भी उस युद्ध में काम आये औ बाकी सब सेना भाग निकली बिदर्भ नगर में शाल्व की सेना घुस

कर लूट मार करने लगी इसीअवसर में सत्यरथ राजाकी एक गर्भवती रानी भय से रात्रि के समय चुप चाप अपने महल से निकल पश्चिम दिशा की ओर चली औ चलते २ प्रभात होने तक बहुत सा मार्ग निकल गई तब आगे एक अति मनोहर सरोवर देख पड़ा वह भी तृषाओं धूपसे व्याकुल थी शीघ्र उस सरोवर के तट पर पहुंच एकसघन वृक्षकी छायामें बैठी औइसी समय उसके बालक उत्पन्न भया परंतु वह रानी तृषासे बहुत पीड़ित थी इस कारण उस बालक को वृक्ष की छाया में छोड़ सरोवर में जल पीने को उतरी उतरतेही दैव की इच्छा कि एक ग्राह नेउसको पकड़ जलके भीतर खैंच लिया औ खागया तबतो वह बालक माता पितासे हीन क्षुधा तृषा करके सताया हुवा ऊंचे स्वरसे रोने लगा इस भांति उस बालकके रोते २ ही एक स्त्री एक बर्ष के अपने बालक को गोद में लिये उसी सरके तीर पर पहुंची जोकि बिधवा थी औ भीख मांग अपना उदर पूर्ण करतीथी औ उसका कोई बंधु नहींथा वह उमानाम ब्राह्मणी सूर्य के तुल्य तेजस्वी उस राज कुमार को वृक्ष के नीचे अकेले कोरोता देख बिचारने लगी कि यह क्या आश्चर्यहै इसबालक का अभी नाल छेद भी नहीं हुवा औ माता इसको छोड़ कहां चली गई औ न पिता न और कोई बंधु इस के समीप है यह अनाथ बालक भूमि पर पड़ा है न जाने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र चांडालों मेंसे किसकाहै परंतु इसके स्वरूपसे तो यह राजकुमारसा देखपड़ताहै मैंइस बालकको लेकर पुत्रकी भांति पालन करूं परंतु यह निश्चय नहीं कि किस जाति का यह बालक है औ बिना जातिके निश्चय स्पर्शकरना भी ठीक नहीं इसभांति वह ब्राह्मणी मनमें अनेक संकल्प बिकल्प कररही थी कि अक-

स्मात् एक साधु मानों साक्षात् शिवही हो वहां आया औ उस ब्राह्मणीसे कहा कि हे बिप्र पत्नि तू इस बालक का पालन कर कुछ संदेह मनमें मत रख इससे थोड़ेही कालमें परम कल्याण पावेगी यह कह कर वह भिक्षु तो चला गया औ ब्राह्मणी सब संदेह छोड़ उसबालक को उठा अपने घरले आई औ अपने पुत्र के तुल्य उसका भी पालन लालन करने लगी एक चक्रानाम नगरीमें रहती औ भिक्षाके अन्नसे दोनों बालकोंका पोषणकरती औ वे दोनों बालक भी ब्राह्मणों करके यज्ञो पवीत आदि संस्कारकिये हुये प्रतिदिन वृद्धि की प्राप्तहोते भये औ प्रति दिन अपनी माता के साथ भिक्षा को जाते एक दिन वह ब्राह्मणी दोनों बालकों को साथ ले भिक्षाको गई दैवयोग से भिक्षा मांगती २ एक शिवालय में जापहुंची कि जहां अनेक ब्राह्मण औ वृद्ध २ ऋषि एकत्र होरहे थे उनमें शांडिल्य ऋषि उस राजकुमार को देखकर कहने लगे कि दैवकी गति बिचित्र है देखो यह बालक दूसरी माताके आश्रयमें भिक्षाके अन्नसे जीताहै औ इसब्राह्मणी को माता जान तथा ब्राह्मण कुमारके संगसेयहभी ब्राह्मण कासा बालक होगया यह शांडिल्य मुनिका बचनसुन अति आश्चर्य से उस मुनियों की सभा से ब्राह्मणी प्रणाम करअति बिनयसे नम्रहो पूछने लगी कि महाराज यह बालक एक साधुके बचनसे मैंने ले लिया औ अपने पुत्र के तुल्य इसका पोषण करती हूं परंतु आज तकभी इसका कुल नहीं जानती औ इसकी कौन तो माताहै औ पिता कौनहै यहभी मुझे ज्ञातनहीं इसलिये आप अनुग्रह कर यह सब कहैं क्योंकि आप दिव्यदृष्टिहैं यह ब्राह्मणी का बचन सुन शांडिल्य मुनिने उसका कुल औ उसके पिता की युद्धमें मृत्यु तथा उसकी माताको ग्राहनेपकड़ना सब उसब्राह्मणी

से कह सुनाया यह सुन ब्राह्मणीनेआश्चर्य से पूछा कि महाराज वह बिदर्भ का राजा सब राज के भोग छोड़ युद्ध में क्यों मारा गया औ यह बालक कौन कर्म से दरिद्री भया और दारिद्र्यदूर कर फिर राजा क्योंकर होगा औ यह मेरा बालक भी भिक्षाके अन्न से निर्बाह करता है इसका भी दारिद्र्यदूर होने का कोई उपाय आप कृपा कर कहैं इतना सुन शांडिल्य मुनि बोले कि हेब्राह्मणि इस बालकका पिता बिदर्भ राज पूर्व जन्ममें पांड्य देशका राजा था वहअति धर्मात्मा राजा पृथ्वीका पालन करता हुआ एक दिन प्रदोषके समय शिव पूजन करता भया इसी अवसरमें उसके नगर भीतर बड़ा कलकल शब्द चारों ओर मचा वह शब्द सुन राजा शिव पूजन छोड़ उठ चला आगे देखे तो उस राजा का मंत्री उसके एक शत्रु सामंतको संग लिये संमुख चला आता है तब राजाको बहुत क्रोध आया औ क्रोधसे उस का शिर काट लिया औ लौट कर अपने स्थानमें आ शिव पूजा समाप्त किये बिनाही रात्रिको भोजन कर लिया औ उस राजा का पुत्र भी इसी भांति शिव पूजन बिना कियेही भोजन कर मूढ़ हो सो रहा वही राजा इस जन्म में बिदर्भ देश का स्वामी भया औ वह शिव पूजा खंडित छोड़ने से युद्ध में शत्रुके हाथ मारा गया वह उसका पुत्र भी उस शिव पूजा भंग करनेके अपराध सेही दरिद्री भया औ इसकी मातानेभी पूर्व जन्ममें अपनी सपत्नी छलसे मार दी थी उस पापसे इस जन्ममें ग्राहके मुख में पड़ी यह इनका वृत्तांत तुझे कह सुनाया औ यह तू निश्चय जान ले कि मनुष्य शिवपूजा किये बिना अवश्य दरिद्र होते हैं शांडिल्य मुनि कहते हैं कि हे ब्राह्मणि सत्य परलोक का हित सार सर्व वेद का रहस्य मैं तुझे कहता हूं कि इस घोर असार

संसार सागर में प्राप्त हो मनुष्यके लिये भक्ति से श्री शिवजीके चरण कमलकी सेवाही सार है जो पुरुष प्रदोष समयमें शिव जीकी पूजा नहीं करते औ पूजेहुये शिवलिंगको प्रदोषमें प्रणाम नहीं करते तथा जो मूढ़ परम आदरसे शिवके गुणानुवाद अपने कर्णपुटों करके नहीं पान करते वे जन्म २ में दरिद्र होते हैं जो पुरुष एकाग्र चित्त हो प्रदोष समय मेंपरमेश्वरके चरण कमल की पूजा करते हैं वे इसी लोक में धन, धान्य, कलत्र पुत्र, संपत्ति, सौभाग्य युक्त होते हैं कैलाश पर्वत में तीन लोक की जननी श्री पार्वती जी को रत्नों से जड़े हुये सुवर्ण सिंहासन पर बैठाय प्रदोष समय में जब महादेवजी नृत्य करने लगतेहैं उस समय सब देवता उन की सेवा के अर्थ वहांहीं प्राप्त होते हैं उनमें से सरस्वती तो उस नृत्य के समय बीणा बजाती है औ इंद्र बंशी बजाता है ब्रह्मा जी दोनों हाथों से तालदेते हैं लक्ष्मी जी गायन करती हैं बिष्णुभगवान् बड़ी गंभीरध्वनि से मृदंग बादन करते हैं और सबदेवता चारों ओर भक्तिसे कर जोरि २ खड़े होते हैं इस भांति प्रदोष के समय सब देवता श्रीमहा-देवजी की सेवा में रहते हैं और भी गंधर्ब यक्ष, पक्षी, सर्प, सिद्ध साध्य, बिद्याधर, अप्सराओं के समूह आदि जो तीन लोक में देवता हैं सब प्रदोष कालमें कैलाश बासी अबिनाशी श्री महा-देवजी के समीप रहते हैं इस हेतु प्रदोष समय में सब ब्रह्मा बिष्णु आदिदेवों को छोड़ एक शिवजीही की पूजा करनी योग्य है केवल भक्ति से बिधिपूर्बक शिवपूजन करने से ही सब देवता प्रसन्न होते हैं इतना कह शांडिल्य मुनि बोले कि हे ब्राह्मणि यह तेरा पुत्र पूर्ब जन्ममें भी ब्राह्मण था परंतु सारी अवस्थाइस ने दान प्रतिग्रहमेंही बितादी कुछ सत्कर्म न किया इस हेतु

इस जन्ममें यह दरिद्री भया अब इस दारिद्र्य दूरकरने के अर्थ श्री शंकर का शरण लेवे तो सुखी होय ॥

सातवां अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हे ऋषीश्वरो इस भांति शांडिल्य मुनि का बचन सुन वह ब्राह्मणी हाथ जोड़भक्ति से शांडिल्य मुनिको प्रदोष पूजाका बिधानपूछती भई ब्राह्मणी का प्रश्न सुन शांडिल्य मुनि प्रदोष पूजा की बिधि कहने लगे कि हे ब्राह्मणि शुक्ल कृष्ण दोनों पक्षों की त्रयोदशी तिथि को दिन में निराहार रहे अर्थात् अन्न जल न करे जब तीन घड़ी दिनरहे तब स्नान कर सुन्दर श्वेत बस्त्र पहिन नियम पूर्बक संध्या बंदन और जप करके शिव पूजा का आरंभकरै पूजा के स्थान को सुन्दर लीप पोत कर उस में एक मण्डप बनाय उस को बस्त्र बितान पुष्प माला, फल पत्र आदि से शोभित कर उस में पांच रंगसे अष्टदल कमल, लिख कर सुन्दर आसन बिछाय सब पूजा की सामग्री इकट्ठी कर एकाग्र चित्त हो पूजाका आरम्भ करे पहिले तंत्रोक्त बिधि से आसन शोधन, आत्मशुद्धि, भूत शुद्धि तीन प्राणायाम आदिकरके बिन्दुसहित बीज बर्णों से मातृका न्यास करके परम शिवका ध्यान करे बामभाग में गुरुकी औ दक्षिणभाग में गणेशकी पूजाकरे फिर दोनों कन्धे औ दोनोंऊरू इन चार स्थानों में धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य इनका न्यास कर दोनों पार्श्व नाभि औ पृष्ट इन स्थानों में अधर्म, अज्ञान अवैराग्य, अनैश्वर्य इनका न्यासकरे फिर हृदयमें पीठन्यास करे आधार शक्ति से लेकर ज्ञानात्मा पर्यंत हृदय कमल में न्यासकर वहांहीं नव शक्तियोंका ध्यानकर श्रीमहादेवजी का उस पीठपर

ध्यान करे कि कोटि चंद्रमा के तुल्य तेजस्वी औ शांत जिनका स्वरूप है चन्द्र मस्तक पर धारण किये हैं पिंगल बर्ण का जिनका जटा जूटहै रत्नजटित मुकुट शीशपर धारे हैं नीलकएठ हैं नागोंके हार औ कंकण केयूर आदि भूषण पहिने हैं बर अभय, परशु औ मृगचारों हाथों में धारण किये हैं व्याघ्र का चर्म पहिने रत्न सिंहासन पर बैठे हैं इसबिधि शिवजीका ध्यान कर उनके बामभाग में पार्बतीजीका ध्यान करे कि जपाके पुष्प वा उदयहोते सूर्य अथवा बिजलियों के समूह के तुल्य औ मन तथा नयनो को आनन्द देनेवाला जिनका रूपहै चन्द्रकी कला मस्तक पर धारेहैं भंवरसे कृष्ण औ कुंचित अलक मुख चन्द्रपर लटक रहेहैं औ लटकते हुये मणि कुण्डलों से जिनका मुख अति शोभित होरहा है सुन्दर केसर कस्तूरी से जिन के कपोल भूषित होरहे हैं मन्दहास से जिनका रक्तबर्ण अधर प्रकाशित होरहाहै नवीन ही कुचरूप कमल कलीका उदय जिनकेहुआ है तीन रेखाओं से शोभित जिनका कण्ठ है चारों भुजाओंमें पाश अंकुश, बर, अभय धारण किये हैं अनेक रत्नों के कंकण केयूर मुद्रिका आदि भूषण पहिनेहैं तीन बली जिनकेउदर में पड़रही हैं औ सुबर्ण की कांची रक्तबस्त्र रक्तमाला धारणकियेहैं औ रक्तचन्दनसे चर्चितहैं दिकपालों की स्त्रियोंके शीश जिनके चरण पर सदानये रहतेहैं रत्न सिंहासनपर बिराजमानहैं औ छत्र चामर आदि राज चिन्ह धारेहैं इसप्रकार शिवजी औ पार्बती जीकाध्यान कर गंध पुष्पादिकों से पंचब्रह्म मंत्रों करके पूजा करै औ मूल मंत्र से हृदय में तीन पुष्पांजलि देकर अपनेको भी शिव स्वरूप ध्याय कर अपने आगे सुबर्ण आदिके सिंहासन पर देवता को स्थापन कर वाह्य पूजा करे पूजा के आरंभ में पहिले संकल्प

करे दोनों हाथ जोड़ हृदय में शिवजी का ध्यानकर यह प्रार्थना करे कि ऋण,दारिद्र्य,दौर्भाग्य औ सब पातक निवृत्ति के अर्थ हे शंकर आप अनुग्रहकरो दुःख औ शोक की अग्निसे संतप्त संसार के भयसे पीड़ित अनेक रोगों करके व्याकुल अनाथ मैंहूं मेरी आपरक्षाकरो हे देवदेवेश हेमहादेव हेअभयके देनेहारे मेरी की हुई पूजा को आप पार्बतीजी के साथ ग्रहणकरो इसभांति प्रार्थना कर पूजाका आरंभ करे बामभाग में गुरु दक्षिणभाग में गणपति ईशान कोण में क्षेत्रपालकी पूजा करे फिर वास्तोष्पति बागदेवी औ कात्यायनी जीकी पूजाकर धर्म, ज्ञान, बैराग्य ऐश्वर्य इनके अन्त में नमः यह लगाकर ईशानादि कोणसेपीठ के चारोंपादों में पूजा करे इसीभांति अधर्म, अज्ञान, अबैराग्य औ अनैश्वर्य को पीठ के अंगों में पूजै पीठके बीच अनन्तकी पूजाकर सत्वआदि तीनोंगुण पूजकमलकी पूजाकर अग्निसूर्य औ सोमके मण्डलों की पूजाकरे फिर कमल के मध्य में बामा आदि पीठशक्तियों की पूजाकरपीठमंत्रसे आसन देकर शिवजी की औ पार्बतीजी की सब उपचारों से पूजाकर षडंगों से पहिला आबरण पूजकर ब्राह्मी आदि मातृकाओं करके औ पंचब्रह्ममूर्ति वृषभादिक अणिमादि अष्टसिद्धि इन्द्रादिक औ बज्रादिकों करके आबर्ण पूजाकर चण्डेश्वर आदिकों को पूजते जो रूप सदा शिवको उत्तम उपचारों से पूजै प्रतिष्ठित शंखके जल औ पंचामृत से रुद्रसूक्त पढ़कर महादेवजीका अभिषेक करै वैदिक मंत्रों से आसन आदि देवे पहिले सुबर्ण का आसन बस्त्रसहित दे अर्घ्य, पाद्य, आचमन, मधुपर्क फिर आचमन देकर स्नान करावे पीछे यज्ञोपवीत बस्त्र भूषण औ गंध अक्षत भक्तिसे भगवान् को समर्पण करे फिर बिल्वपत्र,मंदार,कल्हार,कर्णिकार,

कमल, धत्तूर, द्रोण, मल्लिका, कुशा, अपामार्ग, तुलसी, माधवी, चंपक वृंहती, करबीर आदिके उत्तम २ पुष्प औ माला चढ़ाय बहुत सुगंधित धूप औ दीप निबेदन कर पायस, मोदक, अपूप, दुग्ध दधि आदि भांति भांति का नैवेद्य औ शीतल तथा मधुर जल समर्पण कर तंत्रोक्त बिधि से हवन करे फिर भी नैवेद्य तांबूल धूप, दीप, आरती, छत्र, चामर, दर्पण आदि भक्ति से अर्पण करे इस प्रकार की पूजामें असमर्थ हो औ निर्धन होय तो भक्तिसे पुष्पही चढ़ावै क्योंकि महादेवजी भक्तिसे चढ़ाये हुवे पुष्पमात्र सेही प्रसन्न होजाते हैं फिर अंग देवताओं की पूजाकर अनेक प्रकार के स्तोत्रों से स्तुति करके वृष औ चंडेश्वर सहित प्रदक्षिणा कर बिधि पूर्वक पूजा समर्पण कर इस स्तोत्रसे शिवजी की स्तुति करे ॥ स्तोत्र ॥ जयदेवजगन्नाथ जयशंकरशाश्वत जयसर्वसुराध्यक्ष जयसर्वसुरार्चित १ जयसर्वगुणातीत जयसर्व वरप्रद जयनित्यनिराधार जयबिश्वम्भराव्यय २ जयबिश्वैकबन्धेश जयनागेन्द्रभूषण जयगौरीपतेशंभो जयचन्द्रार्धशेखर ३ जयकोट्यर्कसंकाश जयानन्तगुणालय जयरुद्रबिरूपाक्ष जयनित्यनिरंजन ४ जयनाथकृपासिंधो जयभक्तार्तिभंजन जयदुस्तरसंसार सागरोत्तारणप्रभो ५ प्रसीदमेंमहादेव संसारार्त्तस्यखिद्यतः। सर्वपापक्षयंकृत्वा रक्षमांपरमेश्वर ६ महादारिद्र्य मग्नस्य महापापहतस्यच महाशोकनिविष्टस्य महारोगातुरस्यच ७ ऋणभारपरीतस्य दह्यमानस्यकर्मभिः ग्रहैःप्रपीड्यमानस्य प्रसीदममशंकर ८ इन आठ श्लोकों से पूजाके अंतमें प्रार्थना करे धनाढ्य हो वा राजाहो तौभी परमेश्वरकी इसभांति प्रार्थना करने से दीर्घ आयुष आरोग्य कोशकी वृद्धि बलक उन्नति को पाता है फिर यह भी प्रार्थना करे कि हे परमेश्वर

तेरे अनुग्रह से मुझको नित्य आनंद हो शत्रुओं का क्षय होय मेरी प्रजा सुखी रहे सब जीव बिपत्तिसे छुटें पृथिवी पर दुर्भिक्ष मारी संताप आदि न होंय राजकी वृद्धि हो सब दिशाओं में मंगल होय इस प्रकार प्रदोष में शिवजी का आराधन कर पीछे ब्राह्मण भोजन कराय दक्षिणा दे पूजा समाप्त करै यह सब कामना पूरी करने वाली शिव पूजा हमने कही है शिवजी का द्रव्य हरण से जोपाप होताहै उसको छोड़ और सब पातक उप पातक इस पूजन से दूर होते हैं क्योंकि ब्रह्महत्या आदि पापों का पुराण औ स्मृतियों में प्रायश्चित्त लिखा है परंतु शिव द्रव्य हरण के पाप का कहीं प्रायश्चित्त नहीं बहुत कहने से क्या प्रयोजन है यह शिव पूजा सौ ब्रह्महत्या को भी निवृत्त कर सकती है हे ब्राह्मणि यह सब जीवों में रहस्य औ सबका सार शिव पूजा हमने तुझ से कही येतेरे दोनोंपुत्र इसी बिधि से शिव पूजा करैं तो एक बर्ष मेंही परम सिद्धि को प्राप्त होंगे यह शांडिल्य मुनिका बचन सुन ब्राह्मणी अपने पुत्रों सहित प्रणाम कर कहने लगी कि आज मैं कृतार्थ भई कि आपका दर्शन पाया औ आपके मुख से शिवजी का प्रभाव सुना अब ये दोनों बालक आपकेही शरण हैं इनमें इस मेरे पुत्रका नाम शुचिव्रत औ इस राजपुत्र का नाम धर्मगुप्त मैंने धर रक्खाहै ये दोनों बालक मैं औ आपकेचरण सेवक हैं कि आपकी कृपा से इस दारिद् सागर का पार हम पावेंगे इस प्रकार उसकी नम्रता देख औ शरणागत भई उस ब्राह्मणी को मीठे बचनों से आश्वासन कर उन दोनों बालकों को शिवाराधन मंत्र का उपदेश शांडिल्यमुनि करते भये इसबिधि मुनिसे उपदेश पाय औ मुनिको प्रणामकर तीनों अपने स्थानको जातेभये उसीदिन

से मुनिके उपदेशके अनुसार वे दोनोंबालक प्रदोषमें शिव पूजा करन लगे इसीरीत से पूजा करते २ सुखपूर्वक चारमहीने बीते एकदिन वह ब्राह्मणका बालक अकेलाहीस्नानकरने गया वहां नदीकेतटकी रमणीयता देखइधर उधरघूमनेलगा घूमते २ एक स्थानमेंजहां जलके बेगसे मृत्तिका दूरहोगई थी एक चमकता हुआ निधिका कलश देखपड़ा वह ब्राह्मण कुमारभी आश्चर्य औ हर्षयुक्तहों शिवजी के अनुग्रह सेही उसधनककलश को प्राप्तभया जान झटपट शिरपर उठाय घर ले आया औ अपनी माता से कहनेलगा कि हे माता देख यह शिवजीका प्रसाद जो कृपाकर मुझे दिखाया यह सुन उसकी माता भी वहां आय उस कलश को देख बहुतही प्रसन्नभई औ राजकुमार को बुलाय कहने लगी कि हे पुत्रो यह शिवजीकी करुणासे धनमिला है सो तुम दोनों मेरी आज्ञा से बरोबर बांटलो यह माता का बचन सुन ब्राह्मणकुमार तो बहुत प्रसन्न हुआ परन्तु राजपुत्र बोला किहे मातायह तेरेपुत्रकेही पुण्यसे मिलाहैमैं इसको बांटकर लेनानहीं चाहता यहही अपने पुण्य से प्राप्त हुवे इस धनका उपभोग करै क्या श्रीमहादेव जी मेरेऊपर कृपा नकरेंगे इस भांति कह वह धन राजपुत्रने न लिया औ पहिलेकी रीति परही भक्तिसे शिवजीकी पूजा करतारहा औ उसीघरमें एक बर्ष पूजाकरते२ व्यतीत भया एकदिन बसंत ऋतुमें वह राजपुत्र अपने मित्र ब्राह्मणकुमारको साथले बनमेंबिहारको गया औ दूरजाकर उसी बनमें बहुतसी गन्धर्वोंकी कन्या क्रीड़ा करती देखीं उन कुमारियों को दूरसे देख ब्राह्मणकुमारने राजकुमार से कहाकि भाई इससे आगे नजाना चाहिये आगे स्त्री क्रीड़ा कर रही हैं औ पण्डित लोग स्त्रियों का संसर्ग दूरसे छोड़ातेहैं क्योंकि ये स्त्रियेंधन औ

यौवनके गर्वसे मत्तहैं औं मनुष्य को अपनी माधुरी बाणीसे बश करलेती हैं औ अत्यंत कपटकी खानि होती हैं इसलिये अपने धर्म में रत बिद्वान् ब्राह्मण औ बिशेष करके ब्रह्मचारी इनका संसर्ग औ इसके साथ बातचीत कदाचित् भूलकर भी नकरै इससे मैंतो इनके समीप जाना नहींचाहता यह कह वहब्राह्मण कुमार तो वहीं से लौटपड़ा औ राजपुत्र अकेलाही निर्भय हो कौतुक सेजहां वे गन्धर्ब कुमारी बिहार कररहीं थीं वहां गया उसको देख उसमें से एक अति सुन्दरी गन्धर्ब कन्या अपने मनमें बिचार करनेलगी कि यह सर्बांग सुन्दर औ युवा पुरुष कौन मस्त हाथी की भांति मन्दगति इधरही चला आता है इसके अंग अतिही मनोहर हैं औ अपने मन्दहास से देखने वालों के हृदय खैंचेही लेता है यह साक्षात् कामदेवही है अथवा और कोई देव कुमार है इस प्रकार दूरसेही बड़े आश्चर्य युक्तहो राजकुमार को देख अपनी सखियों से कहने लगी कि हे सखियो यहां से थोड़ीदूर एकबन चंपक, अशोक, बकुल पुन्नाग आदि उत्तम वृक्षों से भरा हुआ है वहां तुम सब जाय कर अच्छे २ पुष्प लेआओ तब तक मैं यहां ठहरती हूं इस प्रकार उसके बचनसे सब सखी दूसरे बनको चलीगईं औवह राजकुमार को अति प्रेम से देखती हुई वहांहीं ठहरी इतने में राज पुत्र भी उस नव यौबना के समीप पहुंचा औ तिलोत्तमा रंभा आदि अप्सराओं सेभी अधिक उसका रूप देख कामदेव के बश हुआ वह गंधर्ब कन्याभी राजकुमार को देख उठखड़ी भई औ बड़ी प्रीतिसे अपने हाथ आसन बिछाय राजकुमार को बैठाया औ उसके देखने से ही मोहित हुई पूछने लगी कि हे कमलपत्राक्ष तुम कौन हो औ किस देशसे यहां आये औ किस

के पुत्र हौ यह कृपा कर मुझसे कहो यह उसका बचन सुन राजपुत्र कहने लगा कि बिदर्भराज का मैंपुत्रहूं औ माता पिता मेरे देव लोक को गये राज्य शत्रुओं ने लिया यह हमारा वृत्तांत है अब तुम कहो कि कौन हो औ किसकी कुमारीहो इसबन में अकेली किसअर्थ हौ औ क्या बिचार कर रही हो औ क्या कहना चाहतीहौ इस प्रकार राजपुत्र सों पूछी भई गंधर्ब कन्या बोली कि महाराज कादंबिक नाम एक गंधर्बों के कुल में प्रधान गंधर्ब है उसकी मैं कन्या हूं औ अंशुमती मेरा नामहैतुम को आते देख तुम्हारे साथ संभाषण करने की इच्छा से सब सखियोंको दूसरे बनमेंभेज यहांमैंअकेली रहीहूं संगीत बिद्या में मेरे बरोबर दूसरी कोई नहींहै मेरा गान सुन सब देवांगना प्रसन्न होजातीहैं औ सब कला मैं जानती हूं दूसरे के हृदय का अभिप्राय भी ठीक २ समझ लेती हूं आप काभी मनोऽर्थ मैंने जान लियाकि आपका चित्त मेरे ऊपर आशक्तहै औमेरा भी चित्त आपके ऊपर मोहित होरहा है यह आपकी औ मेरी प्रीति ईश्वर नेही उत्पन्न करी है इसलिये अब इस स्नेह का भंग कभी न होगा इस प्रकार प्रीतिसे आलाप कर अपनेकंठ से मोतियों का हार उतार राज पुत्र को पहिनाय दिया इस भांति उसका अति स्नेह देख राजपुत्र भी आनन्द में मग्न हो कहने लगा कि हे गंधर्ब पुत्रि और सब तो तैंने ठीकही कहा परंतु मैं राज्य हीन औ विपत्ति में पड़ा हुआ मेरी प्रिया होना तू क्योंकर स्वीकार करती है औ अपनेमाता पिता की आज्ञा बिनाही यहस्वच्छंदआचरण तू क्योंकर करना चाहती है यह राज पुत्र का बचन सुन हंसकर गंधर्ब पुत्रीबोली कि ठीक है जैसा आप कहेंगे वैसाही होगापरंतुपरसों प्रातःकाल

ही आप अनुग्रह कर एक बार इसी स्थान पर आजावें कुछ आवश्यक कार्यहै इतना राजपुत्र से कह अपनी सखी साथ ले बिमान पर चढ़ अपने धाम को गई औ राजपुत्र भी बड़े हर्ष से अपने मित्र ब्राह्मण पुत्र के समीप आय सब वृत्तांत सुनाय अपने घर आया वहां अपनी माता को भी यह समाचार कह प्रसन्न कर तीसरे दिन प्रभातही दोनों उसी बनमें पहुंचे जहां गंधर्ब कन्या मिलीथी वहां देखते हैं कि गंधर्बराज अपनी उसी पुत्रीको संगलिये इनकीही राह देख रहा है इन दोनों कुमारों को देख प्रसन्नहुवा औ आसन पर बैठाय कहनेलगा कि हेराजपुत्र कल्हमें कैलाश में गयाथा वहां शिवजी औ पार्वतीजी के दर्शन कर कर जोड़ खड़ा हुआ कि सब देवताओं के सन्मुख मुझे महादेवजी ने आज्ञादी कि हे गंधर्बराज भूलोक में धर्मगुप्त नाम एक राजपुत्रहै उसका राज्य शत्रुओंने लेलिया सब बंधु मारेगये अब वह बालक गुरूकी आज्ञासे मेरी पूजामें तत्पर है औ उस पूजाके प्रभावसे सब उसके पितर मेरे लोक में प्राप्त भये औ थोड़ेही काल में वहभी सब शत्रुओं का संहार कर अपना राज्य पावेगा इसलिये तू उसकी कुछ सहायता कर यह शिवजी की आज्ञापाय अपने नगरमें आय इस कन्यासे तुह्मारा सब वृत्तांत सुन औपरम कृपालु भक्तों को कल्पवृक्षश्रीशिवजी का यही मनोऽर्थ समझ इस कुमारीको साथले इस बनमें आया अब इसअंशुमती नाम अपनीकन्याको तुझे देताहूं औ शिवजी कीआज्ञा सेतेरे सब शत्रुओं को मार तुझे राज्य दिवादेताहूं औ तूभी इसमेरी कन्या सहित दश सहस्त्र बर्ष तक संसार का सब सुखभोग अंतमें इसी देहसे कैलाश में पहुंचेगा औ शिवजीके समीप दोनों रहोगे इस प्रकार गंधर्बराजने अपना वृत्तांत सुनाय उसी बनमें अपनी कन्या

का बिवाह उसराजकुमार के साथ करदिया औबहुतसे रत्न मोतियों के हारदिव्यबस्त्र भूषण सुबर्णके पात्र दश हजार हाथी औ दश लाखघोड़े औ हजारों सुबर्ण करथ देताभया औ एक बहुतउत्तम रथ औ दिव्य धनुष दो तूणीर जिनके बाण कभी न निबड़े अमेद्य कवच शत्रुओं का नोश करनेवाली उत्तम एक सुबर्ण की बरछी देताभया औ अपनी कुमारीकी सेवाको एकसहस्र दासी दी औ उसकी सहायताके लिये गंधर्बों की चतुरंगिनी सेना भी बहुतसीदी इसप्रकार श्रीशिवजी के अनुग्रहसे उत्तम भार्या औ बड़ी भारी संपत्ति पाय राजकुमार अति हर्षित होता भया वह गंधर्बराज भी अपने स्वरूप के योग्य कन्या का बिवाह कर बिमान पर चढ़ अपने लोक को गया राजकुमार भी नवोढ़ा बधू को साथले बड़ी धूमधाम से अपने पिता की राजधानी में आया वहां दुर्मर्षण नाम अपने शत्रु को गंधर्बसेन के सहाय से जीत और सब शत्रुओं का संहार कर राज सिंहासन पर बैठ निष्कंटक राज्यकरनेलगा वह ब्राह्मणी उसकी माता औ ब्राह्मणकुमार भ्राताके तुल्य राज्य भोग करतेरहे इतनी कथा सुनाय सूतजी बोलेकि हेऋषियो इसभांति वह धर्मगुप्त प्रदोषमे भक्ति से शिवजी का आराधनकर निष्कंटकराज्य पाता भया इस प्रकार और भी मनुष्यों ने प्रदोषमे शिव का आराधन कर २ इष्ट मनोऽर्थ औअंतमें शिवलोक पाया यह प्रदोष में शिव पूजा धर्म अर्थ,काम, मोक्ष देने वाली है यह पुण्य कथा जोभक्तिसे सुने अथवा प्रदोश में शिव पूजाकरउसके अंतमें इसकथा कोपढ़े वह पुरुषसो जन्ममें भी दरिद्री नहीं होताऔअंतमेंशिवलोक पाताहै जो पुरुष इसदुर्लभ मनुष्य देहको पाय परमेश्वरके चरणकमल की भक्तिसे पूजाकरतेहैं वेहीधन्यहैं औ अपने पुण्यसे तीनलोक

नीतते हैं औ उनके चरणका रज भुवन को पवित्र करता है ॥

आठवां अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो नित्य आनन्दमय शांत निर्विकल्प निरामय अनादि अनन्त शिवतत्वको जो महात्माजानतेहैं वेही संसार सागरके पारगामी होतेहैं संसार के सुख में बिरक्तहो जोधीर पुरुषशिवमें निष्कामभक्ति करते हैं वेनिःसंदेह मुक्ति पातेहैं जोपुरुष बिषयभोगकी इच्छासेभी शिवजीमें भक्ति करतेहैं वे बिषयभोग करते हुवे भी बिषयोंके बश नहींहोते चाहे जिस मनोऽर्थ से शिव भक्ति करे वह उसी मनोऽर्थको पाय अंत में मुक्ति पाताहै जोपुरुष बिषय तो छोड़ नहीं सक्ते औ मुक्ति की इच्छा करते हैं उनके लिये शिवजी की भक्ति बिना कोई दूसरा उपाय नहीं इस लोक में भुक्ति औ मुक्ति देने वाली एक शिवपूजा है सोमबार को शिव पूजन का बहुत माहात्म्य है जो उस दिन प्रदोष भी होय तो फिर क्या कहनाहै जो केवल सोमबार को भी शिव पूजन करते हैं उन पुरुषों को इस लोक में अथवा परलोकमें कोई बस्तु दुर्लभ नहीं उपवास रखकर सायंकालको स्नान कर पवित्र हो वेदोक्त अथवा पुराणोक्त मंत्रों से बिधि पूर्वक शिव पूजा करै ब्रह्मचारी, गृहस्थ, सभर्तृकास्त्री अथवा बिधवा भी शिव पूजन कर अपना मनोऽर्थ पातेहैं इसमें एक अति मनोहर कथा हम कहते हैं जिस के सुनने से शिव में भक्ति औ अंतमें मुक्ति हो आर्यावर्त्तमें बड़ा धर्मात्मा औ दुष्टोंकोदण्ड देनेवाला अश्वमेध आदि यज्ञ करनेहारा अतिदानी निरभिमानी बड़ा ज्ञानी शिव औ बिष्णुका भक्त धर्ममें अनुरक्त चित्रबर्मानाम एक राजा था उस राजाके कई रानी उत्तम २ कुलकी औ अति रूप-

वती थीं परंतु पुत्र एक में भी न भया कुछ काल में एक कन्या जैसे हिमालयके पार्बती उसके भई उस कन्याके जन्मसे राजा प्रजाको अति आनन्द भया एक दिन राजा ज्योतिषी औ सामुद्रिक बिद्या जानने वालों को बुलाय सत्कार पूर्बक उस कन्या का शुभ अशुभ भावी फल पूछने लगा उनमेंसे बड़ा ज्ञानी एक पंडित कहने लगा कि हे राजा यह तेरी कन्या अति धन्या पार्बतीके तुल्य मांगल्यवती दमयंतीसी रूपवती सरस्वतीके तुल्य सब कलाओं में कुशल लक्ष्मी सी भाग्यवती देवमाता सी संतति वाली सूर्यकी प्रभा सी तेजमें औ चंद्रिकासी मनोहरसी मंत्रिनी नाम दश सहस्र बर्ष पतिके सहित राज्य कर आठ पुत्रों की माता हो अति सुखको प्राप्तहोगी यहबचन उस ब्राह्मणका सुन राजा परम हर्षित हुआ औ बहुत सा धन दे उस बिप्रको बिदा किया यह देख उन में से एक दूसरा ब्राह्मण बोल उठा कि हे राजा और तो सब ठीकही है परंतु यह तेरी कन्या चौदह बर्षकी अवस्थामें बिधवा हो जायगी यह बज्रसा कठोर उस ब्राह्मणका बचन सुन राजा अति ब्याकुल भया फिर मनमेंबिचार किया कि जो परमेश्वरकी इच्छा होगी वही होगा चिंता करनेसे क्या फल है यह मनमें निश्चयकर उन सब ब्राह्मणोंको धन दे बिदा किया औ अपना राजकाज करनेलगा वह सीमंतिनी नाम राजकन्या भी कुछ दिनमें तरुण अवस्था को प्राप्तभई औ अपनी सखियों के मुखसे अपने बिधवा होने का वृत्तांत सुन अतिशोक को प्राप्त हो चिंता करने लगी औ ब्याकुल हो याज्ञबल्क्य मुनि की स्त्री मैत्रेयीके पास जाय उसके चरणों में शिरनवाय बिनय से कहने लगी कि हे माता मैं आपकी शरणमें आईहूं कृपा कर कोई ऐसा उपाय बताओ कि जिससे मैं बिधवा न होंऊ औ मेरा सौभाग्य

बंधे यह राजकन्याकी बिनती सुन मैत्रेयी बोली कि हे सीमंतिनि शिव औ पार्बती कीशरण ले वेही तेरा दुःख दूर करेंगे सोमबार के दिन उपवास रख सायंकाल को स्नान कर पबित्र बस्त्र धार एकाग्र चित्त हो मौनसे बिधि पूर्बक शिवपूजा कर पीछे ब्राह्मण भोजन कराय शिवजी को प्रसन्न कर क्योंकि महादेवजी के अभिषेक करनेसे पापका क्षय होताहै औ पीठ पूजा करनेसे राज्य मिलताहै औ गंध, अक्षत, पुष्प माला आदिके चढ़ानेसे सौभाग्य औ बड़ा भारी सुख प्राप्त होता है धूप देनेसे सुगंध औ दीप के चढ़ाने से कांति नैबेद्य समर्पण करने से उत्तम २ भोग तांबूलके निबेदन करने से लक्ष्मी मिलती है औ नमस्कार करने से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारोंका अधिकारी होता है अणिमादि आठ सिद्धि जप करनेसे मिलती हैं होम से सब कोश अर्थात् खजाने बढ़तेहैं औ ब्राह्मण भोजन से सब देवताओं की प्रसन्नता होती है हे सीमंतिनि तूभी सोमबार को इसी बिधिसे शिव पार्बती का आराधन कर तो यह महा भय तेरा निवृत्त होगा औ सब भांति कल्याण पावेगी इसभांति मैत्रेयीसे उपदेश पा सीमंतिनी अपने स्थानमें आ शिवपार्बती का भक्ति से पूजन औ सोमबार का ब्रत नियमसे करनेलगी इसी अवसर में चित्रबर्मा राजा अपनी कन्या सीमंतिनी को बरके योग्य देख राजा नलके पोते औ इन्द्रसेन के पुत्र अति रूपवान् औ प्रतापी चंद्रांगद नाम राजपुत्र को बुलाय उससे अपनी कन्या का बिवाह बड़े उत्सवसे कर्ताभया औ उस उत्सव में देश २ के राजा इकट्ठे भये इस भांति चंद्रांगद उस राजकन्यासे बिवाहकर कई महीनोंतक श्वशुरालयमेंही रहा एक दिन बर्षाऋतुमें अपने कई मित्रोंको साथले नावपर चढ़ यमुनामें बिहार करनेगया जब वहनाव मंझधार में पहुंची तो बड़ा प्रचंड

वायुचला औ यमुनामें समुद्रके से तरंग उठने लगेऔ वहनाव तरंगों की टक्करों से टूक २ होगई औ उनमें से कईतो जलमेंडूबे औ कइयों को ग्राह खागये कितनों का तो वृत्तांतही न जाना कि कहां गये नदी के दोनों तीरों पर जो चंद्रांगद की सेनाखड़ी थी उसमें हाहाकार मचगया यह वृत्तांत सुन राजा चित्रसेन भी अति बिह्वल हो यमुना तट के निकट पहुंचा औ यह बज्र पात के बरोबर समाचार सुन सब चित्रसेन राजा की रानी औ सीमंतिनी मूर्छित हो भूमि पर गिर पड़ी और भी पुरोहित मंत्री आदि शिरपीट २ बिलाप करने लगे चंद्रांगद का पिता इंद्रसेन भी यह दारुण वृत्तांत सुन रानियों समेत मूर्छित होगया औ उस देश के सब बालक वृद्ध स्त्री पुरुष हे राजपुत्र हममंद भागियों को छोड़ तू कहां गया यह कह २ छाती पीट २ रोदन करने लगे इसभांति दोनों राजा दुःखके समुद्र में पड़े तब वृद्ध २ मंत्री औ पंडितों ने चित्रसेन राजा को यथा कथंचित् आश्वासन किया औ राजधानी में आ सीमंतिनी को बड़े यत्न से धीरज धराया औ राजा चित्रसेन ने जलमें डूबे हुवे अपने जामाता का क्रिया कर्म कराया वह सीमंतिनी भी चिता परचढ़ मरना चाहतीथी परंतु उसके पिताने न माना इसहेतु बिधवा हो पिताही के घरमें रही परंतु मैत्रेयी ने जो सोमबार व्रत का उपदेश किया था उसको बिधवा होकर भी न छोड़ा इस प्रकार चौदह बर्षकी अवस्था में यह बिपत्ति सीमंतिनी परपड़ी उसी दिन से शिवजीका आराधन करते २ तीनबर्ष बीते उधर इंदसेन राजा भी पुत्र शोक से उनमत्त होगया औ सब राजशत्रुओं ने अपने आधीन कर रानियों समेत राजा इंद्रसेन को कारागार में रख दिया चंद्रांगद भी यमुना में डूब नीचे नीचे चला जाताथा कि

बहुतसी स्त्री वहां जलक्रीड़ा करती देखीं वे भी इसे देख औ इसके मनोहर रूप पर मोहित हो पाताल को ले गईं वहां जा अति रमणीय तक्षक नागके नगर में प्रवेश किया औ उस नगर में एक बड़ा भारी प्रासाद अर्थात् महल देखा कि जिस में रत्नों के खंभे औ सुन्दर मणियों से जड़े किवाड़ लग रहेहैं औ ऊंचा इतना कि मानों आकाश से बातें कर रहा है औ जिसकी सुन्दरता के आगे इंद्र का भवन भी लजाय उस दिव्य प्रासादके भीतर एक बहुत भारी लंबे चौड़े अस्थानमें कि जिस की भूमि पन्ने से छत इन्द्र नील मणियों औ भीत पद्मरागोंसे जड़ी हैं एक बहुत उत्तम औ ऊंचा चंद्र कांत मणिका सिंहासन धरा है औ उस पर दिव्य वस्त्र भूषण पहिने मुकुट मस्तक पर धारे कानों में कुण्डल धारण किये अनेक फणों करके शोभित तक्षकनाग बैठाहै औ हजारों नागसुन्दर भूषण वस्त्रपहिने जिन के फणोंपर मणि चमक रहीं हैं हाथ जोड़े चारों ओर खड़े हैं और अत्यन्त सुन्दर रूपवाली औ युवा अवस्थाकी हजारों नाग कन्याभी सेवाके अर्थ पास खड़ीहैं इसप्रकार तक्षकनाग को देख समीप जा बहुत विनय से राज पुत्र ने प्रणाम किया तक्षक भी उसको देख नाग कन्याओं से पूछने लगा कि यह कौन है औ यहां क्योंकर आया है वे बोलीं कि महाराज हम भी इस का कुल शीलनाम आदि कुछ भी नहीं जानतीं यमुना में यह हमको मिला वहां से आप के पास ले आई हैं इतना सुन तक्षक नाग ने राजपुत्र से पूछा कि तुम कौन हो किसके पुत्रहो कौन देशके हो औ यहां कहांसे आये यह तक्षक का बचन सुन राज पुत्र बोला कि महाराज भूमंडल में निषध नाम एक देश है उसमें बड़ा प्रतापी राजा नल था जिसकी दमयंती रानी थी उनका पुत्र

राजा इन्द्र सेन औ इन्द्रसेन का तनय मैं हूं सो बिवाह कर श्वशुरालय मेंही एक दिन यमुना में बिहार करने आयाथा वहां दैव की इच्छा से नाव टूट जाने के कारण जल में डूबगया औ ये नाग कन्या मुझे आपके समीप ले आईं अनेक जन्मों के पुण्य के उदय से आप के चरण का दर्शन भया आज मैं औ मेरेमाता पिता धन्य औ कृतार्थ भये कि जो मैंने आपका दर्शनपाया यह उस के भक्ति से भरे बचन सुन प्रीति से तक्षक नाग बोलेकि हे राजपुत्र मन में धीरज रख सब अच्छा होगा औ यह कह कि कौन देवता की उपासना किया करता है यह सुन राजपुत्र बोला कि महाराज सब देवताओं के गुरु जगत् के पति पार्बती के प्राण नाथ श्री महादेव जी हमारे कुल देवता हैं औ मैं भी उन्हीं का दास हूं क्योंकि जिसके रजो गुण के भाग से उत्पन्न हो ब्रह्मा जगत् को सिरजते हैं औ उसी के सत्व गुण से बिष्णु उत्पन्न हो प्रजाका पालन करते हैं तमोगुण से रुद्र उपजकर संसारका संहार करते हैं औ जो बिधाताकी बिधाता कारण का भी कारण तेजोंका भी तेज वह शिव हमारा उपासनीय देव है औ जो सबके हृदय में निवास करता है परन्तु अज्ञानियों से अतिदूर है औ अग्नि, जल, बायु, आकाश, भूमि में निवास करता है औ सबका साक्षी है तीनों लोक जिसके आधीन हैं वही सदाशिव हमारी गति है जिनके भक्त इन्द्रपद वा ब्रह्मपद मिलना भी तुच्छ समझते हैं औ कर्म के बंधनों से छुट निर्भय बिचर ते हैं औ जिनका स्मरण चण्डाल को भी पबित्र करदेता है जिनके स्वरूप को बेद पुराण सब गाते हैं जिनके मस्तक में गंगा सदा निवास करती हैं औ श्री पार्बती जिनकी धर्मपत्नी हैं जिनके तक्षक औ बासुकी दोनों कुण्डल

औ विषही जिन का कण्ठ भूषण है जिनके तीसरे नेत्र से निकला प्रचण्ड अग्नि प्रलय के समय सब संसार को भस्म करताहै वही चन्द्रशेखर शिवजी हमारे इष्टदेव हैं जिनके चरण कमलबेदके भी मस्तक पर बिराजे रहेहैं योगीजन निरन्तर समाधि में जिनका ध्यान धरते हैं औ तीनों गुणों से अलग जो सदाशिव वही हमारे नाथ हैं सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो यह राजपुत्रका बचन सुन तक्षकभी प्रसन्नहुआ औ राजपुत्र से कहनेलगा तुझे बालक अवस्था में परम शिवभक्ति है इस हेतु मैं तेरेसे बहुत प्रसन्नहूं यह मेरा अति रमणीयलोक यह रत्नमय प्रासादये सुन्दर नवयोबना नागकन्या यह कल्प वृक्षोंका उपबन इसमें अमृत भरी बापिका ये सब तेरे आधीनहैं इनका तू यथारुचि भोग कर औ यहां रहनेसे तुझे कभी भी मृत्यु आधि ब्याधि जराआदि का भय न होगा यह नाग राज का बचन सुन करजोर राज पुत्रबोला कि महाराज परमअनुग्रह आपने मुझपर किया परन्तु मेरा बिवाह अभी हुआ है मेरी स्त्री नित्य शिवपूजा में तत्पर है औ बहुत सुशीला है औ अपने माता पिता का भी एकही मैं पुत्रहूं ये सब मुझेजल में डूबाजान शोक से अवश्य प्राण त्याग करदेंगे जो कदाचित् मैं शीघ्र उनके पास पहुंच जाऊं तो अच्छा है आपयही कृपा करे कि मुझे मेरे माता पिता के समीप पहुंचादें यह राजपुत्र की प्रार्थना सुन तक्षक नाग ने सुन्दर भोजन पान से उसको प्रसन्न कर दिव्य भूषण बस्त्र आदि पहिनाय उत्तम २ सुगंध से लिप्त कर कहा कि हेराजपुत्र यह घोड़ा सब समुद्र औ सब द्वीपों में जाने वाला बहुत बेगवान् है यह तुझे देताहूं यह कह वह अश्व राजपुत्र को दिया औ बहुत से भार रत्न दिव्य बस्त्र

औ भूषणों के दिये औ चढ़ने को एक राक्षस औ सहाय के लिये एक नागकुमार भी दिया औ कहा कि जब २ तू मुझे स्मरण करेगा तबही तेरे समीप पहुंचूंगा यह कह कर राजकुमार को बड़ी प्रीति से बिदा किया चंद्रांगद भी तक्षक से बिदा हो वह भांति २ का धन राक्षस के ऊपर लाद आप उस घोड़े पर चढ़ वहां से चला औ थोड़े कालमें यमुना के जल से अपने उसी स्थान में निकला जहां डूबाथा औ नदीके तीर पर घोड़ेपर चढ़ाहुवा बिचरनेलगा इसीअवसरमें वहउसकी नवोढ़ा रानी सीमंतिनी अपनी सहेलियों को संग ले यमुना में स्नान करने आई औ देखा कि एक राजपुत्र घोड़ेपर चढ़ा एक राक्षस औ नागकुमार साथ लिये यमुना तीर पर बिहार कर रहा है जिसकी कांतिके आगे चन्द्रभी कांतिहीन दीखे जिसके शरीर का सुगंध दश योजन तक फैल रहाहै औ दिव्य वस्त्र भूषण माला आदि से शोभित है उसको देख सीमंतिनी हर्ष शोक मोह भय औ आश्चर्य से एक टक लगाय निहारने लगी राजपुत्र ने भी उसको देखा कि यह स्त्री कौन है जैसे कभी पहिले भी देखी होय सब भूषण इसने त्याग रक्खे हैं औ गले में कंठ सूत्र भी नहीं केश बिथुर रहे हैं आखों में अंजन नहीं औ अति शोकातुर हैं तौभी मेरेमनको खैंचेलेतीहै यह मनमेंबिचार घोड़े से उतर उसके पासजाय पूछने लगा कि हे कल्याणि तू किसकी पुत्रीहै औ तेरा नाम क्याहै औ इस लावण्य के समुद्र तेरे देह को कौन दुःख होरहा है जिस से इतनी दुर्बल है यह उसका स्नेह से भरा बचन सुन राजपुत्री तो लज्जा से कुछ न कह सकी परंतु उसकी एक सखी बोली कि हेमहात्मा यह चित्रवर्म राजा कीतो कन्याहै औ इंद्रसेन राजा के पुत्रचंद्रांगद

कीरानीहै दैवयोग से इसका पति इसी नदीमें डूबगया तबसे यह बिधवा होगई औ इसी शोकसे दिन रात सूखी जातीहै औ इस परयह संकट पड़े तीन बर्ष भये आज सोमबारहै इसहेतु यमुना में स्नान करने आईहै इसका श्वशुर राजा इंद्र सेन भी पुत्रके शोकसे बिक्षिप्त होगया तबसे राज्यतो शत्रुओं ने लिया औ उसको रानियों समेत कारागार में रख दिया है यह राजकुमारी भी सोमबार को परम भक्ति से शिव पार्बती का पूजन करती है इतनी कथा सुनाय सूतजी बोले कि हे ऋषीश्वरोउस राजकुमार को देख सीमंतिनी से भी चुप न रहागया औकहने लगी कि तुम देवकुमार से कौनहौ औ येदो आपके संग कौन हैं औ मेरा वृत्तांत इतना करुणाकर क्यों पूछते हौ क्या मुझे आप पहिले से जानते हौ मैंने तो आपको अवश्य पहिले कहीं देखाहै औ आपकेदर्शन से मेरा हृदय कुछसुखी हुवा है इसलिये आप सत्य कहें कि कौन हैं इतना कह राजपुत्री मोतियों से अश्रु बिंदुओं का हार स्तनों पर पहिराती भई ऊंचेस्वर से रोनेलगी औ रोते २ मूर्छित हो भूमिपर गिर पड़ी औ सखी सबब्याकुल हो कोईतो कदली दलसे पवन करने लगी कोई शीतल जल लाकर ऊपर छिड़कतीथी इसभांति किसी रीतिसे राजपुत्री की मूर्छा दूर करी चंद्रांगदभी यह अवस्था देखआप भी शोकसे कुछ कालतक चुपरहा पीछे किसीभांति सीमंतिनी को मीठे २ बचनों से आश्वासन कर कहने लगा कि हेराजपुत्रि हम सिद्ध नामक देवता हैं औ सब लोकोंमें बिचरते हैं इतना कह राजपुत्री के कान में कहाकि तेरा भर्ता हमने कहीं देखाहै औ तेरे आचरणसे बहुत प्रसन्नहै अब दो तीन दिनमेंही आकर तेरा सब शोकदूर करेगा में तेरे पतिका मित्रहूं औ तुझसे

यही संदेशा कहने यहां आयाहूं तू इसमें कुछ संदेह मतकरना मैं शिवजीके चरणकी शपथ खाकर कहताहूं कि तेरा प्रिय तुझे निश्चय मिलेगा तबतक यहवृत्तांततू अपने हृदयमें हीरखना और किसीसे मत कहना यह उसकाअमृत से भीमधुर बचन सुनराज पुत्री आनंदमें मग्नहो बारंबार उसकी ओर देखने लगी औ उसकी अवस्था स्वरबर्ण शरीरके लक्षण उत्तमस्वभाव औ अतिमनोहर रूप देख मन में विचारने लगी कियह मेरापतिही है क्योंकि मेरा हृदय इसको देख प्रेमसे बिह्वल होरहाहै परन्तु मेरे ऐसे भाग्य कहां कि देवलोक में गया भर्ता फिर मिले यह कोईधूर्त देवकुमार अथवा गंधर्व मुझे छलने आया है वा जो मैत्रेयी ने मुझे सोमवार व्रत का उपदेश करकहा था कि परम आपत्तिमें भी यह व्रततू मत छोड़ना औ मैनेभी आजतकनिबाहा उसीका फलहै औ मेरे जन्मसमय एक ब्राह्मणने कहा था कि दसहजार बर्षपर्यंत अपने पति के सहित संसारभोग करेगी उसका कहा सत्य है अथवा असत्य है यहभी ईश्वरही जाने पर पार्बती के प्राणनाथ श्रीशंकर प्रसन्न होंय तो यहकुछ बड़ी बातभी नहीं इसप्रकार राजपुत्री अनेक तर्क मनमें कररहीथी कि चन्द्रांगद ने फिर उसके कानमें कहा कि शोककरके पीड़ित उसकेमाता पितासे भी यह वृत्तांत हमकहनेजातेहैं औ तुम भी प्रसन्न रहो शीघ्रही पति से तेरा समागम होगा इतना कह घोड़ेपर चढ़ राक्षस औ नागकुमार को साथले अपनी राजधानी को गया वहां नगर बाहर एक उपवन में ठहर नागकुमार को संदेश दे अपने शत्रु के पास भेजा जो उनदिनोंमें वहांका राजा बनगया था वह नागकुमार भी राजसभा में जा चन्द्रांगद का संदेश कहनेलगा कि राजा इन्द्रसेन को शीघ्र छोड़दो औ राज्यउनके

समर्पण करो उसका पुत्र चन्द्रांगद जो यमुना में डूबगया था वह नागलोक में जा तक्षक नागकी सहायता पाय कुशलपूर्वक यहां आगया है इसलिये जल्दी राजसिंहासन छोड़ो नहीं तो उसके बहुत दिनके प्यासे बाण तुम्हारा रुधिर पानकरेंगे इत- सुनतेही व सब भयभीत हो उसकी आज्ञा सिर पर मान राज्य छोड़ अलग भये औ नगर के लोगोंने भी उपवन में चन्द्रांगद को देख राजा इन्द्रसेन को जासुनाया औ बहुतसा पारितोषक पाया राजा को भी नष्ट हुये पुत्र का फिर आगमन सुन जो आनन्द भया उस को वही बर्णन कर सकता है चन्द्रांगद का आनासुन सब मंत्री पुरोहित प्रतीहार औ नगरके बड़े २ साहू- कारभी वहां आय इकट्ठेहुवे औ बड़े उत्सव से राजपुत्रको अपने महल में लाये चन्द्रांगद भी दौड़कर माता पिताके चरणपर गिरा परंतु उनकी आंखें आंसुवों से भरआईं औ उसको नदेख सके औ दोनों हाथोंसे अपने चरणों मेसे उठाय राजाइन्द्रसेन तथा उसकी रानी चन्द्रांगद को कण्ठ से लगाय रोदन करने लगी किसीप्रकार मंत्रियोंके उपदेश से बहुत देरमें चन्द्रांगद को आलिंगन से छोड़ रोदनसे निवृत्त भये तब क्रमसे राजाकी और भी रानी मंत्री पुरोहित आदि चंद्रांगद को आलिंगन कर अति मुदित भये औ चंद्रांगदने भी उनका यथा योग्य सत्कार किया औ उनके बीच बैठ माता पिता के आगे अपना सब वृ- त्तांत कह सुनाया औ तक्षक से मित्रता का समाचार भी बर्णन किया औ वह घोड़ा तथा रत्न आदि बहुत सा धन जो तक्षक ने दिया था पिता के आगे ला रक्खा राजाभी पुत्रका वृत्तांत सुन आश्चर्य औ आनन्द में मग्न भया यह सब सीमंतिनी के व्रतका प्रभाव औ शिवजीका अनुग्रह जान राजा चित्रवर्मा के

पास उसीसमय यह शुभ समाचार कहने को दूत भेजताभया चित्रबर्मा राजा भी यह आनन्द की बात सुन दूतोंको बहुतसा धन देताभया औ शीघ्रही अपनी पुत्री सीमंतिनी को बुलाय कण्ठ से लगालिया औ उसका बिधवा बेष दूरकराय उत्तम २ बस्त्र भूषण पहिनाय सब राज्य के नगर औ ग्रामो में बड़ाउत्सव कराताभया सबलोग इस वृत्तांत को सुन सीमंतिनी के आचरणकी अतिप्रशंसा करनेलगे राजा चित्रबर्माभी चन्द्रांगदको अपनी राजधानी में बुलाय बड़ी धूमधाम से उसके साथ फिर सीमंतिनी का बिबाह करताभया औ चन्द्रांगदभी तक्षक नागके दिये उत्तम २ रत्नोंसे जो इसलोक में अति दुर्लभहैं अपनी प्रिया को भूषित करता भया औ वह अति सुगन्धित तक्षक का दिया अंगराग भी उसके लगाया कि जिसकी सुगन्धि दशयोजनतक फैलती थी औ कल्पवृक्षोंके पुष्पोंकी माला जो कभी न कुम्हलाय राजपुत्री को पहिनाय बहुत हर्षित होता भया इसप्रकार फिर अपनी प्रियाको पाय चंद्रांगद अपनी राजधानीमेंआया वहांउसके माता पिता बंधूसमेत पुत्रको आये देख अपनेको कृतार्थ मानते भये औ अच्छे मुहूर्त में राज्य पुत्रको दे हिमालय पर्वतमें जाय शिवजीका आराधनकर कैलासको गये चन्द्रांगद भी राज्यपाय अपनी प्राण प्यारी सीमंतिनी के सहित संसारके सुख भोगने लगा औ धर्मसे राज्य करनेलगा इस प्रकार राज्यकरते २दश हजार बर्ष बिताये सीमंतिनी भी नित्य भक्तिसे शिव पूजाकरती थी उनके आठ पुत्र तथ एक कन्या उत्पन्न भई अंतमें पुत्र को राज्यदे शिवलोकको प्राभये सूत जी कहते हैं कि यह थोड़ासा सोमवार व्रतका प्रभाव हमने कहा अब और भी कहते हैं॥

नववां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि विदर्भ देश में वेद शास्त्रका जाननेवाला वेदमित्रनाम एक ब्राह्मण होताभया औ उसका मित्र उसी देश में रहनेवाला सारस्वत नाम एक और ब्राह्मणथा ये दोनों परम स्नेहसे अपना कालक्षेप करतेथे कुछ कालमें वेदमित्रके तो सुमेधानाम पुत्र भया औ सारस्वतके सोमवान् नाम भया इन दोनों के पुत्र तुल्य अवस्था तुल्य बेष औ तुल्य संस्कार औ बरोबर विद्यावाले औ बड़े बुद्धिमान्थे थोड़ीसी अवस्था मेंही वेद वेद के अंग, न्याय, शास्त्र, मीमांसा, पुराण, इतिहास आदिकों में निपुण होगये औअपने अपने माता पिताको अति हर्ष देतेभये जब उनकी अवस्था सोलह बर्ष की भई तब उनके माता पिता कहनेलगे कि हे पुत्रो अब तुम युवा अवस्था में प्राप्तभये औ बिवाहका समय आया इस हेतु बिदर्भदेशके राजाके पासजाय अपनी विद्यासे उसको रिझाय बहुत साधनपाय अपने घरआय बिवाह करो यह माता पिताकी आज्ञा पाय दोनों बिदर्भराज के पासगये औ वहां राजाको अपने गुणोंसे प्रसन्नकर अपना मनोरथ कहतेभये राजा उनका प्रयोजन सुनहंसकर चुपरहा औ थोड़े कालमें कहनेलगा कि निषध देशके राजाकी सीमंतिनी नाम रानी सोमवार के दिन शिवपार्बती की पूजाकर सपत्नीक ब्राह्मणों का पूजतीहै औ बहुतसा धन देती है इसलिये तुम दोनों में से एकतो पत्नी औ एक पति बन जाओ औ वहां जा मन माना धन पाओ औ फिर मेरे समीप आओ यह राजा का बचन सुन ब्राह्मण कुमार बोले कि महाराज यह साहस करते हमाराहृदयकांपताहै क्योंकि देवता, गुरु, माता, पिता, राजा इनके

पास छल करनेसे कुल समेत वह पुरुष नाशकोप्राप्त होजाताहै औ राजाके समीप छलसे पुरुष प्रवेश करे औ कदा चित्वह छल खुलजायतो बड़ाही अनर्थहोय औ पहिले जो शास्त्र,शील आचार,सत्य,संतोष आदिसे कीर्ति संपादन की है वहसब नष्ट होजाय पाप,निंदा,भय औ बैरये चारफल तोछल करने सेअवश्यही मिलतेहैं ३ सलिये हमदोनों प्रतिष्ठित कुलमे उत्पन्नहो औ विद्या पढ़यह छल नहीं करसकते यह उनका कहना सुन राजा बोला किदेवता गुरु राजा औ माता पिताकी आज्ञा भंग करनेसे भी बड़ा अनर्थ होताहै येजो आज्ञा भली वा बुरी देवें वह बिना बिचारे करनी चाहिये हम राजाहैं औ तुमहमारी प्रजा हो हमारी आज्ञा भंग करनेसे तुमको दंड मिलेगा यह राजाका क्रूर बचन सुन उन ब्राह्मण पुत्रोंने भयसे उसकी आज्ञा मानलीतब सारस्वत के पुत्र को राजानें सुन्दर वस्त्र भूषण पहिनाय आखों में अंजन अंजाय बहुत सुरूपा औ युवती स्त्रीका बेष बनादिया किजिसके देखनेवाले मोहित होजातेथे औ दूसरे ब्राह्मण कुमार कोउसका पति बनाय निषध देशको भेजा वेभी दोनों डरतेहुये किसी भांति निषध देशमें पहुंच राजभवनमें गये औ सीमंतिनी को अपना आगमन बिदित किया सीमंतिनीने भी सोमवार के दिन उनको बुलाय औ पूजाके अर्थ दोनोंको आसन पर बैठाया औ उन का कपट जान कुछ हंस दोनों को शिवपार्बती समझ पूजा करनेलगी दोनोमें शिवपार्बती का आवाहन कर गंध अक्षत पुष्प,माला,धूपदीप,वस्त्र,भूषण आदिसे उनकी पूजाकर बहुत उत्तम सुवर्ण के थालोंमें नाना प्रकार के भोजन पायस आदि औ भांति २ के व्यंजन उनके आगे धरे औ अति शीतल तथा सुगंधित जलभी पानकरने को दिया वे ब्राह्मण तो भोजन करने

लगे औ सीमंतिनी बडी भक्तिसे पंखाले धीरे २ पवन करनेलगी जबवेतृप्तिपूर्वक भोजन करचुके तबआचमन कराय हाथ धुलाय तांबूलदे, धेनु, सुवर्ण, रत्न, वस्त्र, भूषण आदि बहुतसी सामग्री दे बार बार नमस्कार औ प्रदक्षिणा कर उनको बिदा करती भई वे दोनों ब्राह्मण कुमार जिनमें एककोतो पार्वती औ दूसरे को शिवमानकर सीमंतिनी ने पूजाथा वहां से चले परंतु जिस को पार्वती मानकर पूजा वह अपने पुरुषपने को भूल स्त्री होगया औ हावभाव करने लगा अपने मित्रसे बोला कितू मेरा पति औ मैं तेरी पत्नीहूं कामदेव मुझे अति सता रहाहै तू परम सुन्दर औ तरुण है औ आगे फूलेहुवे वृक्ष औ लताओं से भरा हुवा बन देखपड़ताहै जिसमें भांति २ के पक्षी मधुर शब्दों से मनको लुभातेहैं इस बनमें तेरेसंग विहार कियाचाहतीहूं यह उसका बचन हंसी समझकर उसने कुछ उत्तरनदिया औ आगे को चला तबतो वह क्रोधकर बोली कि मुझे छोड़ कर जाता है मैंतो कामदेव के बाणोंसे विंधीहुई एकडग भी नहीं चल सक्ती उसनेभी उसका यह अपूर्व बचन सुन पिछलीओर निहारा तो देखाकि अतिरूपवती एकनारी जिसका चन्द्रसा मुख औ कमल से लोचन अति ऊंचे औ कठोर कुच अति कोमल अंग है चली आतीहै उसने भी मनमें बिचारा कि हैतो वही मेरा मित्र परंतु अबतो उत्तम स्त्री बनगया है यहबिचार बोला कि हेमित्र आज तुझे क्या हुवा यह आश्चर्य की बात क्या कहताहै तू वेद औ शास्त्रके जाननेवाला, ब्रह्मचारी, सारस्वत ब्राह्मणका पुत्रहो यह क्याकहताहै यहसुन वहबोली कि मैं पुरुष नहींहूं स्त्री होगयीहूं औ सोमवती मेरानामहै जो तुझको कुछ संदेह होय तो मेरे अंगदेखलो औ मैं आपकी प्रिया आपमेरे प्राणप्यारेहैं यह

सुन चकित हो उसका वस्त्र दूरकर ब्राह्मण कुमार ने एकांत में देखा तो ठीकही उसके सबअंग नारीके से बनगयेथे तबतो इस का भी चित कामके बश हो कुछ चंचल हुवा फिर मनको रोंक चुपरहा औ कुछ न कहा परंतु उस स्त्री से कब रहा जाय वह बोली कि हे प्रिय अबतो तुह्मारा संदेह दूर होगया फिर क्या बिकल्प कर रहेहो आओ इस मनोहर बनमें चलें औ मनमाना बिहार कर इस तरुण अवस्था का दोनों फल पावें यह उस-का बचन सुन सुमेधा बोला कि हे मित्र यह तू मत्त की भांति अनुचित बात बारबार क्यों कहता है क्या तुझे शास्त्र पढ़ने का यही फल भया तू अपने को आपही बिचार कि मैं कौनहूं हमने माता पिताकी आज्ञा बिना उस धूर्त्तराजा के कहनेसे जो अयोग्य कर्म किया उसीका यह फलहै क्योंकि अनुचितकाम सदा दुख देताहै जो पुरुष अच्छे मार्गको छोड़ जंगल की राह चलेंगे वे अवश्य कांटोंसे बिंधेंगे अथवा सिंह ब्याघ्र आदि दुष्ट जीवोंके हाथ से मारे जायंगे तूभी अपने मन को धीरजदे चुपचाप घर को चला आ परमेश्वर अनुग्रह कर तेरे इस स्त्री पनेको दूर करेगा औ जो कदाचित् स्त्रीही तू रहातो तेरा पिता मुझे बिवाह देगा तब दोनों आनंद से संसार का सुख देखेंगे इस भांति सुमेधाने बहुत सम-झाया परंतु उसने तो बलात्कार से सुमेधा को आलिंगन कर लिया सुमेधा भी किसी भांति अपने को बचाता हुआ उसको साथ लिये घर पहुंचा औ वहां आतेही सब वृत्तांत माता पिता से कह सुनाया औ सोमवान् के पिता सारस्वत नेभी सुना सुनतेही दोनों ब्राह्मण अति क्रोध कर अपने पुत्रों को साथ ले बिदर्भ राज के पास गये औ वहां जा सारस्वत कहने लगा किहे राजा तेरी दुष्टता से मेरे पुत्र की यह गति भई औ मेरे एकही पुत्र था आज मेरे पितरबंश

छेद होने से निराश भये कहां तो शिखा, यज्ञोपवीत, मृगचर्म दंड, कमंडलु धारणकिये ब्रह्मचर्य से वेदका अध्ययन करता रहता था कहां यह अति चपला अबला बन गया वह स्नान, संध्या बंदन, गायत्री का जप सब छोड़इस गति को प्राप्त भया यह सब तेराकिया अनर्थहै राजा यह उस ब्राह्मणका बचन सुनसीमंतिनी का प्रभाव देख अति चकित औ भीत भया औ उसीसमय बड़ेबड़े ऋषि औ विद्वानोंको बुलाय प्रार्थनाकरने लगाकिकिसीभांति यह ब्राह्मण पुत्र फिर भी अपना स्वरूप पाय पुरुष होजावे यहराजा की प्रार्थना सुन ऋषि बोलेकि राजा शिवजीके औ पार्वती जीके भक्तों का संकल्प कौन अन्यथा कर सकता है इससेइसका कुछ उपायनहीं यह कहवे तो अलग भये तब राजाने भरद्वाजमुनिके शरणमें जायसब समाचारकहा भरद्वाजमुनि बोलेकिपार्बती जीके आराधनसे यह क्लेश निवृत्त होसकता है वही करना चाहिये यह बिचार कर सबके सब भगवती के एक स्थानमें गये औ वहां भरद्वाज मुनिसे उपदेश पायदोनों ब्राह्मण कुमार औ राजा पार्बती जीका आराधन करने लगे। इसप्रकार निराहार तीनदिन जप पूजा स्तोत्र पाठ आदि निरंतर करनेसे पार्बतीजी प्रसन्नहो प्रकट भईं औराजासे कहने लगीं कि बर मांग राजा बोला कि माता यही बर पाऊं कि यह ब्राह्मण का पुत्र फिर पुरुष हो जाय। यह सुन पार्बती जीने कहाकि राजा मेरे भक्तोंका किया हुवा कर्म कभी नहीं बदल सक्ता इसलिये यहतो अब स्त्रीही रहेगा। राजाने कहा कि जगन्माता जो आप कहैं सो ठीकहै परंतु यह ब्राह्मण मेरे अपराध से पुत्र हीन होगयाहै अब यह क्योंकर सुखी होय। पार्बती जीने कहा कि इस ब्राह्मण के तो मेरे बरसे बिद्या औ बिनय करके युक्तमाता पिताका भक्त धर्ममें

अनुरक्त दीर्घायु और पुत्र होजायगा औ यह सोमवती इस सुमेधाकी पत्नीहो संसार सुखका भोग करे इतनाकह पार्वतीजी तो अंतर्ध्यान भई औवे भी सब अपने२ स्थानको गये थोड़ेसेदिनोंमेंही सारस्वतके प्रथम पुत्रसे भी उत्तम और पुत्र उत्पन्न भया औ वह सोमवती उसने सुमेधा को ब्याहदी। वेभी दोनों परम आनन्द को प्राप्तहो भांति२क सुख भोग करने लगे। इतनी कथा सुनाय सूतजी बोले कि हे ऋषीश्वरो यह शिव भक्त राना सीमंतिनीका प्रभाव औ शिवजी का थोड़ासा माहात्म्य बर्णन किया अब औरभी सुननेसे मंगल देने हारा शिव भक्तों का प्रभाव संक्षेप से बर्णन करतेहैं॥

दशवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो शिव जी का प्रभाव शिव जीका माहात्म्य शिवजीका चरित्र सब विचित्रहै। औ उनकेभक्तों का भी चरित्र अद्भुत है एक शिव भक्तकी कथा भुक्ति मुक्ति देने हारी हम कहतेहैं अवंति देशमें एकसन्दर नामक ब्राह्मण हुवा वह केवल जातिहीका ब्राह्मणथा परंतु विषयोंमें आसक्त दिनरातधनके संग्रहमेंतत्पर, स्नान संध्या से हीन, मनमलीन, कुलटा स्त्रियों का भक्त पापकरने में आसक्त, अजामिल केतुल्य कुमार्गीथा (अजामिलनाम एककान्यकुब्जदेशका अतिदुराचारी ब्राह्मणथाजिसकी भागवत आदि कई ग्रंथों में कथा है) वह दिन रात पिंगला नाम एक वेश्या के घर में पड़ा रहता वहीं खाता पीता औ जब इच्छा होती तो उस से संग करता इसभांति काल बीतते२ पूर्व पुण्य के उदय से एक दिन परम शिव भक्त ऋषभ योगीश्वर वहांआये वे वेश्या औ ब्राह्मण भी दोनों उन का दर्शन पाय अति

हर्षितभये औ सुन्दर चौकी बिछाय उसको उत्तम वस्त्र से ढक उसके ऊपर उनको बैठाय उनके चरण धोय चरणोदक अपने मस्तकपर धारण किया फिर सुन्दर गंध अक्षत पुष्पआदि उपचारों से भक्ति करके उनकी पूजा कर परम प्रीति से भोजन कराते भये वेभीजब भोजन कर आचमन ले हाथ धोय चुके तो सुन्दर पलंग बिछाय उसपर उनको बैठाया औतांबूलदे उन क चरण दबाने लगे इस भांति दैव योगसे उस शिव योगी की सेवा दोनों ने भक्तिसे करी वह योगी भी एक रात्रि वहां निवास कर प्रभात होतेही चले गये कुछ काल में वह ब्राह्मण औवेश्या अपना २ आयुष भोग कर काल वश भये वह ब्राह्मण दशार्ण देश के राजा बज्रबाहुकी बड़ी रानीके गर्भ में पड़ा इसी अवसर में राजाकी और रानी बडी रानीको सग्रर्भादेख मनमें अति ईर्षा कर उसको बिष देती गई परंतु वह बिषदेनेपर भी दैव को इच्छा कि नामरी औअति दुःख भोगते २एक पुत्र उस के उत्पन्नभया वहराजपुत्रभी गर्भ मेंही बिषका संसर्ग होजाने सेरोगी हुवा औ दिन रात रोता रहता औ दोनों मातापुत्रोंके सब देह मेंउस बिषके दोष से व्रण होगये कि जोअनेक सद्वैद्यों की उत्तम२औषधियोंसे भीन मिटे औ जिनकी पीड़ा से वे दोनों दिन रात पुकारते रहते औ राजाकोउनके दुःखसे निद्रा न आतीइस भांति अनेक उपाय करते २ कई महीने बीते परंतु कुछ व्यथा उनकी नमिटी तब राजानेबिचारकिया कि इनकाआरोग्य होना तो अत्यंत कठिन है परंतु मृत्यु भी इनकानही होता औ मुझको इनके क्रंदनसे दिनरातनिद्रा नहींआती इसलिये इनको यहांसे निकालदेना चाहिये यहबिचार अपने सारथी को बुलाय सबबात समझाय रानी औ राजपुत्रको रथमें बैठाय बनको भेजता भया

वह सूत भी एक निर्जन वनमें जाय उन दोनों को रथ से उतार राजधानी को लौट आया वह रानी भी क्षुधातृपासेपीड़ित उस अपने बालक को उठाय गिरतीपड़ती औ अपने भाग्यकीनिन्दा करती वहां से चली कहीं पैरों में कांटे लगते हैं कहीं व्याघ्र खाने कोही पीछे दौड़ते हैं इस भांति अनेक कष्ट पाती बन में रहने हारे भूत,प्रेत,वेताल, ब्रह्मरासक्ष आदिके भयसे व्याकुल उसघोर बनमें भटकते२ एक नगर का सा मार्ग देखती भईऔ उसी राह चली जाते२ एक बैश्य का बहुत उत्तम औ अच्छे २ स्त्री पुरुषोंसे भरानगर मिला उसनगरकास्वामी अति धनवान् पद्माकर नाम वैश्य था उस वैश्य की एक दासी रानी को दूरसे देख उसके समीप जाती भई औ उससे सब उसका वृत्तांत पूछ उसका दुःख देख आपभी दुःखी हुई औ उसको संग ले अपने स्वामी के पास ले आई वह बैश्य भी उसका सब वृत्तांत सुन बहुत दुःख पाय बार२ शोक करताभया औ अपने घरकेसमीप एक उत्तम स्थान में उनको रख भोजन बस्त्र आदि सब दे कर माता के तुल्य उसकी सेवा करने लगा परंतु वे शरीर के व्रण वहां भी कुछ अच्छे न भये औ उन व्रणों की व्यथा सेही थोड़े दिनों मे वह बालक मृत्यु बश भया अपने बालक को मरे देख रानी शोक से मूर्छित होभूमि पर गिरपड़ी औ कुछ काल में जब मूर्छा खुली तो शिर पीट२ बिलाप करने लगीवह बैश्य औउस कीस्त्रियांने भी अनेकप्रकार उसको समझाया परंतु उसका शोक न दूर भया अति रोदन करती थी इसी अवसर में जिनका पहिले वर्णन होचुका है शिवयोगी ऋषभनाम वहांआये उनकी बैश्यों के स्वामी ने बड़ी भक्तिसे पूजा की वे भी वहां बैश्य के संग रानी के पास आये औ उसको बिलाप करते देख करुणा

से उपदेश करने लगे कि हे पुत्रि तू मूढ़ों की भांति क्योंरोदन करतीहै कौन उत्पन्न होताहै औकौनमरता है वहजीवतो नित्य बनाही रहता है औ शरीर कभी उपजता है कभी जलता कभी गलता है इसके नाश होने से बुद्धिमान् शोक नहीं करते जिन देवताओं की कल्पभर आयुपहै वे भी अंत्यमें देह त्याग करतेहैं अनेकरोगों से पीड़ित मनुष्य देह की तो क्याकथाहै अव्यक्त से उत्पन्नहोताहैऔ अव्यक्तमेंहीअंतमें लीनहोजाताहैबीचमेंथोड़ेसे दिनव्यक्त होजाताहै जलबुद्बुद केतुल्य यह मनुष्यशरीरहै जिस दिन माता के गर्भ में पड़ता है उसी दिन मृत्यु उस का नियत किया जाता है फिर परमेश्वर की इच्छा से वह कल्प भर जीता रहे चाहे उसी दिन मरजाय हे राजपुत्रि कई गर्भ में ही मृत्यु पाते हैं कोई जन्मतेही कोई युवा अवस्थामेंमरते हैं औ वृद्ध हो कर कई मरते हैं अपने पूर्व कर्मों के अनुसार सुखदुख भोगएक दिन सब का अंत होता है जो सुख, दुख, पुण्य, पाप, विद्या धन, आयु मनुष्य के ललाट में लिखा है उस से न्यून वा अधिक नहीं पासक्ता तेरे अनेक जन्म बीत गये औ कई माता, पिता पति,पुत्र,जन्म २ मेंहोचुके किस किसका शोक करेगी जो किसी उपाय से मृत्यु निवारण होसक्ता तो बड़े २ प्रतापी राजा औ अति प्रबल तप करने हारे ऋषीश्वर आज तक बनेरहते मृत्यु बश न होते इससे तप, विद्या, बुद्धि, मंत्र, औषधी, रसायन आदि कोई उपाय मृत्यु दूर करने का नहीं यह निश्चय होता है एक की आज मृत्यु भई दूसरे की कलहोगी किस किसका शोककरें मनुष्यों के मस्तक पर मृत्युखड़ा है फिर क्योंकर संसार के सुख अच्छे लगें कहीं व्याघ्र के आगे बकरी घास चर सक्ती है इस लिये जो तू जन्ममृत्यु के भय से छुटना चाहती है तो

इस झूठे पुत्र शोक को छोड़ शिव जी का शरण ले तब तक मृत्यु रोग, जन्म, जरा आदि का भय है जब तक जीव श्री शिवजी के चरण शरण नहीं होता इस संसार के अनेक कष्ट भोगते २ जब मन बिरक्त होय तब शिव जीका आश्रय लेनाही उचितहै शिव ध्यान रूप अमृत के पान करने से फिर संसार के बिषयों मे तृष्णानहीं होती इस लिये हे कल्याणि सब ओर से अपना चित्त खैंचकर शिवके चरणोंमें लगा जिस से फिर कभी ऐसा दुःख न होय यह शिव योगीका उपदेश सुन रानी बोली कि महाराज बंधुओंने मुझे त्याग दिया महा रोग करके मैं अति पीडित पुत्र मेरा मरगया अब मृत्युके बिना मुझे सुखनहीं इस हेतुयही चाहती हूं कि इस बालकको गोद मेंले अग्निमें प्रवेशकरूं औ इस कालमें आप का दर्शनपायकृतार्थभई इतनी कथा शौनकआदि ऋषियों को सुनाय सूतजी बोलेकि हे ऋषीश्वरो यह रानीका बचन सुन परम दयालु शिवयोगी हाथ में भस्म ले शिव मंत्र से अभिमंत्रण कर उस बालक के मुख में देतेभये वह बालक भी भस्म के मुख में पड़ने सेही आंख खोल माताका स्तन पान करनेके अर्थ रोने लगा उसको रोतेसुन सबनगर के लोग आश्चर्यमानते भये औ अति प्रसन्न हो सब वहां इकट्ठे होगये रानी भी आनन्द से बिह्वल हो अपने पुत्रको उठा छातीसे लगातीभई औ उस भस्मके स्पर्शसे दोनों के शरीर देवताओं कैसे औ सब बिष के व्रण दूरहो अति कांति युक्त होगये तबतो रानी को इन्द्रपद मिलने से भी अधिक सुख हुआ औ प्रेमसे ऋषभयोगी के चरणों पर गिरी योगी भी उनको अपने चरणोंपरसे उठाय कहनेलगे कि हे पुत्रि मेरे भस्म के प्रभाव से जबतक तू जीवेगी वृद्ध होगी औ यह तेरा पुत्र भद्रायु इस नाम से प्रसिद्ध हो

अपना राज्य पावेगा औ जबतक यह तेरापुत्र विद्यापढ़े तबतक इसीवैश्यके घर में रहो सूतजी कहते हैं कि इसप्रकार ऋषभ योगी उस राजपुत्र को जिवाय दोनों को रोग से छुड़ाय अपने इष्टदेश को जातेभये ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

सूतजी कहतेहैं कि पिंगलानाम बेश्या जो हमने पहिले बर्णन करीथी शिवयोगी की पूजा के प्रभाव से चन्द्रांगद राजा की सीमंतिनी रानी के गर्भ में पड़ी औ थोड़े दिनों में उत्पन्न भई राजा चन्द्रांगदने उसके जन्म का बड़ा उत्सवकर उसका नाम कीर्तिमालिनी रक्खा औ वह अति रूपवतीकन्या पिता के घरमें प्रतिदिन बढ़नेलगी इधर भद्रायुभी ज्येष्ठके सूर्यकीभांति अति तेजस्वी दिन २ बढ़नेलगा उसवैश्यका एक पुत्र सुनयनाम राजपुत्र का मित्रभया वेदोनों मित्रबड़ी प्रीति से बालक्रीड़ा कियाकरते वह वैश्यभी उत्तम ब्राह्मणों से उस राजपुत्र के औ अपने पुत्रके सब संस्कार समय २ पर कराता गया औ जब उनदोनों का यज्ञोपवीत हुआ तब दोनों गुरुके घरजायऐसा बिद्या अभ्यास करनेलगे कि थोड़ेही दिनों में सब बिद्याओंके पारगामी हुवे जब राजपुत्र सोलहवर्षका भयातोएक दिन विचरते२ ऋषभयोगी वहां आनिकले वे रानी औ राज पुत्र दोनों उनको देख चरणों पर प्रणाम कर उनको आसनपर बैठाय भक्ति से पूजा करते भये वेभी राजपुत्रको तरुण औ सब बिद्याओं में निपुण देख बहुत प्रसन्न भये औ कहने लगे कि हे राजकुमार भली भांति गुरूकी सेवा कर तैंने बिद्या पढ़ी कि नहीं औ हमको पहिचानता है कि नहीं यह शिवयोगीका बचन

सुन रानी ने अपने पुत्रको फिर उनके चरणों पर गेरा औ कहने लगी कि महाराज यह आपकाही बालक है औ इसके प्राण देने हारे आप पिता हैं औ आपही गुरू हैं अब इसको अपना शिष्य कर सन्मार्गका उपदेश कीजिये यह रानी का बचन सुन औ राजपुत्र को भी अति बिनय युक्त औ उपदेशका अधिकारी देख ऋषभ योगी धर्म का उपदेश करने लगे कि हे पुत्र श्रुति स्मृति पुराण आदिकोंमें जो सनातन धर्म प्रति पादन किया है उसका ही सेवन अपने वर्ण आश्रम के अनुकूल सदा करना चाहिये सदा सत्पुरुषों के मार्ग पर चलो औ भला काम करो कभी देव औ देवज्ञों की अवज्ञा मत करो देवता, ब्राह्मण, गुरू औ गौ इनमें सदा भक्ति रक्खो औ अतिथि चाहे चंडाल भी हो उसका भली भांति सत्कार करो प्राण संकट में भी सत्य बोलना मत छोड़ो कहीं जो असत्य बोलने सेही गौ औ ब्राह्मणों की रक्षा होती होय तो असत्य बोलना भी कुछ दोष नहीं पराया धन पराई स्त्री देवता औ ब्राह्मण की वस्तु में कभी इच्छा मत करो भली कथा भला आचार भलोंका संसर्ग औ धर्मका संग्रह इनमें सदा तृष्ना रक्खो स्नान, जप, होम, वेदपाठ, तर्पण, गौ, ब्राह्मण, देवता औ अभ्यागत की पूजा में कभी आलस्य मत करो क्रोध, द्वेष, भय शाठ्य पिशुनता, झूठाआग्रह, कुटिलता, दंभ उद्वेग, वृथा हिंसा, निष्कारण बैर, वृथाआलाप, पराई निन्दा आदि बुरे कामों से सदा बचते रहो औ मृगया द्यूत स्त्री आदिमें अति आसक्त मत हो सुखी पुरुषोंसे मैत्री औ दुखियों पर दया पुण्यात्माओं में भक्ति औ दुराचारी पुरुषोंमें उदासीनता रक्खो अति भोजन अति क्रोध अतिनिद्रा अति परिश्रम अति संभाषण अति क्रीड़ा आदि कभी मत करो अति विद्या अति श्रद्धा अति

पुण्य अति स्मृति अति उत्साह अति धैर्य औ अति ख्याति आदिका सदा यत्न से साधन करो अपनी स्त्रियों में आसक्त हो अपने शत्रुओं पर क्रोध करो पुण्य के संग्रह में लोभ करो पापियों से असूया अर्थात् उनके गुणों में दोषा रोप करो पाषण्डियों से द्वेष औ सज्जनोंसे प्रीति सदा रक्खोदुर्मित्रमें दुर्बोध हो रहो पिशुनों की बात सुनने के समय बधिर बन जाओ धूर्त चंड, शठ, क्रूर, कपटी, चंचल, दुष्ट, पतित, नास्तिक, कुटिल आदि पुरुषों के संग से बचो अपनी प्रशंसा कभी मत करो दूसरे का अभिप्राय समझो कुटुम्ब, पुत्र, धन आदि में बहुत आसक्त न हो पतिव्रतास्त्री, माता, गुरु श्वशुर, औ सत्पुरुषों के बचन पर बिश्वास रक्खो अपनी रक्षा में दिन रात सावधान रहो औ अपने सेवकों काभी अधिक बिश्वास नकरो औ बिश्वास देकर किसीको मत मारो चाहे वह चोर आदि कोई हो मंत्रियों की शंका मत करो औ अपने सत्य से कभी अलग नहो अनाथ, कृपण, वृद्ध बाल, स्त्री, औ निरपराध पुरुष इन की रक्षा, धन, प्राण, बुद्धि बल आदि से जिस प्रकार हो सके करो औ शरणागत शत्रु को भी मतमारो चाहे वह बधके योग्य भी हो औ याचक को अपना शिर तक देनेमें भी बिमुख मत हो चाहे वह उत्तम पुरुष होचाहे नीच सब प्रकार से कीर्ति का संपादन करो क्योंकि पंडित औ राजाओं का कीर्तिही भूषण है कीर्ति से लक्ष्मी होती है कीर्तिसे पुण्य बढ़ता है औ कीर्ति सेही लोक में शोभित होता है जैसे चंद्रिका से चन्द्र, हाथी, घोड़े, सुवर्णऔर रत्नों केढेर पहाड़ सेभी ऊंचे जो इन के ग्रहण से कुछ अकीर्ति होती होय तो तृण की भांति इन को त्यागदो माता पिता गुरुका कोप धनकाव्यय औ पुत्रों का तथा ब्राह्मणों का अपराध सदासहाकरोऔजिसप्रकार

ब्राह्मण प्रसन्न होयवह सदा किया करो क्योंकि संकट में मग्न राजा का उद्धार ब्राह्मणही कर सकतेहैं जिसकर्म से आयु, यश बल, सुख, धन, पुण्य औ प्रजाकी वृद्धिहोवही करो देश, काल औ अपनी शक्ति विचार कर औ कार्य अकार्य देखकर सब काम करो चौर, दुष्ट औ शत्रुओं के बिना किसी को बाधा मत करो स्नान, जप, होम, देव औ पितरों के कर्म में जल्दी मत करो औ निद्रा तथा भोजन शीघ्र करो चतुराई से भरा सरल सत्य सुनने वालोंके मन को हरने हाराथोड़े अक्षर औ बहुत अर्थकरके युक्त बचन सदा बोलो शत्रु औ विपत्ति का कभी भय मत करो केवल ब्राह्मण गुरु औ पाप इनसे डरोज्ञा त, बंधु, मित्र, पुत्रस्त्री आदिमें सम दृष्टिसेवर्तो औ भोजन की पंक्तिमें भेद मतहोनेदो सत्पुरुषों के उपदेश पुण्यकथा विद्याकी गोष्ठी आदि में कभी विमुख मतहो रुचिसे सुनो पवित्र उत्तम जलसे युक्त ब्राह्मणोंसे भरेहुवे प्रसिद्ध औ कल्याण देनेहारे देशमें सदा निवास करो कुलटा वेश्या कामी औ नीच जिस देशमें बहुत हों औ जहांजल आदि अच्छा नहो उस निंदित देशमें कभी मतबसो तीनलोक के स्वामी श्रीमहेश्वर के अनन्य भक्त होकर भी सब देवताओं का पूजन आदिकरो औ सब देवताओं के दिनों में उत्सव करो सदाही पवित्र चतुर, शांत, स्थिर चित्तरहो औ काम क्रोध आदि शत्रुओं को जीतो वेद के जानने वाल ब्राह्मण, नियममें स्थित संन्यासी, पुण्यवृक्ष, पुण्यतीर्थ, नदी, सर, धेनु, वृष, रत्न, पतिव्रता नारी औ अपने गृह देवताओं को सदा नमस्कार करो प्रभात समय उठ पवित्रहो आचमन कर गुरुको नमस्कार कर शिवजी का ध्यानकरो पीछे लक्ष्मी, नारायण, ब्रह्मा, गणपति, स्कंद, दुर्गा सरस्वती, इंद्रादि लोकपाल औ बड़े २ ऋषियों का स्मरण करो

औ उदय होते हुवे सूर्यभगवान्को प्रणामकरो गंध, पुष्प, तांबूल फल, शाक आदि सब वस्तु पहिले शिवजीको निवेदित कर अपने अर्थमें लाओ जोकुछ दान, जप, स्नान, हवन, स्मरण, तप आदि करो अथवा औरभी कोई लौकिक कर्मकरो सब शिवजीकोसमर्पण करदो खाते, पीते, सोते, जागते, बैठे, खड़े, देखते, सुनते, लेते देते, बिहार करते सदा शिवजीका स्मरण करो निरंतर शिवका ध्यानकर आनंद में मग्न रहो औ कंठमें रुद्राक्ष माला औ हाथों में रुद्राक्षों के कंकण ललाट में भस्मका त्रिपुण्डधारण करशिव पंचाक्षर को जपते हुवे सदा शिव के चरण कमल में रमते रहो इतना उपदेश भद्रायु के प्रतिकर ऋषभ योगीश्वर बोले कि हे पुत्र यह धर्मोपदेश हमने तुझको संक्षेप से कियाहै यही उपदेश और २ पुराणों में बिस्तार से वर्णित है अब हम तुझ को सब पुराणों में गुप्त सब पापके समूहों को नाश करनेहारा पवित्र जयको देनेवाला औ सब प्रकार की बिपति दूर करने को समर्थ शिवकवच तेरे कल्याण के निमित्त उपदेश करते हैं॥

बारहवां अध्याय॥

॥ शिव कवच ॥

श्रीगणेशायनमः॥नमःशिवाय॥ऋषभउवाच॥नमस्कृत्यमहादेवं बिश्वव्यापिनमीश्वरम् वक्ष्येशिवमयंबर्म्मसर्वरक्षाकरंनृणाम् १ शुचौदेशेसमासीनोयथावत्कल्पितासनः जितेन्द्रियोजितःप्राणश्चिन्तयेच्छिवमव्ययम् २ हृत्पुण्डरीकान्तरसन्निविष्टंस्वतेजसाव्याप्तनभोवकाशम् अतीन्द्रियंसूक्ष्ममनन्तमाद्यं ध्यायेत्परानन्दमयं महेशम् ३ ध्यानावधूताखिलकर्मबन्धश्चिरंचिदानन्दनिमग्नचेताः षडक्षरन्याससमाहितात्मा शैवेनकुर्यात्कवचेनरक्षाम् ४ मांपातुदे-

नोऽखिलदेवतात्मासंसारकूपेपतितंगभीरे तन्नामदिव्यंवरमंत्रमूलं
धुनोतुमेसर्व्वमघंहृदिस्थम् ५ सर्व्वत्रमांरक्षतुविश्वमूर्त्तिर्ज्योतिर्मया-
नन्दघनश्चिदात्मा अणोरणीयानुरुशक्तिरेकः सईश्वरःपातुभयाद
योजातद्व्योभूस्वरूपेणबिभर्त्तिविश्वंपायात्समूमेर्गिरिशोऽष्टमूर्त्तिः
आऽपांस्वरूपेणनृणांकरोतिसञ्जीवनंसोऽवतुमांजलेभ्यः ७कल्पा-
वसानेभुवनानिदग्ध्वासर्व्वाणियोनृत्यतिभूरिलीलःसकालरुद्रोऽव-
तुमांदवाग्नेर्वात्यादिभीते रखिलाच्चतापात् ८ प्रदीप्तविद्युत्कनका
वभासो विद्यावराभीतिकुठारपाणिःचतुर्मुखस्तत्पुरुषस्त्रिनेत्रःप्रा-
च्यांदिशिरक्षतुमामजस्रम् ९ कुठारखट्वांकुशपाशशूलकपालढक्का
गुणान्दधानः चतुर्मुखोनीलरुचित्रिनेत्रः पायादघोरोदिशिद
क्षिणस्याम् १० कुन्देन्दुशंखस्फटिकावभासोवेदाक्षमालावरदाभ
यांकःत्र्यक्षश्चतुर्बक्त्रउरुप्रभावःसद्योधिजातोऽवतुमांप्रतीच्याम् ११
अक्षमालाऽभयटंकहस्तः सरोजकिंजल्कसमानवर्णः त्रिलोचन
श्चारुचतुर्मुखोमांपायादुदीच्यांदिशिवामदेवः १२ वेदाभयेष्टांकु-
शढंकपाशकपालढक्काक्षत्रिशूलपाणिः सितद्युतिंपंच मुखोवता-
न्मामीशानऊर्ध्वंपरमप्रकाशः १३ मूर्द्धानमव्यान्ममचन्द्रमौलिर्भा
लंममाव्यादथभालनेत्रः नेत्रेममाव्याद्भ्रुगनेत्रहारीनासांसदारक्षतु
विश्वनाथः १४ पायाच्छ्रुतीमेश्रुतिगीतकीर्तिः कपोलमव्यात्सततं
कपाली वक्त्रंसदारक्षतुपंचवक्त्रोजिह्वांसदारक्षतुवेदजिह्वाः १५
कण्ठंगिरीशोऽवतुनीलकण्ठः पाणिद्वयंपातुपिनाकपाणिः दोर्मू-
लमव्यान्ममवर्म्मबाहुर्वक्षस्थलंदक्षमखान्तकोऽव्यात् १६ म-
मोदरंपातुगिरीन्द्रधन्वा मध्यंममाव्यान्मदनान्तकारी । हेरम्ब
तातोममपातुनाभिं पायात्कटिंधूर्ज्जटिरीश्वरोमे १७ ऊरुद्वयंपातु
कुबेरमित्रो जानुद्वयंमेजगदीश्वरोऽव्यात् । जंघायुगंपुंगवकेतुरव्या
त्पादौ ममाव्यात्सुरवन्द्यपादः १८ महेश्वरःपातुदिनादियाममां-

मध्ययामेऽवतुवामदेवः त्रिअम्बकःपातुतृतीययामेमहेश्वरःपातुदि
नान्तयामे १९ पायान्निशादौशशिशेखरोमां गंगाधरोरक्षतुमो
निशीथे । गौरीपतिःपातुनिशावसाने मृत्युंजयोरक्षतुसर्वकालम्
२० अन्तस्थितंरक्षतुशंकरोमां स्थाणुःसदापातुबहिःस्थितंमाम्।
तदन्तरेपातुपतिःपशूनां सदाशिवोरक्षतुमांसमन्तात् २१ तिष्ठन्त
मव्याद्भुवनैकनाथःपायाद्व्रजन्तंप्रमथाधिनाथः । वेदान्तवेद्योऽवतु
मांनिषन्नं मामव्ययःपातुशिवःशयानम् २२ मार्गेषुमांरक्षतुनील
कण्ठः शैलादिदुर्गेषुपुरत्रयारिः। अरण्यवासादिमहाप्रवासेपाया
न्मृगव्याधउदारशक्तिः २३ कल्पान्तकाटोपपटुप्रकोप स्फुटाट्टहा
सोच्चलिताण्डकोशः । घोरारिसेनार्णवदुर्निवार महाभयाद्रक्षतु
वीरभद्रः २४ पत्त्यश्वमातंगघटावरूथ सहस्रलक्षायुतकोटिभी
षणम् । अक्षौहिणीनाशनमाततायिनां छिन्द्यान्मृडोघोरकुठारधा
रया २५ निहन्तुदस्यून्प्रलयानलार्चिर्ज्वलत्त्रिशूलं त्रिपुरान्तकस्य
शार्दूलसिंहर्क्षवृकादिहिंस्रान्सन्त्रासयत्वीशधनुःपिनाकः २६ दु
स्वप्नदुःशकुनदुर्गतिदौर्मनस्यदुर्भिक्षदुर्व्यसनदुःसहदुर्यशांसि ।
उत्पाततापविषभीतिमसद्ग्रहार्तिं व्याधींश्चनाशयतुमेजगताम्
धीशः २७ ॥

ॐनमोभगवते सदाशिवाय सकलतत्वात्मकाय सकलतत्व
विदूराय सकललोकैककर्त्रे सकललोकैकभर्त्रे सकललोकैकहर्त्रे
सकललोकैकगुरवे सकललोकैकसाक्षिणे सकलनिगमगुह्याय
सकललोकवरप्रदाय सकलदुरितार्तिभंजनाय सकलजगदभय
कराय सकललोकैकशंकराय शशांकशेखराय शाश्वतनिजावासाय
निर्गुणाय निरूपाय निरीहाय निरामयाय निष्प्रपंचाय नि-
ष्कलंकाय निरातंकाय निर्वेदाय निर्द्वन्दाय निःसंगाय निर्मलाय
निर्गमाय निरुपमविभवाय निराधारायनित्यशुद्धबुद्धपरिपूर्णसच्चि

दानन्दाद्वयपरमशांतप्रकाशतेजोरूपाय जय२ रुद्रमहारौद्र वीर भद्रावतार महाभैरव कालभैरव कल्पांतभैरव कपालमालाधर खट्वांग खड्गचर्मपाशांकुशडमरुकशूलचापबाणगदाशक्ति भिन्दिपाल तोमर मुशलमुद्गर प्रासपट्टिश परशुपरिघ भुशुण्डीशतघ्नी चक्राद्यायुध भीषण करसहस्रमुखदंष्ट्राकरालबदनविकटाट्टहास विस्फारित ब्रह्माण्डमण्डलनागेंद्रकुण्डलनागेंद्रहारनागेंद्रचर्म धरमृत्युंजयत्र्यम्बकत्रिपुरां तकविरूपाक्ष विश्वेश्वरविश्वरूप वृष भवाहनविश्वभूषणविश्वतो मुखसर्वतोरक्ष २ मांज्वल २ महामृत्यु भयंनाशय २ सर्वरोगभयमुत्सादयोत्सादय विषसर्पभयंशमय २ चौरान्मारय२ममशत्रूनुच्चाटयोच्चाटय शूलेनविदारय २ कुठारेण भिन्धि २ खड्गेनछिन्धि २ खट्वांगेनविपोथय २ मुशलेननिष्पेषय २ बाणैः सन्ताडय २ रक्षांसिभीषय २ भूतानिविद्रावय २ कूष्माण्डवेतालमारीगणब्रह्मराक्षसान्संत्रासय२ ममाभयंकुरु२ वित्रस्तंमामाश्वासय २ नरकभयान्मामुद्धरोद्धर संजीवय २ क्षुत्तृड्भ्यां मामाप्याययर२दुःखातुरंमामानन्दय२ शिवकवचेनमामाच्छादय २ जयत्र्यम्बकनमस्तेनमस्ते ॥

इतना कह भद्रायुके प्रति ऋषभयोगीश्वर बोले किहे राजपुत्र यह परमगुप्त वरको देनेवाला औ सब दुःख दूरकरनेहारा शिवकवच हमनेतुमको उपदेशकिया जो पुरुष इसको सदाधारण करे उसको शिवजीके अनुग्रह से कहींभय नहीं होताहै क्षीणायु जिसका मृत्युसमीप आगया हो बड़े २ रोगोंकरके पीड़ित भी पुरुष इसके पाठसे सब रोगों से छुट २ दीर्घायुषपाता है यह कवच दारिद्र्य को दूरकर मंगल की वृद्धि करताहै इसकवच के धारण करनेवाले पुरुषों की देवता भी पूजा करते हैं औ इसके धारणसे पातक उपपातक महापातक सब दूरहो अंतमें

मुक्ति मिलती है हे राजपुत्र तू भी इसहमारेदिये कवचको श्रद्धा से धारणकर औ शीघ्रही कल्याण भागीहो इतनी कथा सुनाय सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो ऋषभयोगी भद्रायु को इसभांति कवचका उपदेशकर बड़े गम्भीर शब्द करनेवाला एक शंख औ शत्रुओंका संहार करनेहारा एक खड्ग देतेभये औ फिर बिभूति अभिमंत्रणकर उसके सब अंगों में लगाय बारह सहस्त्र हाथियों का बल भद्रायुको देतेभये वह राजपुत्रभी उस बिभूति के देह में लगनेसे बल, ऐश्वर्य, धृति, औस्मृति को पाय शरत्ऋतु के सूर्य कीभांति अति शोभित होता भया फिर वह शिवयोगी भद्रायुके प्रति कहने लगेकि हेपुत्र यह मंत्रोंके प्रभावसे युक्त खड्ग तुझे दियाहै यह तीक्ष्ण धार खड्गजिसको दिखावेगा वह उसीक्षण मृत्यु पावेगा औ इस शंखका शब्द जोतेरे शत्रु सुनेंगे वे मूर्छित हो भूमिपर गिरपडेंगे औ शस्त्र उनकेहाथोंसेछुटजायंगे येदोनों खड्ग औ शंख शत्रुकीसेनाका नाशकर अपनी सेनाका शौर्य औ तेज बढाते हैं इन खड्गशंख औ शिवकवचके प्रभावसेतथा बारह हजार हाथियों के बलसे औ भस्म धारणके सामर्थ्यसे तूअवश्य शत्रुकी सेना को जीतेगा औ पिताका राज्य सिंहासन पाय चिर काल राज्य करेगा इस प्रकार भद्रायु औ उसकी माता को उपदेशकर औ उन्होंकी कीभई पूजा ग्रहणकर ऋषभ योगी इच्छा पूर्वक जाते भये॥

तेरहवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हेमुनीश्वरो वह दशार्ण देशका बज्र बाहु राजा अपने पुत्र औरानीको निकाल सुखसेराज्य करनेलगा परंतु थोडेही दिनों में मगध देशका हेमरथ नाम राजा बड़ा बीर औ

प्रतापी बहुतसी सेना साथलेबज्र बाहुके नगर को घेरलेता भया औ उस सेनाके सिपाहियों नेदेश में लूट मार मचायदी औ दीन प्रजाके घर फूंकने लगे औ लूट में कोई तो धन कोई गाय भैंस कोई २ उत्तम स्त्रीहीदेखकर ले भागताथा इस भांतिसारेदेशको ध्वंस कर जब वे राजधानी को भी लूटने को उद्यत भये तब राजा बज्रबाहु भी सारे नगरको व्याकुल देख अपनी सेनासाथले रथ पर चढ़ कवच पहिन धनुष बाण ले युद्ध करने को निकला औ दोनों सेनाओं का घोर युद्ध होनेलगा राजा बज्रबाहु अपने हाथी मागधों की सेना का संहार करने लगा औ उसके मंत्री भी मागधों की सेना से युद्ध करते थे इस प्रकार राजा की सेना का क्रंदन करते देख सब मागध सेना इकट्ठी हो घेर लेती भई औ अति पराक्रम से युद्धकर राजा बज्रबाहु की सबसेना कोभगा दिया जब अकेला राजाही रहगया तबतो किसीने उसका रथ तोड़ा किसीने धनुष मिरोड़ा किसीने खड्ग छीन लिया औ एक ने सारथी हीका सिर काट लिया इस भांति राजाकी सबसामग्री छिन्न भिन्न करदी औ जब राजा अकेला रहे गया तब पकड़ कर बांध लिया औ मागधों की सेनाके सिपाही राजधानी में प्रवेशकर नगर कोऔ राजाके कोषको लूटने लगे कोई अश्वशाला से उत्तम २ घोड़ेही लेभगे किसीने राजाकी रानी औ दासियों परही हाथ डाला किसीने रत्न सुवर्ण आदिधन सम्हाला इसप्रकार सब राजधानीको लूट राजा बज्रबाहु को एक रथमें बंधेहुवे कोही बैठाय अपने देशको लेजाते भये यह सब वृत्तांत भद्रायुने भी सुनाकि पिताको बंधनमें पड़े औ रानी सबशत्रुओं ने हरीदशार्ण देशका नाशकिया यह सुनतेही अतिक्रोध कर कवच पहिन रथ पर आरूढ़हो ऋषभ योगीश्वर के दियेहुवे खड्ग औशंखले

तथा अपने मित्र वैश्यपुत्र को संगले कर अपने दशार्ण देश में अति शीघ्र पहुंचा औ देशकी यह दुर्दशा देखीकि कोई भगा चला जाताहै कोई स्त्री पुत्र धन आदिके नाशहोजाने से बिषही खाताहै कोई लूटका धन पायमनमेंहीं नहीं समाताहै इसप्रकार सबदेश राजासे हीन औ भयभीत होरहाहै औ शत्रुओंकी सेनाभी अभी दशार्ण देशमेंही उपद्रव करती फिरतीथी तब भद्रायु अतिक्रोधसे उस सेनामें प्रवेश कर बाणोंकी वर्षा करनेलगा वेभी उसके तीक्ष्ण बाणों करके पीड़ित संमुख हो राजपुत्रसे युद्ध करने लगे औ भांति २ के अस्त्र शस्त्र उसपरछोड़ने लगे परंतुशिवकवचके प्रभाव से उसके देहको एकभी नहीं स्पर्श करताथा इसप्रकार उनकेसब शस्त्र सहकर उनका संहार करने लगा जैसे सिंह मृगोंके झुण्ड में घुसकर सबका नाश करै इस प्रकार शत्रुओं के जो घोड़े, रथ हाथी, पयादे उसके संमुख आते वेही मृत्युपाते यह दुर्दशा अपनी सेनाकी देख सबमागधों ने इकट्ठेहो राजपुत्रको घेरलिया औ शस्त्रों की वृष्टि उसपर होने लगी यह उनका साहस देखराज-पुत्रभी खड्ग हाथमें ले रथसे कूद पड़ा औ शत्रुकी सेनामेंबिचरने लगा उस अति भयंकर यमराजकी जिह्वाकी भांति लपलपाते हुवे खड्गको देखकरही वह सेना भाग निकली औ कई तोउसके तेजको देखतेही मूर्छित होगिरे औमरे जोजो उस खड्गकी ओर निहारते वेसब जैसे अग्निमें पतंग शीघ्रही नाश को प्राप्तहोते इस अवसर में ही भद्रायुने शंख भी बजाया तब खड्ग से जो बचे थे वे उस शंखका घोर औ गंभीर शब्द सुनतेही मूर्च्छा को प्राप्तभये कोई रथों पर कोई घोड़ों पर औ कोई २ हाथियों पर ही मूर्च्छित भये औ बेसुधहो भूमि पर गिरे औ उनको मरेकी भांति भूमि पर पड़े देख राजपुत्र ने भी दया से न मारा इस

रीति उस सेना को भीति दे औ कितनों को यमलोकमें पठाय अपने पिता औ उनकी रानियों को बंधन से छुटाय औरभी जो नगर के स्त्री बालक आदि मागधों ने पकड़ रक्खे थे सबको उनके बंधनसे मुक्तकर सबका आश्वासन करताभया फिर शत्रुकी सेनामें बिचरने लगा उनकी जो स्त्री, घोड़ा, हाथी, सुवर्णके रथ रूपवती दासी आदि सामग्री हाथ लगी सब लेकर औ मगध देशके राजा हेमरथको बांध औउसके मंत्री तथासेनापति आदि सबको पकड़ साथले अपनी राजधानीमें आया उसका आगमन सुन जो मंत्री, सेनापति, सेना आदि मागधोंसे हारकर भागगये थे वेभी सब राजकुमार के पास आ पहुंचे औ उसका पराक्रम सुन यही जानतेथे कि यह राजपुत्र किसी देवता का अवतारहै अथवा कोई योगी है वा तपस्वी है यह अमानुष कर्म किया कि नौ अक्षौहिणी इस एकने संहारकरी यह शिव औ पार्वतीका पुत्र है अथवा और कोई देवहै इसप्रकार सब मंत्री औ नगर के लोग आपसमें संदेह करते थे परंतु भद्रायु ने अपना वृत्तांत किसी से न कहा औ अपने पिताके समीप आय चरणों पर प्रणाम करताभया वह राजा भी उसको देख प्रेम से आलिंगन कर पूछनेलगा कि हे महात्मा तू देवता या गंधर्व, अथवा मनुष्यहै औ तेरे माता पिता कौनहैं औ देश कौनसा है तथा नाम क्या है औ इतनी करुणा हमारे ऊपर किसकारण से करी कि शत्रुओं से हमें, हमारी रानी तथा मंत्रियों को छुटाय मुझे शत्रुओं का संहारकर फिर राजधानी दिखाई इतनी शूरता, धैर्य औ बल कहांसे पाया क्योंकि मनुष्यों में ऐसा नहीं हो सक्ता तूतो इस बल औ धैर्य से तीन लोकको भी जीत सक्ता है तुच्छ शत्रुओं की तो क्या कथा है औ हम हजार जन्म में भी तेरे अऋण नहीं होसक्ते औ दारा, पुत्र, राज्य

सब को छोड मेरा चित्त तेरे ऊपरही प्रेमसे बिह्वल हो रहा है अबतू अपना सब वृत्तांत सुनाव यह पिताका बचन सुन भद्रायु ने कहा कि महाराज यह सुनय नामक बैश्यका पुत्र मेरा मित्र है औमैं इनकेही घरमें अपनी माता समेत रहताहूं भद्रायु मेरा नाम है बाकी वृत्तांतपीछेसे आपको बिदित होगा अब आपभी शत्रुओं का भय छोड़ सुख पूर्वक राज्यकरें औ मैं भी अब जाता हूं जब तक फिर न आऊं तब तक इन शत्रुओं को आप न छोड़िये यह राजासे कह औ प्रणाम कर वहांसे चला औ अपने घर पहुंच सब वृत्तांत माताको सुनाता भया वहभी अपने पुत्रको देख औ सब वृत्तांत सुन अति हर्षितहो आलिंगन करती भई औ वह बैश्यभी जिस के घरमें ये रहतेथे बहुत प्रसन्न भया उधर बज्रबाहु राजाभी अपने स्त्री पुत्र मित्र औ मंत्रियों समेत राजधानीमे प्रवेशकर सुख से राज्य करने लगा इसी अवसर में ऋषभ योगी बिचरते हुवे निषध देशमें राजा चंद्रांगद के पास पहुंचे वहभी इनको देख बड़ी भक्तिसे इनकी पूजा करता भया इननेभी उसके पूजा आदि सत्कारको ग्रहण कर एकांतमें भद्रायु का वृत्तांत जन्मसेले सब सुनाया औ यहभी कहदिया कि तेरे सीमंतिनी रानीके गर्भसेजो कन्या कीर्तिमालिनी नामक उत्पन्न भईहै वह तू भद्रायु को बिवाहदे इसमें बड़ा कल्याण होगा इतना कह ऋषभ योगी तो वहांसे चल दिये औ राजा चंद्रांगदने उत्तम मुहूर्त दिखाय भद्रायु को बुलाय अपनी कीर्तिमालिनी कुमारी का उससे परिणय कर दिया वह राजपुत्रभी बिवाह के अनंतर राजकुमारी सहित सिंहासन पर बैठाहुवा रोहिणीयुक्त चंद्रसेभी अधिक शोभित होताभया राजा चंद्रांगद नेभद्रायु के पिता बज्रबाहुको भी बुलाय सत्कार पूर्वक अपनी राजधानीमें प्रवेश कराया भद्रायुभी अपने

पिताके चरणमें प्रणामकरता भया औराजा बज्रबाहुभी उसको देख आलिंगन कर चंद्रांगद राजा से कहने लगा कि यह मेरे प्राण रक्षा करने वाला बीरहै औ आप का जामाता है परंतु मैं इस का बंश आप से सुनना चाहता हूं यह दशार्ण देश के राजा बज्रबाहु का बचन सुन निषध देश का स्वामी राजा चंद्रांगद राजा बज्रबाहु को एकांत मे लेजाय हंस कर कहने लगा किमहाराज यह आपकाही पुत्र है जोइसकी माता सहित आपने बन को भेज दिया औ दोनों रोग से अति पीडित थे औ बनमें छोड़नेके अनन्तर इसकी माता इसको गोदमें ले दुःख से भटकती हुई दैवयोग करके परम सज्जन एक बैश्य के घरमें जा पहुंची औ उसी बैश्यने इनकी रक्षा करी परंतु यह आपका पुत्र रोगकी बाधासे थोड़े दिनोंके अनन्तर उसी बैश्य के घर में मृत्युबश भया औ ऋषभ नाम शिव योगीके प्रभावसे फिर जिया औ उसी के प्रभाव से दोनों माता औ पुत्र अति उत्तम रूप भी पाते भये औ उसी योगीके दिये खड्ग औ शंख के प्रभावसे शत्रुओंको इसने जीता औ यह सब बिद्या औ कलाओं में अति निपुण है औ बारह सहस्र हस्ती का बल यह रखता है अब आप इस अपने पुत्र औ इसकी माताको अपने साथ ले जाइये यह चंद्रांगद से सब वृत्तांत सुन राजा बज्रबाहु अति लज्जित भया औ अपने मूर्खपने की निन्दा करने लगा चंद्रांगद भी सब वृत्तांत राजा बज्रबाहुको सुनाय वहांहीं भद्रायुकी माता को बुलाय भूषण वस्त्र आदि से अलंकृत कर राजा बज्रबाहु के प्रति समर्पण करता भया वह भी अपने पत्नी औ पुत्र को पाय औ उनका दिव्यरूप देख आनन्दमें मग्न हो आलिंगन करता भया औ कुछ दिन वहां रह कर अपनी रानी पुत्र औष्णुषा को साथ

ले बड़े आदर से राजा चंद्रांगद से बिदा हो अपनी राजधानी में आया नगर के लोग भी भद्रायु को बिवाह कर आये देख औ उसका जन्मसे ले सब वृत्तांत सुन अति मुदित भये राजा बज्रबाहु भी पुत्रको सब प्रकार समर्थ देख राज्य उसके आधीनकर कुछ काल परमेश्वर का आराधन कर अंत में कैलास को जाता भया औ चंद्रागद ने भी मगधदेश के राजा हेमरथको बंधन से छोड़ राज्य दे मैत्रीकर उसको बिदा किया औ आप भी निष्कंटक राज्य सुख पूर्वक करने लगा इस प्रकार पूर्व जन्म में शिव योगीकी पूजा करने से ऐसी २ भारी बिपत्तियों से छूटा औगये हुये राज्यको फिर संपादन कर चंद्रांगद राजा की पुत्री सहित वह भद्रायु नाम राजपुत्र राज्य करताभया॥

सूतजी कहते हैं कि हेमुनीश्वरो इस प्रकार भद्रायु राज्य करते २ एक दिन अपनी प्रिया रानी कीर्तिमालिनी का संग ले बसंतऋतुमें बन बिहार करने गया बनकी भी यह शोभा थी कि फूले हुये अशोक के नये २ कोमल पल्लवोंसे सब बन ऐसा लाल हो रहा था कि मानों दावानल लग रहा है कहीं फूली मल्लिका के फूलोंके गुच्छों पर भ्रमर गुंजार कर रहे थे किसी ओर बिकसित नाग केसर का वृक्षही देखने वालोंकेनेत्रोंको आनन्द देता था कहीं श्याम तमालोंका बन अंधेरी रातसी दिखा रहा था कहीं फूले आंबों पर कोकिल कूज २ बिरही मनुष्योंको सता थे किसी ओर फूले हुये माधवी लताओंके समूह बसंतका आगमन बताते थे इस प्रकार अति शोभायमान उस फूले हुये कानन में राजा भद्रायु अपनी रानीको संगलिये बिहार कर रहता था कि एक ओरसे एक ब्राह्मण औ ब्राह्मणी पुकारते आते हैं औ व्याघ्र उनको दबाये आता है यह देखता भया वे भी राजाको देख

पुकारे कि महाराज आप हमारी शीघ्र रक्षा करें यह महा भयंकर दुष्ट व्याघ्र हमको भक्षण करनेके अर्थ पीछे चला आता है जब तक यह हमारे समीप न पहुंचे तब तकही कुछ उपाय कीजिये इस प्रकार उनका आक्रन्दन सुन राजा धनुष पर बाण चढ़ाता ही था कि व्याघ्रने झटपट लपक कर ब्राह्मणी को आही दबाया औ हे नाथ हे प्रभो हे राजा हे शिव इस भांति बिलाप करती हुई ब्राह्मणी को व्याघ्र भक्षण करने का बिचार करही रहा था कि राजा ने भी उस पर बाणोंकी वृष्टि करनी आरंभ की परंतु वे राजा के तीक्ष्ण बाण व्याघ्र के कुछ बाधा न करते भये जैसे पर्बत को जल धार वह व्याघ्र भी राजा को बाण बर्षाते देख ब्राह्मणी को उठाय बेगसे चल दिया इस प्रकार व्याघ्र ने हरी अपनी प्रिया को देख ब्राह्मण बिलाप करने लगा कि हे प्राण प्यारी हे सुन्दरि हे बाले हे पतिब्रते मुझे अकेला छोड़ कहां चली गई अब मैं तेरे बिन क्योंकर जीऊंगा इस रीति बहुतकाल तक बिलाप कर क्रोधसे राजासे कहने लगा कि राजा वह तेरा खड्ग शंख औ बारह हजार हाथियोंका बल कहां गया औतेरा प्रताप प्रभाव औ धैर्य सब निष्फल भया कि जो तू इस एक छोटेसे जंगलके जीवसे मेरी ब्राह्मणी को न बचा सका क्षत्रिय का यही धर्म है कि शरण में आये की रक्षा करे जो यह धर्महो नष्ट होजाय तो उस क्षत्रियका जीवनहीं वृथा है दुःखी शरणागत औ दीनका जो राजा धन औ प्राणोंसे रक्षण नहीं करते वे जीतेही मरे हैं जिस प्रकार बुद्धिहीन पुरुष चाहे धनवान भीहो मरे बरोबर है उसीप्रकार दीनकी रक्षासे हीन राजा भी है तोइस जीवन से हे राजा बिष खाके वा अग्नि में प्रवेश करके मर रहना ठीक है यह ब्राह्मणका बचनसुन राजा भी मनमें बिचार

करने लगा कि हुआ तो बड़ा अनर्थ कि मेरे देखते २ व्याघ्र ब्राह्मणीको उठा ले गया आज मेरा पौरुष औ बहुत दिनसे संपादन करी हुई कीर्ति सब नष्ट भई औ पाप भी बड़ा भारीहुवा अब मेरे राज्य,संपत्ति,भोग,पुत्र,दारा,धन सब वृथा हैं यहीमुझे उचित है कि अपने प्राण देके भी इस ब्राह्मण का शोक दूर करूं यह मनमें निश्चय कर ब्राह्मणके चरण पकड़ राजाकहने लगा कि महाराज आप क्षमा करैं औ यह मेरा राज्य धन औ शरीर आपके आधीन है जो इच्छा होय सो कीजिये यह राजा का बचन सुन ब्राह्मण बोला कि राजा अंधे को जैसे दर्पण से मूर्खको जिस भांति पुस्तक से कुछ प्रयोजन नहीं इसी प्रकार स्त्री हीन पुरुष को धन से कुछ फल नहीं औ मैं आज तक स्त्री सुखसे तृप्त नहीं भया इस लिये धनको क्या करूं जो तू मुझे प्रसन्नही किया चाहता है तो अपनी रानी मेरे अधीन कर यह उस ब्राह्मणका बचन सुन राजा कहने लगा कि हे ब्रह्मन्यह क्या आप का धर्म है पराई स्त्री का स्पर्श करना तो अति पाप होता है जगत् में धन,राज्य,हस्ती,अश्व औ अपने शरीर के भी दाता हैं परंतु अपनी स्त्री दे देने वाला कोई न देखा औ पराई स्त्री के संगसे जो पाप होता है वह अनेक प्रायश्चित्तोंसे भी दूर नहीं होता यह राजासे सुन ब्राह्मण बोला कि राजा मैं अपने तपके प्रभावसे घोर ब्रह्म हत्या आदि महा पातक भी मिटा सकता हूं परदारा संगका पाप तो क्याहै इस लिये तू कुछ बिचार मत कर औ अपनी रानी मुझे दे नहीं तो शरणागत की रक्षा न होनेसे तू अवश्य नरकमें जायगा यह ब्राह्मणका कथन सुन राजाने बिचार किया कि नरकमें पड़नेसे तो रानीका देना ठीक है रानी इस ब्राह्मणको देकरमैं अग्निमें प्रवेश कर जाऊंग

तो मेरी कीर्ति भी बनी रहेगी औ नर्क से भी बचूंगा यह मनमें निश्चय कर बहुतसा काष्ट इकट्ठाकर अग्नि लगाय आप स्नान कर ब्राह्मण के प्रति रानी संकल्प कर देता भया इस प्रकार रानी तो ब्राह्मण को समर्पण की औ आप अग्निकी तीन प्रदक्षिणाकर शिवजी को हृदय में ध्याय अग्नि में राजा प्रवेश करना चाहताही था कि उसीसमय भक्तवत्सलश्रीमहादेव जी नेप्रकट हो रोकलिया उसनेभी देखा कि ये पंचमुख चंद्रकला मस्तक पर धारण किये कोटि सूर्यके तुल्य प्रकाशमान् गजचर्म ओढ़े नागों के हार कंकण आदि भूषण पहिने भुजाओंमें शूल खड्ग, खट्वांग, कुठार, ढाल, मृग,बर, अभय, कमल औ धनुष धारण किये वृषपर आरूढ़ श्रीमहादेव जी हैं इसी अवसर में आकाश से राजा भद्रायु के ऊपर पुष्पों की बर्षा भई औउस भद्रायु का अति प्रबल साहसदेख प्रसन्न हो देवता लोगस्वर्ग में दुंदुभी बजाने लगे औ महादेव जीको भद्रायु के अनुग्रह के अर्थ प्रकटभये देखनारद सनकआदि ऋषीश्वरइन्द्रादिलोकपाल वहां सब आये भद्रायु भी पार्बती जी सहित श्री महादेवजीका दर्शन पाय आनन्द से अश्रुपात करता हुआ रोमांचितहो हाथ जोड़ गद्गद बाणी सेवा स्तुति करने लगा॥

स्तोत्र॥

राजोवाच। नतोऽस्म्यहंदेवमनादिमव्ययंप्रधानमव्यक्तगुणं महान्तम्। अकारणंकारणकारणंपरंशिवंचिदानन्दमयंप्रकाशम् १ त्वंबिश्वसाक्षीजगतोऽस्यकर्तानिगूढवामाहृदिसन्निविष्टः। अतो बिचिन्वन्तिधियाबिपश्चितोयोगैरनेकैः कृतचित्तरोधैः २ एकात्मनाभावयतांत्वमेकोनानाधियांयस्त्वमनेकरूपः। अतीन्द्रियंशश्वदपास्तबिभ्रमंमनस्तथासंप्रतियद्विलीयते ३ तत्त्वांदुरापंवचसो

धियश्चह्यपेतमोहंपरमात्मरूपम् । गुणैकनिष्ठाःप्रकृतौविलीनाः कथंपुनःस्तोतुमलंगिरोमे ४ तथापिभक्त्याश्रयतामुपेयुषस्तवाघ्रि पद्मंप्रणतार्त्तिभंजनम् । सुघोरसंसारदवाग्निपीड़ितोभजामिनित्यंभवभीतिशांतये ५ नमस्तेदेवदेवायमहादेवायशम्भवे । नमस्त्रिमूर्त्तिभेदायसर्ग्गस्थित्यंतकारिणे ६ नमोविश्वादिरूपायविश्वप्रत्यक्षसाक्षिणे । नमःसन्मात्रतत्वायबोधानन्दघनायते ७ सर्वक्षेत्रनिवासायक्षेत्रभिन्नात्मशक्तये । अशक्तायनमस्तुभ्यंशक्त्याभासायभूयसे ८ निराभासायनित्यायसत्यज्ञानान्तरात्मने । बिशुद्धायबिदूरायबिमुक्ताशेषकर्मणे ९ नमोबेदान्तवेद्यायवेदमूलनिवासिने । नमोबिबिक्तचेष्टायसर्बचेष्टानिवृत्तये १० नमःकल्याणबीर्यायकल्याणफलदायिने । नमोऽनन्तायमहतेशान्ताय शिवरूपिणे ११ अघोरायसुघोरायतथाघौघबिनाशिने । नमोबित्रस्तमायायबिशदायगुणायते १२ भर्गायभवबीजायभजनाय गरीयसे। पाहिमांजगतांनाथपाहिशंकरशाश्वतपाहिरुद्रबिरूपाक्षपाहिबिश्वजयाव्यय १३ शम्भोशशांककृतशेखरशान्तमूर्तेश बेंशगोपतिनिवासहुताशनेत्र । गंगाधरांगजबिदारणपुण्यकीर्ते भूतेशभूधरनिवास सदानमस्ते १४ इसप्रकार भद्रायुकी की भई स्तुति सुन पार्बती सहित श्री महादेवजी प्रसन्न हो कहनेलगे कि हे राजा तेरे इस पुण्य स्तोत्र औ भक्ति करके हम बहुतप्रसन्न भये औ तू अनन्य चित्त हो सदा हमारी पूजा करता है इस हेतु तेरी परीक्षा के लिये ब्राह्मण का रूप धार हम आयेऔ वह ब्राह्मणी पार्बती जी थी तथा मायारूप ब्याघ्र था जो तेरे बाणों से भी न भेदन हुआ औ तेरीधीरता देखनेको हमनेरानी की याचना करी अब हमतेरी रानी कीर्त्तिमालिनीकी औ तेरी भक्ति देखअति प्रसन्नहैं अबजो तेरी इच्छा होय सो बर मांग

यह सुन राजा बिनय से हाथजोड़ कहने लगा कि हे नाथइससे अधिक अर क्या बर मांगों कि आपके प्रत्यक्ष दर्शन भये जो योगियोंको भी दुर्लभहै अथजो आपकी यही इच्छा होय तो मैं यहमेरी रानी मेरीमाता वह पितापधाकर नामवैश्य औउसका पुत्र सुनय नाम जोमेरा मित्र है येसदा आपके समीप रहेंयहौ चाहता हूं सूतजी कहते हैं कि यहतो भद्रायु ने बर मांगा अ उसकीरानी कीर्तिमालिनी भी महादेवजीको प्रसन्नकर बर मांगती भई कि महाराज मेरापिताचन्द्रांगद औ मातासीमंतिनी भी सदा आपकी सेवा मे रहें यह रानी औ राजाका अभीष्ट बर-उनको दे महादेव जी अन्तर्धान भये राजा औ रानीभी उत्तम बर जो देवताओं को भी दुर्लभ है पाय सुख पूर्वक दशसहस्र बर्ष राज्य कर अंत में पुत्र को राज्य दे शिवलोक में प्राप्त होते भये उधर चन्द्रांगद औ सीमंतिनी भी बहुत काल राज्य कर अंत में शिवजीक धाम को गये इतनी कथा सुनाय सूतजी बोले कि हे ऋषियो यह पाप हरने हारी बिचित्र शिव कथा जो पठन करे अथवा सुनावे वे संसारके सब सुख भोगकर अंतमेशिवलोकपावे॥

पंद्रहवां अध्याय॥

सूतजो कहते हैं कि हे ऋषीश्वरो यह ऋषभनाम शिवयोगी का संक्षेप से प्रभाव बर्णन किया अब और भी एक शिवयोगी काही प्रभाव बर्णन करते हैं औ इसी प्रसंग में थोड़ासा बिभूति का माहात्म्य भी कथन किया जायगा कि जिसके सुनने से पापी भी कृत कृत्य होजांय—एक बामदेवनाम शिवयोगी बड़ा तपस्वी निर्द्वंद, निर्मम, शांत, निःसंग, समदर्शन, जितक्रोध, सदासंतुष्ट, एकाकी, स्वेच्छाचारी, भस्मकरकेउद्धूलितजिसके सबअंग, जटा-

मंडलकरके मंडित,वृक्षके वल्कल ओढ़े औ भिक्षामात्रसेहीसदा प्रसन्न था एक दिन वह अपनी इच्छा से बिचरता हुवा बड़े घोर क्रौंचारण्य नाम बन में प्रबिष्ट हुवा उस निर्जन बनमेंअति भयंकर औ क्षुधा तृषा से व्याकुल एक ब्रह्मराक्षस रहता था वह उस शिवयोगी को देख अति हर्षित हो उसकी ओर भक्षण करने की इच्छा से दौड़ा औ वह योगी भी उसको मुख बिस्तीर्ण किये औ बड़ी २ दाढ़ों को जीभ से चाटते हुवे आते देख वहां ही खड़ा होगया औ राक्षस भी झट पट आ दोनों भुजाओं से उस योगी को ग्रहण करता भया परंतु उस शिवयोगी के अंग का स्पर्श होतेही उस भयंकर रूपको त्याग एक दिव्य पुरुष होगया जैसे चिंतामणि के स्पर्श से लोह भी कांचन होजाय मानस सरमे पहुंच जैसे काक भी हंसहोजाय अथवा अमृत पान कर जैसे मनुष्य भी देवत्व को प्राप्त होताहै इसी प्रकार पापी जीवभी महात्माओं के स्पर्श से पबित्र होजातेहैं इसलिये सत्संग दुर्लभहै औ सदा करना योग्य है जो अति दुरात्मा औ क्षुधा तृषा से दुःखी राक्षस था वह शिव योगी का स्पर्श होतेही अति तृप्त दिव्यदेह औ शांत चित्त होगया शिवयोगी के देहमें जो बिभूति लगरही थी उसका एक कणिका राक्षस के शरीरमें लगगया उससे सब पाप उसका निवृत्त भया औ पूर्बजन्म का वृत्तांत भी उसको स्मरणआया औ पूर्बजन्म का स्मरण होतेही दौड़ कर बामदेव योगी के चरणों परगिरा औ कहने लगा हे महायोगिन् हे दयासागर तुम मेरा अपराध क्षमाकरो कहां मैं सब जीवोंको भय देनेहारा अति दुष्ट ब्रह्मराक्षस औ कहां यह अति दुर्लभ पाप काटने वाला आपका दर्शन आप कृपाकर मेरा उद्धारकरैं आपके स्पर्श मात्रसेही मुझे बड़ा आनन्द होरहा है

यह उसका वचन सुन वामदेव बोले कि तूकौन है औ इस दुष्ट गतिको प्राप्तहो इसघोर बनमें एकाकी क्यों रहताहै तब राक्षस अपना वृत्तांत कहनेलगा कि इससे पचीस जन्म पहिले मैं दुर्जय नामक यवन देश का राजा था औ अति दुराचार मदमत्त प्रजाको क्रूरदंड देनेवाला निर्दय औ बड़ा कामीथा युवा अवस्था में नित्य नई स्त्री से प्रसंग किया करता इस हेतु मेरे सेवक देश देश से उत्तम २ नारी मेरे अर्थ लाते औ मैंभी एकदिन भोगकर उसको अंतःपुर में रखदेता औ दूसरे दिन और नई मंगवाता इसभांति अपने राज्यसे औ दूसरे देशोंसे स्त्रियां मंगाय २ इकट्ठी करी औ एकबार जिससे भोग किया फिर उसको न छुवा औ उनको अंतःपुरमें ऐसी रक्षासे रखता कि दूसरे पुरुष का दर्शन भी न होता औ दिन रात शोकसे लंबे सांस लिया करती जब मैं ब्राह्मण आदि सब वर्णों की नारियों से भोग करने लगा तब ब्राह्मण आदि उत्तम वर्ण मेरा राज्य छोड़ २ भागगये मैंने भी विधवा रजस्वला कन्या आदि बिना भोग किये कोई न छोड़ी तिनमें तीनसौ ब्राह्मणी चारसौ क्षत्रिया छसौ वैश्या एकहजार शूद्री सौचंडाली एकहजार भीलोंकीस्त्री पांचसौ नटनी चारसौ रजकी अर्थात् धोबिन औ वेश्याओं की तो गिनतीहीनही बता सक्ता मैंनेभोगी तौभी मुझे तृप्ति न भई इस प्रकार अति मद्य पान करने से औ बहुत भोगसे युवा अवस्था मेंही राजयक्ष्म आदि रोग मेरे उत्पन्न होगये इस रीति रोगसे अति दुखीहो संतानहीनही कुछ दिनोंमें मृत्युवश हुवा क्योंकि धर्महीन पुरुष का आयुष क्षीण होजाता है अपयश की वृद्धि होती है भाग्य क्षय होजाता है स्वर्गमें पहुंचे भये भी पितर नर्क को जातेहैं औ अंत में वह पुरुष भी दुर्गति को प्राप्त होता है इस प्रकार मेरा

मृत्यु होनेके अनन्तर यमक दूत मुझे यमराज के पास ले जाते भये यमराज ने भी मेरे पापदेख वीर्य के कुंड में पटकवादिया औ कई लाख वर्ष उसी में पड़ा अपने पाप का फल भोगता रहा औ नित्ययमदूतों के भयसे वही वीर्य पानकरता रहा जब वहां से छुटा तो निर्जन बन में पिशाच भया कि नित्यही क्षुधा तृषा से व्याकुल औ हजार शिश्न करके सब देह व्याप्त भया इस प्रकार पिशाच योनि पाय दिव्य सौ वर्ष बिताय तिसपीछे दूसरे जन्म में सब जीवों को भय देनेहारा व्याघ्र भया फिर तीसरे जन्म में अजगर भया, चौथे में वृक अर्थात् भेडिया पांचवे में ग्रामसूकर, छठेमें कृकलास, सातवेंमें श्वान, आठवेंमें शृगाल, नवेंमेंगवय अर्थात् नीलगाय, दशवेंमेंमृग, ग्यारहवेंमेंमरकट, बारहवेंमेंउष्ट्र, तेरहवेंमेंनकुल, चौदहवेंमेंकाक, पन्द्रहवेंमेंरीछ सोलहवेंमेंकुक्कुट, सत्रहवेंमेंगर्दभ, अठारहवेंमेंमार्जार, उन्नीसवें मेंमंडूक, बीसवेंमेंकर्म, इक्कीसवेंमें मत्स्य, बाईसवेंमें मूषक, तेईसवें मेंउलूक, चौबीसवेंमें मस्त हाथी औ इसपच्चीसवेंजन्ममेंक्षुधातृषा सेदुखी इस निर्जल औ निर्जन वनमें ब्रह्मराक्षसभया अब आप को दूर से देख भक्षण करने दौड़ा था परंतु आप का स्पर्शहोते ही सब मेरे पापनष्ट होगये औ पूर्व जन्म स्मरण आये अबमें अपने एक सहस्र तक पिछले जन्म स्मरण करता हूं औ अति वैराग्य मेरे हृदय में उत्पन्न होरहा है अब आप कृपाकर कहैं कि यह आपमें अद्भुत प्रभाव तपसे, वा तीर्थयात्रा करनेसे किसी मंत्र के जप से अथवा योग सेहै कि आप का स्पर्श होतेही मेरे पाप निवृत्त होगये औ मैं आप के शरणागतहूं यह उसराक्षसका वचन सुन बामदेव योगी बोले कि हे राक्षस यह मेरे शरीर में लग्गेहुये भस्मका प्रभाव है कि यह तेरी सद्बुद्धि होगई भस्म का

प्रभाव कौन वर्णन करसक्ताहै जिस प्रकार शिवजीके प्रभावका अंत नहीं इसी भांति बिभूतिका माहात्म्यभी अनंत है पूर्वकाल में एक द्रबिड़ देश का निवासी धर्मसे हीन, मनमलीन ब्राह्मण था औ वह कुकर्म करते २ शूद्र होगया था सदा चोरी किया करता औ व्यभिचारिणी स्त्रियां से रमाकरता एक दिन किसी शूद्र के घरमें रात्रि के समय घुसा औ उस शूद्र ने भी उसे देखा देखतेही उस को मारकर वह शूद्र ग्रामके बाहर फेंक आया इसी काल में एक श्वान आया कि जिस के पैरों में कहीं से भस्मलगगया था उस ब्राह्मण के ऊपर पांव रख कर चला गया इतने में यमदूत औ शिवदूत दोनों आये औ शिवदूत यम दूतों को जीत उस को बिमान पर बैठाय शिवलोक को लेजाने लगे तब यमराज घबड़ाय कर आप वहां आया औ शिव दूतों से पूछने लगा कि इस महा पातकी को क्या समझ कर शिव लोक में लेजाते हो तब शिव दूत बोले कि आप देखिये इस के सब अंगों में भस्म लगरहा है इसी से शिवजी की आज्ञा पाय हम लेजाते हैं इतना यमराजसे कह शिवदूत तो सबके देखते २ ही उस को ले उड़े औ थोड़ी सी देर में कैलास के बीच जा पहुंचाया इतनी कथा ब्रह्मराक्षस के प्रति सुनाय बामदेव जी बोले कि भस्म सब पापों को दूर करता है औ शिव जी का भूषण है इसी हेतु हम सदा धारण करते हैं इसी प्रकार भस्मका माहात्म्य सुन राक्षस अति उत्कण्ठित होकहने लगा कि हे महा योगी आप धन्य हैं मैं भी आप के दर्शन से कृतकृत्य भया अब आप ऐसा अनुग्रह करें कि इस पापयोनि से मेरा उद्धार होजाय इतना मुझे भी स्मरण है कि उस राजा के जन्म में और तो मैंने बड़े २ भारी पाप किये परंतु थोड़ा सा पुण्य भी बनपड़ा

था कि एक शिव भक्त को उत्तम भूमि मैंने दान करदी थी औ जब मैं मृत्यु बश हो यमराज के पास गया तो यमराज ने भी यही कहा था कि इस भूमिदान के पुण्य से पच्चीसवें जन्म में एक शिवयोगी का संग पाय संसार से मुक्त होगा उसी पुण्यसे इस निर्जन बन में आप का दर्शन हुआअब आप मेरा उद्धार करें औ मंत्रित भस्म मुझेदेवें औ यहभी कृपाकर बतावें कि भस्मक्यों कर धारते हैं कौन मंत्र है क्या बिधि है औ कौन समय है यह आप दया कर कहैं क्योंकि आप ऐसे महात्माओं का जन्मपरोपकार के अर्थही है कल्पवृक्ष जिस प्रकार बर्षा, धूप आदिकष्ट अपने ऊपर सहकर दिन रात परोपकार करता है इसी प्रकार महात्मापुरुष भी अपना दुःखनहीं गिनतेयहउस ब्रह्मराक्षसका बचनसुन बामदेवयोगी फिर भी भस्मका माहात्म्य कहनेलगे॥

सोलहवां अध्याय॥

बामदेवयोगी बोलेकि एकसमय सुंदर पुष्पित वृक्ष औ लताओं से भरे हुए अनेक धातुओं से शोभित चारोंओर गिरतेहुये झरनोंसे मनोहर मन्दर नाम पर्वत में बिहार करने के अर्थ श्री बिष्णुजी करके पूजित कालाग्निरुद्र जाते भये उनके चारों ओर लाखों रुद्र सेवा के लिये बर्तमान थे इस प्रकार मंदराचल में श्री कालाग्नि रुद्र का गमनसुन सबदेवों को साथले स्वर्ग से इन्द्र भी आया औ अग्नि, बरुण, बायु, यम, कुवेर, चित्र सेन आदि गंधर्ब, नाग बिद्याधर, किन्नर, सिद्ध, साध्य, गुह्यक, बशिष्ठ आदि ब्रह्मर्षि और नारदादि देवर्षि दक्ष आदि प्रजापति उर्बशी आदि अप्सरा चंडिका आदि मातृका, बसु, बिश्वेदेव, पितर, अश्विनीकुमार तथा और सब देवता वहां आये औ शिवजी के गण महाकाल

नंदी, शंकुकर्ण, कण्टाकर्ण, मणिभद्र, वृकोदर, विकट, निकुम्भ कुम्भोदर, महोदर, कुण्डोदर, कर्णधार, केतु, भृंगीरिटी भूतनाथ आदि जिन मेंसे कई तो कृष्ण वर्ण कोई शुक्ल वर्ण कोई मंडूक कैसे रंग औ हरे, पीले, लाल, चित्र, धूसर आदि कितनों के वर्ण औ बड़े बड़े शरीर हाथों में अनेक प्रकार के शस्त्र लिये अनेक भूषण पहिने अति तेजस्वी औ व्याघ्र, सूकर, हाथी, मगर श्वान, सृगाल, उष्ट्र, शरभ, भेरुण्ड, सिंह, गृद्ध, वक, मार्जार आदि जीवों कैसे जिनके मुख उनमें कई तो एक मुख कोई द्वि मुख कई बहु मुखऔ किसी २ के मुख थाही नहीं कई एकहस्त द्विहस्त, बहुहस्त, हस्तसे हीन, एक पाद, बहुपाद, बहुकर्ण, एक कर्ण, कर्णरहित, एक नेत्र, कई बहुनेत्र, कोई तो इतने लंबे कि आकाश को हाथों से स्पर्श करें औ कई ऐसे बामन कि भूमि पर चलते भी न देख पड़ें वे सब शिवजी की सेवा करने को वहां इकट्ठे भये औ सब मुनियोंमें श्रेष्ठ सनत्कुमार भी श्रीमहादेव जी के दर्शनको वहां आये श्रीमहादेवजी कोटि सूर्यके तुल्य जिनका तेज महा प्रलय के समय क्षोभ को प्राप्त हुवे समुद्र के तुल्य जिन का गंभीर शब्द प्रलय अग्नि की ज्वाला सी जिनके मस्तक में जटा लटक रहीं भाल के नेत्र से अति प्रचण्ड अग्नि की ज्वाला निरंतर निकल रही बायें कान में तक्षक औ दहिने में वासुकिनाग कोधारण किये विष के पान करने से जिन का कंठ नील वर्ण हो रहा है नागों के हार, कंकण, केयूर, मेखला आदि सब भूषण पहिने औ उन नागों की मणियों से शोभित हैं व्याघ्र का चर्म पहिन रहे हैं औ पैरों में कर्कोटक, महापद्म धृतराष्ट्र, धनंजय आदि बड़े२ नागों के नूपुरआदि भूषण बनाये हैं औ रत्नों से जड़े अति ऊंचे सुवर्ण के सिंहासन पर बैठे हैं

ऐसे श्रीमहादेव जी को देख सनत्कुमार जी भक्ति से चरणोंपर प्रणाम करते भये औ हाथ जोड़ स्तुति करने लगे स्तुति करने के अनंतर श्री कालाग्नि रुद्रको सुमुख देख अनेक धर्म पूछतेभये श्रीमहादेवजी नेभी उनकी भक्तिदेखजो जो धर्मउननेपूछे सब उन को उपदेश किये तब फिर सनत्कुमार बड़े विनय से प्रार्थना करने लगे कि महाराज अनेक धर्म आप के मुख कमल से सुने कि जिन के आचरण से मनुष्य मुक्ति पावेंगे परंतु सब परिश्रम साध्य हैं इस लिये कोई ऐसा उपाय कृपाकर बताइये कि जिस में परिश्रम थोड़ा औ फल बहुतहो मुक्ति भी जिस से मिलेयह सुन श्री कालाग्निरुद्र कहने लगे कि हे सनत्कुमार सब धर्मोंमें उत्तम ऐसा एक धर्म त्रिपुण्डका धारणहै सनत्कुमार जी बोलेकि हे महाराज त्रिपुण्ड की विधिमुझे उपदेश कीजिये कि क्योंकर किया जाता है औ यहभी बताइये कि किस२ स्थानमें किस बस्तु से कियाजाताहै औउसका प्रमाण क्या हैं तथा उसकेदेवता औ मंत्र कौन हैं तब महादेव जी बोले कि दग्ध किये हुवे गोमय अर्थात् गोबरकी भस्मसे त्रिपुण्ड्र कियाजाता है सद्योजातआदि पांच मंत्रों से भस्म ग्रहण करै पीछे अग्निरिति भस्म आदि मन्त्रों से मन्त्रित कर मानस्तोके इत्यादि मन्त्र से हाथ में जल से मर्दन कर त्र्यायुष आदि मन्त्रोंसे ललाट दोनों भुजा स्कंध इन स्थानों में तीन २ रेखा करै ललाट में भ्रूमध्य से ले भ्रू के अन्ततक दहिने हाथ की मध्यमा अनामिका औ अंगुष्ठ से तीन रेखा कर प्रतिलोम तीन रेखा दूसरी ओर करे तीन रेखाओं के नौनौ देवता हैं तिन में पहिली रेखा के अकार, गार्हपत्य, अग्नि भूमि, आत्मा, रजोगुण, ऋग्वेद, क्रियाशक्ति, प्रातरसवन औमहा देव दूसरी रेखा के उकार, दक्षिणाग्नि, आकाश, सत्वगुण, यजु-

बेद, मध्यंदिन सवन, इच्छा शक्ति, अन्तरात्मा औ महेश्वर हैं तीसरी रेखा के मकार आहवनीय अग्नि, जल, परमात्मा, तमोगुण ज्ञानशक्ति, सामवेद, तृतीयसवन औ शिव ये देवता हैं इनकोनित्य नमस्कार कर पवित्रहो त्रिपुण्ड धारण करे जो पुरुषइस भस्म धारण रूप माहेश्वर व्रत का सदा सेवन करते हैवे मुक्तिपातेहैं त्रिपुण्ड के धारण करने से ब्राह्मणक्षत्रिय आदि तथाब्रह्मचारी गृहस्थ आदिसब पातक, उपपातक, महापातकों से मुक्तहोजाते हैं जो अज्ञान से अर्थात् बिना मंत्र जाने भी भस्म धारण करते हैं उनके भी सब पातक कटजाते हैं फिर जो बिधिसे त्रिपुण्ड करें उनकी तो क्या कथा पराया धन हरना, परस्त्री गमन करना, पराया क्षेत्रछीन लेना, किसी का घर अग्निसे दाह करदेना, झूठ बोलना, पिशुनता करनी, झूठीसाक्षी बन जाना, कपट पराई निन्दा, नीच की सेवा, भूमि, गो, महिषी, तिल, कंबल, वस्त्र, अन्न जल आदि का नीच से दान लेना दासी, बेश्या, व्यभि चारिणी स्त्री रजस्वला, कन्या, बिधवा, आदिका संग करना, मांस, चर्म लवण आदिरस, का बेचना इत्यादि अनेक पाप भस्मके त्रिपुण्ड धारण करतेही बिलाय जाते हैं केवल शिवजीका धनहरण, शिवजीओ उसके भक्तों की निन्दा करनेसे जो पाप होता है वह किसी प्रायश्चितसे नहीं मिट सकता बाकीसब पाप भस्म धारण करने से निश्चयही दूर हो जाते हैं रुद्राक्ष औ भस्म धारण करनेवाला चंडाल भीसब वर्णों से उत्तम औपूज्यहै ललाटमें त्रिपुण्ड धारण करनेसे गंगाआदि तीर्थोंके स्नानकाफलघरबैठे मिलजाताहै शिव पंचाक्षरका आदिले सातकरोड़ मंत्रोंके जपसे जो फलहोताहै वही त्रिपुण्डके धारण कियेसे होता है हजार पीढ़ी पिछली औ हजार अगिली त्रिपुण्ड के धारण से स्वर्गपाती हैं त्रिपुण्ड धारण करने

वाला पुरुष संसारके सबसुख भोग दीर्घआयुष् पाय अंतमेंदिव्य देहधारकर बिमानपरचढ़ देवस्त्रियों करकेसेवित, बिद्याधर, सिद्ध गन्धर्ब, औ इंद्रादिदेवताओं के उत्तम२ लोकों में सबभोग भोगता ब्रह्मलोक में जाताहै वहां सौ कल्पतक निवासकर बिष्णु लोकमें जाता है वहां भी दिव्य कल्पतक सुखभोग कर शिवजीकेसमीप पहुंचता है औ वहांसे फिरकभी नहींलौटता इतना कह कालाग्नि रुद्र बोले कि हेसनत्कुमार यह सबबेदका सार भलीभांति बिचार कर तुझसे कहाहै तू भी इसको गुप्त रखना भस्म के त्रिपुण्डका माहात्म्य कहांतक कहें यह हमने थोड़ासा कहाहैइतनासुन अपने को कृतार्थ मान महादेवजी के चरणों पर प्रणाम कर सनत्कुमार जी ब्रह्मलोक को जाते भये औ उसी दिनसे नित्य भस्म धारण करने लगे इतनी कथा ब्रह्मराक्षसके प्रति बामदेवजी सुनाय कहने लगे कि इस भस्मके लगाने सेही तेरी निर्मल बुद्धि होगई है अब तू भक्तिसे त्रिपुण्ड धारण कर इतना कह बामदेव मुनिभस्म अभि मंत्रण कर राक्षस के प्रति देते भये वहभी उस भस्मका त्रिपुण्ड माथे मेंलगातेही उस शरीर को त्यागअति प्रकाशमान् दिव्यदेह धार भक्तिसे बामदेव योगीको प्रणाम कर बिमान पर चढ़ पुण्य लोकको जाता भया बामदेव योगी भी इस प्रकार उसको मुक्तिदे संसार में जीवों का कल्याण करते हुवे बिचरनेलगे इतनी कथा शौनक आदि ऋषियोंको सुनाय सूतजीने कहा कि यह भस्म के त्रिपुण्डकामाहात्म्य जोपुरुष सुने वा सुनावे वहभी उत्तम गति पावे औ जो पुरुष सदा शिवजीके गुण गावेसदा शिव जी के चरण में शिरनमा का वे औ भस्म का त्रिपुण्ड ललाट में लगावे वह कभी माताके गर्भमें नआवे ॥

—

सचहवां अध्याय॥

शौनकआदिऋषि पूछतेहैं कि हेसूतजी वेदवेदांग के जानने वाले औ ज्ञानीगुरुसे उपदेश पायसिद्धिहोतीहै परंतुजोऐसागुरुन मिले तो साधारण गुरुसे उपदेश लेने में किस प्रकार कीसिद्धि होती है यह आप कहैं इसप्रकार मुनियों का प्रश्न सुन सूतजी बोले कि हेमुनीश्वरो सबधर्मों का हितकरने वालीमाताकीभांति श्रद्धाही है औ श्रद्धासेही दोनों लोककी सिद्धिहोतीहैश्रद्धासेएक पत्थरकीभीसेवाकरो तोवहीसबमनोऽर्थपूरेकरदेताहै भक्तिसे मूर्ख गुरुकी भीपूजाकरो तोसबबातसिद्धिहो जाती है श्रद्धा से कोईमंत्र जपो वहीफल देता है श्रद्धा से देवता नीचपरभी प्रसन्नहोजाते हैं औ बिना श्रद्धाकरे हुवे पूजन,दान,यज्ञ,तप,जप,सबनिष्फल होते हैं जैसेबांझ वृक्षके फूल जो पुरुष सबबातोंमेंसंशयही किया करे औ श्रद्धासे हीन अति चंचल औ परमार्थ से भ्रष्ट वहकभी सिद्धि नहीं पाता मन्त्र,तीर्थ,ब्राह्मण,देव,ज्योतिषी वैद्य औ गुरुमें जैसी जिसकी भावना है वह वैसाही फल पाता है इस लिये संसार में भावनाही मुख्यहै औ पुण्य पाप भी भावना से ही होते मैं औ भावनाहीन पुरुष को न पुण्यहोयन पाप इसमें एक बड़ा आश्चर्य करने वाला इतिहास हमकहते हैं जिसके सुनने से सबमनुष्यों को श्रद्धाउत्पन्न होय॥ कथा॥

पांचाल देशके राजा का पुत्रबड़ा पराक्रमी जैसे इंद्रका पुत्र अनर्जुसिंह केतु नाम था वह एक दिन थोड़ीसी सेना साथ ले मृगया करने बनमें गया औ अनेक सिंह व्याघ्र आदि दुष्टजीवों को मारनेलगा इसी अवसरमें उस राजपुत्रका सेवक एकभील आखेट के अर्थ बनमें बिचरता हुवा एक फूटे टूटे शिवालय को

देखता भया औ उसके भीतर घुस देखता है कि अति मनोहर शिवलिंग एक फूटीसी जलहरी के पासपड़ाहै देखतेही उसशिवलिंग को उठाय राजापुत्रके समीप ले आया औ कहने लगा कि महाराज देखिये क्या उत्तम शिवलिंग मुझे मिला है अब मैंइसकी पूजा किया चाहता हूं आप मुझे बतावें कि बिना मंत्र क्योंकर शिवजी की पूजा करो औ शिवजी मेरे ऊपर प्रसन्न होजांय यह उस भीलका बचन सुन राजपुत्र हंसकर बोला कि इसकी तो सूधीसी बिधि है पहिले तो सुन्दर नये जल से शिवलिंग को स्नान कराय दे पीछे अपने आगे सिंहासन पर धर कर गंध, अक्षत, पुष्प, बिल्वपत्र, धूप, दीप आदि जो हाथलगे सो चढ़ावे औ चिताका भस्म चढ़ाय पीछे जोकुछ अपने घर में भोजन बनाहोय वह महादेव जी को नैवेद्य लगा देवे औ फिर धूप दीप आदि उपचार कर नमस्कार कर प्रसाद लेवे पीछे नाचना गाना बजाना जो कुछ आता होय सो महादेवजीके आगेकरे यह साधारण शिवपूजा की बिधिहै परंतु चिता भस्म के चढ़ाने से शिवजी महाराज बहुत शीघ्र प्रसन्न होतेहैं राजपुत्रने तो उससे यह बात हंसी में कही परंतु उसने ठीकमान उसके बचन को सिर पर धर अपने घरमें जा वह चंडक नाम भील उसी प्रकार नित्य पूजा करने लगा औ चिता का भस्म नित्यही चढ़ाता औ अपने कोजो बस्तु प्रियहोती वही महादेव जीको निवेदन करदेता इस प्रकार वह भील औ उसकी भीलनी सुख पूर्वक भक्ति से महादेव जीकी पूजा करते हुवे कई वर्ष बिताते भये एक दिन वह शवर पूजा करने लगा औ जब चिता भस्म चढ़ाने के अर्थ पात्रमें देखा तो थोड़ासा भी न मिला औ वह पात्र खाली पाया जो सदा चिता भस्म से भरा रहता था तब

घबड़ा कर पूजासे उठा औ स्मशान मेंगया परंतु वहां भी दैव योगसे उसदिन भस्म न मिला तबतो ब्याकुल हो दूर २ तक भटकता फिरा परंतु कहीं भस्म न पाया तब श्रांत हो घरआया औ अपनी स्त्रीसे कहने लगा कि हे प्रिये आज चिता भस्म कहीं भी न मिला आज मेरी शिवपूजा में बिघ्न भया औ पूजा बिन किये मैं एकदिन भी नहों जीना चाहता मुझे गुरूकी यहीआज्ञा है कि चिता का भस्म अवश्य चढ़ाना चाहिये औ आज कोई प्रकार भी चिता भस्म न मिला अब मैंक्या करूं इस प्रकार भर्ता का बचन सुन वह शवरी बोली कि आप ऐसे ब्याकुल क्यों होतेहैं मैं उपाय बताती हूं कि इस घरमें आग लगादो औ मैं उस अग्नि में प्रवेश कर जाऊंगी वही मेरी भस्म आप लेकर श्रीशिवजी पर चढ़ाय अपना नियम पूरा कीजिये यह अपनी पत्नी का बचन सुन भील बोला कि धर्म अर्थ काम औ मोक्षके साधन सुखके योग्य औ नये यौवन से युक्त इस देहकोतू क्यों कर त्यागना चाहती है अभी तेरे कुछ संतान भीन भई न कुछ तैंने संसार का सुख देखा अब उत्तम भोग के योग्य इस शरीर को मत त्यागकर यह पतिका बचन सुन शवरी बोली कि हे प्रिय दूसरे के अर्थ प्राण देने से हीजन्म सफल होताहै फिरश्री शंकर के निमित्त जाय तो क्या उत्तम बातहै गो औ ब्राह्मण तथा देवता के अर्थ जो प्राण त्यागते हैं वे सद्गति पातेहैं कोई बड़ा भारी तप दान अथवा अनेक जन्मोंमें शिवजी का आराधन मैंने किया होय वा मेरे माता पिता का कुछ प्रबल पुण्य होतो मेरा शरीर शिवजी के अर्थ लगे अब आप बिलंब न करें मुझे यही आज्ञा दीजिये यह उसका बचन सुन औ दृढ़ निश्चयदेख वह भीलभी स्वीकार करता भया वह भीलनी पतिकी आज्ञा

पाय स्नानकर वस्त्र भूषण पहिन घरमें अग्नि लगाय तीन प्रदक्षिणा अग्निकी कर गुरु को प्रणाम कर हृदय में शिवजी का ध्यान करती हुई हाथ जोड़ यह स्तुति पढ़ने लगी॥

॥ स्तोत्र॥

॥ शवर्य्युवाच॥ पुष्पाणिसंतुतवदेवममेन्द्रियाणिधूपोगरुर्ब पुरिदंहृदयंप्रदीपः। प्राणाहवींषिकरणानिनवाक्षतास्तेपूजाफलं व्रजतुसाम्प्रतमेषजीवः १ बांछामिनाहमिहसर्वधराधिपत्यं न स्वर्गभूमिमचलांनपदंबियातुः। भूयोभवामियदिजन्मनिजन्म निस्यांत्वत्पाद पंकजलसन्मकरन्दभृंगी २जन्मानिसन्तुममदेव शताधिका निमाया नमेबिशतुचित्तमबोधहेतुः। किंचक्षणार्द्धमपि तेचरणारबिन्दान्नापैतुमेहृदयमीशनमोनमस्ते ३

इसप्रकार महादेवजीकी स्तुतिकर शिवजीका स्मरणकरती हुई उस अति प्रचंड अग्नि में कूदपड़ी औ क्षणमात्र मेंहीं भस्म होगई शवर भी वह भस्म ले एकांत में बैठ शिव पूजा करने लगा औ भक्ति के आवेश में यहभी भूलगया किमेरी स्त्री आज दग्ध होगईहै जब पूजा करचुका तो नित्यके अभ्यास से प्रसाद लेनेके अर्थअपनीपत्नीकोबुलायावहभीनित्यकीभांतिभक्तिसेहाथ जोड़ संमुख आखड़ी हुई तब शवरको स्मरणहुवाकियहतोभस्म होगईथी औघरभी दग्ध होगयाथा अबयहपूर्ववत्कहांसेआगयी यहमुझेभ्रमहै कि स्वप्नहै अथवा और कुछ परमेश्वर की मायाहै इसभांति अनेक बिकल्प मनमें करताहुवा अपनी शवरी से पूछने लगा किहे प्रिये तूतौ भस्म होगईथी अबप्रसाद लेनेकहांसे आय खड़ी भई औ यह घर भीदग्ध होगया था औ अब पहिले सेभी उत्तम बन गया यह क्या चमत्कार है यह भर्ताका बचन सुन शवरी कहनेलगी कि महाराज जब मैंने अग्नि में प्रवेश किया

तबसेही अपनी औ आग्नकी सुधभूलगई औ अग्नि का ताप मुझे यत्किंचित् भी न हुआ जैसे अमृत के समुद्र में प्रवेश कियाहो औ आपका शब्द सुनकर जैसे निद्रासे उठीहूं इसप्रकार अति शीघ्रता से उठ प्रसादलेने आई औ घरभी दग्ध हुआ नदेखा इसप्रकार दोनों आपस में आश्चर्य से बातचीत करहीरहे थे कि एक दिव्य बिमान आकाशसे उतरा औ जहां ये दोनों थे वहां पहुंचा उस बिमान में चार शिवजी के गणथे उन्होंने शवर औ शवरीको हाथ पकड़ बिमान पर बैठालिया औ शिवदूतोंके हाथ का स्पर्श होतेही वे दोनों दिव्य देह हो शिवलोक को जातेभये इतनी कथा सुनाय सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो सब पुण्य कर्मों में श्रद्धाही फल देनेवाली है देखो वह नीच जाति भील भी श्रद्धा के प्रभाव से उस उत्तम गतिको प्राप्त भया जो योगियों को भी दुर्लभ है इससे नतो कुछ उत्तम कुल में जन्म पाने से होता है औ न शास्त्र वेद आदि के पढ़नेसे हो केवल जिसके हृदय में परमेश्वर की भक्ति होय वही सब कल्याण पाताहै औ तीनलोक में धन्य माना जाता है ॥

अठारहवां अध्याय ॥

सूतजी कहतेहैंकिहे मुनीश्वरो अब हम सब धर्मोंमें उत्तम औ सब सिद्धि को देनेहारा उमा माहेश्वर व्रत कहते हैं ॥ कथा ॥ आनर्त देशमें अति विद्वान् कलत्र पुत्र मित्रोंसे युक्त उत्तम कुल एक वेदरथ नामक ब्राह्मण था उसक घर में एक कन्या उत्पन्न भई वह अति रूपवती थी औ नाम उसका शारदा था जब वही बारह वर्षकीभई तब एक पद्मनाभ नामब्राह्मणकि जिसकी स्त्री मृत्यु वश होगई थी उस कन्या को वेदरथ से मांगता भया

वह बेदरथ भी उस ब्राह्मण को सदाचार धनवान् औ कुलीन देख अपनी कन्याका बिबाह उससे करदेता भया वहभी बिबाह के अनन्तर अपने श्वशुर के घरमें एकदिन सायं संध्या करने को ग्रामके बाहर किसी सर पर गया वहांसे सन्ध्या बन्दनकर अंधेरेमें घरको चलाआताथा कि मार्गमेंकाले सांप ने डसा औ घरपहुंचते २ मृत्युवश भया इसप्रकार उसको मृत्युबश भये देख सब बन्धु औ श्वशुर मिलाप करनेलगे औ अति दुःखीहो डसका क्रिया कर्मकिया शारदा भी बिधवा हो पिता के घरमेंही रहने लगी इसप्रकार कुछ मास बीतने के अनन्तर एक वृद्ध अंधा औ शिष्य को लाठी पकड़ाये ब्राह्मण उनके घर आया औ उससमय शारदाही घरमेंथी और सब इधर उधर गयेथे वह उस वृद्ध ब्राह्मण को देख अति प्रसन्नभई औ भक्ति से उसका सत्कार करनेलगी कि प्रथम तो उन के पाव धोय आसन पर बैठाय ब्यानलेपवन करनेलगी जब उनका परिश्रम दूरभया तब चौकी पर बैठाय सुंदर सुगन्ध तैल अपने हाथसे उनके देह में मर्दन कर उष्ण जलसे स्नान कराया जब वह ब्राह्मण स्नान कर पूजा आदि कर चुका तब आसन पर बैठाय भांतिके २ भोजन कराय पुष्प माला आदि पहिनाय अति मृदुल शय्या बिछाय उनको सुलाया इसप्रकार अतिसत्कार पाय वह ब्राह्मण अति प्रसन्न हो आशीर्बाद देनेलगा कि हे पुत्रि बहुत काल तक अपने भर्ता के साथ संसार के सुख भोग सबगुणों करके युक्त उत्तम पुत्र पाय औ बहुत कीर्त्ति संपादन कर अन्त में सद्गति पावेगी यह उस वृद्ध ब्राह्मण का बचन सुन हाथजोड़ शारदा कहनेलगी कि महाराज आप का बचन तो कभी अन्यथा नहीं होगा परन्तु मैं अति मन्दभागिनी हूं इस हेतु मेरे बिषय में

यह बचन क्योंकर सफल होगा जैसे शिलापर वृष्टि व्यर्थ होती है इसीभांति आपका आशीर्वाद मुझ मन्द भाग्या में व्यर्थहुआ कि मैं विधवा हूं यह उसका बचन सुन ब्राह्मण बोला कि हे पुत्रि मैं अन्यहूं औ बिनाजाने यह कह दिया अबजो तू मेरे कहने पर चले तो यह आशीर्वाद कभी वृथा न जाय मैं तुझे उमा माहेश्वर व्रत का उपदेश करताहूं वह तू किया करे तो परम कल्याण पावे यह सुन शारदाबोली कि महाराज आप उस व्रतका बिधान मुझे बताय देवें तो मैं अवश्य किया करूं तब मुनि बोले कि चैत्र वा मार्गशीर्ष मास के शुक्लपक्ष में उत्तम दिन से आरंभ करे औ अष्टमी तथा चतुर्दशी के दिन बिधि पूर्वक संकल्पकर स्नानकरे औ पितर देवता आदि का तर्पणकर घर आय सुंदर मंडप बनाय उसको बितान, पुष्प, पत्र, तोरण, कदलीस्तंभ आदि से शोभित कर बीच में पांचरंगों से कमल बनावे उस पद्मके बाहर चौदह दल भीतर बत्तीस दल उसके भीतर सोलह दल औ उसके भीतर आठ दलका कमल रचै उसके बाहिर एक वृत्त बनाय चतुरस्र करे उस को चावलों से पूर्ण कर मध्यमें कुशा का कूर्च बनायरक्खे औ उसके ऊपर धान्य से भरा हुवा कलश स्थापन कर उसके ऊपर एक पात्र धर उसमें सुवर्णकी महादेव औ पार्वतीजी की मूर्ति स्थापन करे फिर पंचामृत औ शुद्ध जल से स्नान कराय ग्यारह पाठ रुद्राध्याय के आठसौ जप पंचाक्षर का कर सुवर्ण की पीठ पर मूर्ति रख देवे आप भी शुद्ध आसन पर बैठ श्वेत बस्त्र धार कर आसन शोधन, प्राणायाम, भूत शुद्धि आदि कर्म करके हाथ जोड़ संकल्प करे जो घोर पाप मैंने अनेक जन्मोंमें किये हैं उनके बिनाश करने को औ सौभाग्य, बिजय, आरोग्य धर्म, ऐश्वर्यकी वृद्धिके अर्थ तथा स्वर्ग औ मोक्ष प्राप्तिके हेतु मैं

शिव पूजन का आरम्भ करता हूं इस प्रकार संकल्प का उच्चारण कर अंगन्यास करे पीछे इस भांति शिवजीका ध्यान करे कि अति शुक्लवर्ण सर्पोंके सब भूषण धारे कोटि सूर्यके तुल्य प्रकाशमान् चार हाथोंमें बर, अभय, परशु औ मृग लिये गंगाके जलसे जिनकी जटा आर्द्र हैं मस्तक पर नागके फणोंका मुकुट औ चंद्रकला धारण किये हैं एक नेत्र सूर्य औ दूसरा जिनका नेत्र चन्द्रमा है नील कंठ हैं औ तीसरे नेत्रसे अति शोभायमान् हैं हाथीका नया चर्म ओढ़े हैं अनेक भूषण पहिने रत्नसिंहासन पर बैठे हैं इस प्रकार शिवजीका ध्यान कर उनके वाम भागमें पार्वतीजीको ध्यावे कि नई जिन की अवस्था सूर्य के तुल्य तेज चन्द्रकला मस्तक पर धारे चार हाथोंमें पाश, अंकुश, बर, अभय धारण किये हैं अनुग्रह करने को सुमुख कुरबक, अशोक चंपा, नागकेसर आदि उत्तम पुष्पोंसे भूषित अति विस्तीर्णजघनस्थलमें कांची पहिने दोनों पैरोंमें शब्दायमान् किंकिणियों करके युक्त नूपुर धारण किये कुंडलोंकी झलकसे जिनक कपोल अति शोभायमान हो रहे हैं माणिक्य आदि उत्तम रत्नोंके सब भूषण औ रक्तवस्त्र धारण कर रही हैं नवीन ही जिनके कुचोंका उदय हो रहा है भक्तों के मनोऽर्थ पूर्णकरनेहारा जिनका चंचल कटाक्ष है इस प्रकार अपने हृदयमें शिव पार्वती का ध्यान कर मूर्तिमें आवाहन करेऔआसन दे॥ नमस्तेदेवदेवेशि प्रपन्नभय हारिणि अम्बिकेबरदेदेवि गृहाणार्घंशिवप्रिये १ नमस्ते पार्वती कान्तत्रैलोक्यवरदर्षभ त्रिअम्बकमहादेव गृहाणार्घनमोस्तुते२ इस मंत्रको तीन बार उच्चारण कर अर्घ देवे फिर स्नान कराय गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप आदि भक्तिसे चढ़ाय घृत औ पायस का नैवेद्य लगावे औमूलमंत्रसे अष्टोत्तरशतहवनभी करे

तिस पीछे खड़ा हो आरती कर तांबूल चढ़ाय नमस्कार कर ब्राह्मण ब्राह्मणी की पूजा कर भांति २ के भोजन उनको कराय आप भी रात्रिके समय क्षोर आदि हबिष्य बस्तु मौनसे भोजन करे इस प्रकार दोनों पक्षोंमें यह व्रत एकबर्ष पर्य्यंत कर उद्यापन करे शत रुद्रसे प्रतिमाओंको स्नान कराय भक्तिसे पूजाकर कलश, बस्त्र, सुबर्ण, प्रतिमा आदि सब सामग्री आचार्यको भेंट कर यथा शक्ति ब्राह्मण भोजन कराय गो, भूमि, सुबर्ण आदि दक्षिणा दे व्रत समाप्त करे इस बिधि जो व्रत करे वह इक्कीस कुलका उद्धार करता है औ बहुत काल सुखपूर्बक संसारके सब भोग भोगकर अंत में इन्द्र आदि लोकपालों के स्थान में रमण कर क्रमसे ब्रह्मलोक बिष्णुलोक औ शिवलोक में प्राप्त होता है इतना कह वह वृद्ध मुनि बोला कि हे पुत्रि तू भी इस व्रतको करे तो अति दुर्लभ मनोऽर्थको भी अवश्य पावे यह मुनिका बचन शारदा ने अति प्रसन्न हो दृढ़ बिश्वास से ग्रहण किया इसी अवसर में उसके माता पिता भी आयपहुंचे औ अंध ब्राह्मण को सुख से बैठे देख भक्ति से प्रणाम करते भये औ अपनी पुत्री से सब वृत्तान्त सुन अति मुदित हो कहने लगे कि महाराज आज हम कृतार्थ भये औ हमारा कुल पवित्र भया कि आप हमारे घर आये यह हमारी कन्या किसी पूर्व जन्म के पाप से बिधवा होगई सो आपके शरण है आप इसका किसी प्रकार इस दुःख समुद्रसे उद्धार करें आप भी इस हमारे घरमेंही रहें औ परमेश्वरका भजनकरें यह कन्या आपकी सेवा निरंतर किया करेगी औ आप का बताया हुवा व्रत भी करेगी जब तक इसका व्रत पूरा होय तब तक आपहमारे घरकोही पवित्रकरे रहैं और कहीं जाने की इच्छा न करें इस प्रकार शारदा के माता पिता औ

ग्रामके सब मनुष्यों की प्रार्थना सुन वह वृद्ध मुनि वहांहीं निवास करने लगा औ शारदा भी उत्तम दिन देख भक्ति से मुनि का बताया हुवा व्रत करने लगी औ पवित्र हो अति प्रेमसे शिव पार्वतीजी की पूजा भी करना आरम्भ किया ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो इसप्रकार वृद्ध मुनि की आज्ञा पाय शारदा व्रत करनेलगी औ नियम पूर्वक एक वर्ष बीता औ व्रत समाप्तभया तब उस मुनि की आज्ञानुसार उद्यापन किया औ ब्राह्मण भोजन कराय दक्षिणा देकर उसदिन आप निराहार रही औ सायंकाल को फिर शिवजीकी पूजाकर गुरूके समीपबैठ जपकरनेलगी औ वह वृद्ध मुनिभी जपध्यान आदि से जगदंबा को प्रसन्न करताभया इसप्रकार दोनों भक्ति से भगवती का आराधन करनेलगे उन दोनोंकी दृढ़ भक्ति देख प्रसन्न हो भगवती प्रकट भई उनके दर्शनसेही उस अंधमुनि केनेत्र खुलगये तबतो दोनों पार्वती जीके चरणोंपर प्रणाम करते भये औ बड़ी प्रीति से रोमांचित हो स्तुतिकरी इसप्रकार उन का प्रेम देख पार्वतीजी प्रसन्न हो कहती भई कि बर मांगो जो तुम चाहते हो तब मुनि बोले कि माता इस बिधवा कन्या को मैंने यह आशीर्बाद दिया कि भर्त्ता के साथ बहुत कालतक सुख भोगकर यह मेरा आशीर्बाद जिसप्रकार सत्य होय वह आप अनुग्रह करैं यह मुनि की प्रार्थना सुन जगदंबा ने कहा कि यह शारदा पूर्वजन्ममें एक द्रविड़ ब्राह्मण की भामिनी नाम छोटी भार्या थी इसने अपने रूप औ बशीकरण आदि से पति को अपने ऐसा आधीन किया कि बड़ी स्त्री की ओर कभी भी नहीं

देखता जो कि अति पतिव्रताथी वहभी पतिकी प्रीति न होनेसे दिन रात शोक करतीहुई संतान हीनही मृत्युवश होगई औ एक ब्राह्मण अति तरुण इनके घरके समीप रहाकरता था उसने इसका उत्तम रूप देख एकांत में इसका हाथ पकड़ लिया तब इसने क्रोधकर उसका तिरस्कार किया परन्तु वह इसमें अति आसक्त था इस लिये दिन रात इसी का स्मरण करता हुआ बिरह से मरगया इन पापों से यह बाल्यावस्था में बिधवा भई क्योंकि जो स्त्री भार्या औ भर्ता के प्रेम में भंग डालती हैं वे इक्कीस जन्म तक बिधवा होती हैं परन्तु पूर्वजन्म में भी इसने मेरी बहुत पूजाकी थी इससे इसका वह पाप नष्ट होगयाहै औ वह ब्राह्मण जो इसके बिरह की व्यथा से मृत्यु वश होगया था सो इसका इस जन्म में पद्मनाभ नाम पति भया औ बिवाह करतेही मृतभया औ इसका पूर्वजन्म का पति पांड्यदेश में उत्तम ब्राह्मणके कुलमें जन्माहै औ स्त्री पुत्रादि सबसंपति करके युक्तहैं वही प्रतिदिन स्वप्न में इसके समीप आया करेगा औ उसके स्वप्न के संग मेंभी प्रत्यक्ष संगसे अधिक सुख होगा वह यहां से तीनसौ साठ योजन दूर है परंतु मेरे बरसे इसको स्वप्न में नित्य मिलेगा औ उसीके संगसे अति उत्तम वेद वेदांग के जानने वाला पुत्र इसके उत्पन्न होगा औ जब कभी वह ब्राह्मण तुझे प्रत्यक्ष कहीं देखेगा तो जानलेगा कि यह वही मेरी प्रिया है जिसका मुझे स्वप्न में नित्य समागम होता है औ तू भी उसको पहिचान लेगी तब अपना पुत्र तू उसको समर्पण कर इस व्रतका भी आधा फल उसको दे उस दिनसे उसीके आधीन रहना परंतु तुम्हारा देह से संग न होगा स्वप्नमेंही हुआकरेगा जब वह तेरा पति मृत्युवश होय तब तू उसके संगसती होना तो

दोनों तुममेरे लोकमें प्राप्तहोगे थोड़ेदिनों मेंही तेरे पुत्रहोगा औ सब संपत्ति भी मिलेगी तथा अंतमें मेरालोक भी पावगी सूतजी कहते हैं कि इतना कह पार्वतीजी तो अंतर्द्धान भईं औ शारदा भी वरपाय प्रसन्न हो गुरुको प्रणाम करतीभई वहवृद्ध मुनि भी भगवतीके दर्शनसे दिव्यनेत्र हो प्रभात होतेही शारदा के माता पिता को सबवृत्तांत एकांत में सुनाते भये औ इसप्रकार शारदा को दुःखसे उबार अपनी इच्छानुसार जाते भये शारदा भी प्रति रात्रि स्वप्नमें भर्तासेसंग करनेलगी औ भगवती के अनुग्रह से थोड़े दिनोंमेंही गर्भवती होगई जब यह बात प्रसिद्ध भई तब सब भाई बंधु चर्चा करने लगे कि यह व्यभिचारिणी है औ उसके पतिके बंधु भी सब वहां आये औ ग्रामके सब वृद्ध इकट्ठे भये औ शारदाको वहां बुलाय धिक्कार देने लगे कि हे पापिनी तैंने हमारे कुल को कलंक लगाया यह तैंने क्या किया इस प्रकार उनका बचन सुन कर भी शारदा ने कुछ उत्तर न दिया औ लज्जासे नीचे शिर किये खड़ीरही तबतो उन सबने परस्पर बिचार किया कि इस दुष्टा को शिर मूड़ नांक कान काट ग्राम से बाहर निकाल दो जहां इसकी इच्छा हो वहां चलीजाय यह जब उनने निश्चय कर लिया तो आकाश बाणी भई कि इसने कुछ पाप नहीं किया है औ न यह कुलको दूषण लगाने हारी है यह अति सुशीला है आजसे जो पुरुष अथवा स्त्री इस को व्यभिचारिणी कहेंगे उनकी जिह्वा टुकड़े २ होजायगी यह आकाश बाणी सुन कई तो प्रसन्न भये औ कई भयभीत हो नीचे देखने लगे औ कोई दुष्ट ईर्षा से कहने लगे कि इस आकाश बाणी का क्या बिश्वासहै यह कहतेही उनकी जिह्वा बिदीर्ण होगई औ मूर्छित हो गिरपड़े यह चमत्कार देख सब

शारदा की प्रशंसा करने लगे औ ग्राम की सब वृद्ध २ स्त्रीं उसको आलिंगन कर अश्रुपात करने लगीं कई मनुष्य यह संदेह करने लगे कि देवताओं की वाणी तो अन्यथा कभी होती ही नहीं इसलिये शारदा अपने धर्ममें स्थिरही है परंतु पुरुषके संग बिना इसके गर्भ होगया यह बड़ा आश्चर्य है तब एकवृद्ध बोला कि कुछ आश्चर्य नहीं यह मायामय संसार है इसमें सब कुछ होसकता है कोई भी असंभव नहीं औ ईश्वर की गति कोई नहीं जानता देखो धूम्रकेतु नाम एक राजर्षि का बीर्य जलमें गिरा उस जलके पीने से एक बेश्या गर्भवती होगई बिभांडक मुनि का बीर्य जलके साथ पीजाने से हरिणी गर्भवती होगई औ उसके पेटसे ऋष्यश्रृंग उत्पन्न भये सुराष्ट्र राजा के शुक्र के स्पर्श होतेही हरिणी के गर्भ रहा औ एक बड़ा तपस्वी पुत्र उसके हुवा वेदव्यास जीकी माता सत्यवती मच्छी के गर्भ से उपजी महिषी के पेट से महिषासुर निकला इस प्रकार और भी कई स्त्रियों के गर्भ हुवे देवता औ ऋषियों के वर तथा शाप से सब बात हो सकती है देखो शांब के गर्भ से मुनि शाप के कारण लोह का मुसल उत्पन्न भया मुनियों के मंत्र प्रभाव से राजा युवनाश्व के गर्भ रहा इसी प्रकार यह शारदा भी मुनि के अनुग्रह से औ व्रतके प्रभाव से गर्भवती भई अब वृद्ध२ स्त्री इसको एकांत में लेजाय सब वृत्तांत पूछलेवें जिससे सब का संदेह दूरहो यह सुन वृद्ध स्त्री उस को एक ओर ले जाय सब वृत्तांत पूछती भई उसने भी सब कथा बिस्तार से कह सुनाई तब सबका संदेह दूर हुवा औ शारदाकी स्तुतिकरतेहुवे अपने २ घरगये शारदा के भी थोड़ेही दिनोंमें अति शुभ लक्षणों से युक्त पुत्र उत्पन्न हुवा जब वह अवस्था पर पहुंचा तो गुरु ने

उसका यज्ञोपवीत किया औ माता के नामसे उसको सब शारदेय नाम से पुकारते थे वह आठ वर्षकी अवस्था में तो ऋग्वेद का पारगामी भया औ नवें वर्ष में यजुर्वेद औ दशवें में सामवेद पढ़ सब वेदांग भी पढ़ता भया इस प्रकार वह थोड़ी सी अवस्था मेंही बड़ा बिद्वान् होगया कुछ दिनों के अनंतर शिवरात्रि का उत्सव आया औ सब मनुष्य गोकर्ण क्षेत्र को चले तब शारदा भी अपने माता, पिता, भाई, बंधु औ पुत्र सहित गोकर्ण यात्रा करती भई गोकर्ण में पहुंच महाबलेश्वर का दर्शन कर बाहर निकली कि वही पूर्व जन्म का पति जिसका स्वप्न में नित्य समागम होता था देखपड़ा औ उस ब्राह्मण ने उनको भी देखा औ पहिचाना कियह स्त्रीवही है जिससे नित्य मेरा संग होताहै औ बालक भी वही देख पड़ता है जो मैंने कईबार स्वप्न में देखाहै यह मनमें बिचार शारदा के समीप जाय कहने लगा कि मैं तुमसे कुछ एकांत में पूछना चाहताहूं यह कहि शारदा को एक ओर लेजा पूछने लगा कि तुम कौन हो औ तुम्हारे पति तथा पिता का क्या नामहै औ देश कौनहै यह सुन शारदा अश्रुपात करती हुई अपना सब वृत्तांत जन्म से सुनाती भई शारदा कासबसमाचार सुन ब्राह्मण ने पूछा कि यह अति सुन्दर बालक तुम्हारे साथ किसका है तब शारदाने कहा कि यह सर्व बिद्या में निपुण मेराही पुत्र है औ शारदेय इसका नामहै यह सुन ब्राह्मण हंसकर बोला कितुमतो कहती हौ कि बाल्यावस्था मेंही में बिधवा होगई फिर पुत्र कहां से उत्पन्न किया यह सुन शारदा कुछ लज्जित भई फिर धैर्य से कहने लगी कि आप हंसी न करें मैं आपको भली भांति जानती हूं औ आपभी मुझे पहिचानते हो इसमें हम दोनों का मनही

साक्षीहै कि जिस प्रकार यह पुत्र उत्पन्न हुवाहै इतना कह अपने व्रत आदि की सब कथा सुनाय व्रत का आधा फल औ वह बालक अपने पति उस ब्राह्मण के प्रति देतीभई वह ब्राह्मण भी शारदा के माता पिता की आज्ञा पाय शारदा तथा उसके पुत्रको अपने घर लेगया औ सबके सब सुखसे वहां निवास करने लगे थोड़े कालके अनंतर जब वह ब्राह्मण मृत्यु वशभया तब शारदा भी उसके साथ सतीभई औ दोनों स्त्री पुरुष दिव्य बिमान पर बैठ शिवलोक को जाते भये इतनी कथा सुनाय सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो यह आयु आरोग्य संपति धन धान्य,संतान,सुख देनेवाला औ स्त्रियों कासौभाग्य बढ़ानेहारा व्रत का माहात्म्य हमने कहा जो इसको भक्तिसे सुने औ कहे उसके सब पाप दूर होंय औ भोग मोक्ष निश्चयही पावे ॥

बीसवां अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो अब हम रुद्राक्षका माहात्म्य संक्षेपसे कहतेहैं जिसके सुननेसे सब पापोंका क्षय होय भक्ति से अथवा बिनाभक्ति कोई उत्तम पुरुष अथवा नीच भी रुद्राक्ष धारण करनेसे सब पापोंसे छूटजाताहै रुद्राक्षकेधारणसे जोपुण्य होता है वह गंगा स्नान के तुल्य है यह महा व्रत सब मुनिजन कहतेहैं कि एक सहस्र रुद्राक्ष जो पुरुष धारणकरे उसका देवता भी नमस्कार करतेहैं औ वह साक्षात् शिव स्वरूपहीहै जो सहस्र रुद्राक्ष न मिलसकें तो दोनों भुजाओं में सोलह २ दोनों हाथोंमें बारह२ एक शिखा और कंठमें बत्तीस मस्तकमें चालीस एकएक नेत्रोंपर छः २ कानोंमें अष्टोत्तर शतकी माला गलेमें इस बिधि जो पुरुष रुद्राक्ष धारे वहभी रुद्र के तुल्य होताहै मोती

मूंगा, स्फटिक, पन्ना, सोना, चांदी आदि से युक्त जो रुद्राक्ष धारण करै वहभी शिव स्वरूपही होजाताहै औ जो केवल रुद्राक्षही धारे उसको भी पाप नहीं स्पर्श करसक्ते जैसे सूर्य का अंधकार रुद्राक्षकी मालासे जपकरै तो अनन्त फल होताहै औ और मालासे जप करनेसेउतनाही फल होताहै जितनाजपकरै जिसके अंगमें एकभी रुद्राक्ष न हो उसका जन्म वृथा है जैसे त्रिपुण्ड्र हीन पुरुषका जन्म वृथा होताहै रुद्राक्षको शिरमें बांध जो शिरःस्नान करै वह गंगास्नान का फल पावै जो शिवलिंग की पूजासे फल होताहै वही रुद्राक्ष पूजासे भी होताहै परंतु रुद्राक्ष पर जल न चढ़ावे गंध अक्षतादिकों से पूजाकरै एकमुख पंचमुख एकादशमुख औ कोई २ रुद्राक्ष चौदह मुखके भी होते हैं जो भक्ति से रुद्राक्ष की पूजा कियाकरै वह दरिद्रीभी कोई दिन में कुबेर के तुल्य होजाय इस में एक कथा पुण्य की वृद्धि औ पाप क नाश करनेहारी हम वर्णन करते हैं ॥ कथा ॥

कश्मीरदेशमें एक भद्रसेननाम राजाभया उसकेसुधर्मा नाम बड़ा बुद्धिमान् औ पराक्रमी पुत्र था औ उसी राजा के मंत्रीका पुत्र अच्छेगुणों से युक्त तारकनाम था औ राजपुत्र तथा मंत्री की परस्पर मैत्रीभी बहुतथी वे दोनों अति सुन्दर बालक बाल्य अवस्थामें विद्याअभ्यास करनेके समयसेही सदारुद्राक्ष औ भस्म धारण कियाकरते सुवर्ण औ रत्नों के हार केयूर कंकण कुण्डल आदि भूषणों को छोड़ रुद्राक्षोंमेंही उनदोनों की बहुतप्रीतिथी सुवर्ण आदिके भूषणोंको केवल शरीरको भार औ पत्थर कंकर के बरोबर समझते औ अपने माता पिताकी आज्ञा भी न मान रुद्राक्षही सदा पहिने रहते एक दिन दैवयोग से पराशर मुनि वहांआगये राजानेबड़ी भक्तिसेउनकी पूजाकरीऔ सिंहासनपर

बैठाय हाथजोड़ कहनेलगा कि महाराज यहमेरा पुत्र औ यह मंत्री पुत्र ये दोनों बालक रत्नों के भूषण छोड़ सदा रुद्राक्षही पहिनतेहैं औ बहुत समझाये परंतु रत्नों के भूषणोंमें इनकीरुचि ही नहींहोती औ रुद्राक्ष धारण करने का किसीने इनको उपदेश भी नहीं किया यह स्वाभाविकही रुद्राक्ष धारणकी श्रद्धा इनके क्योंकर उत्पन्न भई यह राजाका बचन सुन पराशरमुनि बोले कि हेराजा इनदोनों बालकों की अति आश्चर्य कथा हम कहते हैं तुम सुनों नंदिग्राममें महानंदा नाम एक बेश्याथी औ उसके इतनी संपत्तिथी कि छत्र, चामर, पादुका, पालकी, चौकीआदि सब उत्तम २ रत्नोंसे खचित सुबर्ण के थे औ सोने के पलंग पीकदान,पानदान,गाय, महिषी, घोड़े, हाथी, औ रथ इतने थे कि किसी राजा के भी न होंगे औहजारों दास औदासी उत्तम२ भूषण बस्त्रोंसे भूषित जिसकी सेवामें रहतेथे औ केसर, कस्तूरी अगरु आदिसुगंध द्रव्योंकेजिसके घरमें ढेर लगेरहते इसप्रकार कई करोड़की संपत्ति उस वेश्याकेथी औ वह वेश्या इतनी शिव भक्ताथी कि निरंतर शिव पूजा शिव कथा शिव नाम स्मरण में तत्पर रहाकरती औ एक मर्कट तथा कुक्कुट दोनों को सदा रुद्राक्षों से भूषित कर चित्त बिनोद के हेतु नचाया करती औ आप उनके नाचने में तालदेती औ गाती वेदोनों भी ऐसा नृत्य सीख गयेथे किजैसा वहचाहती वैसाही नाचते औदेखनेवालों केचित्त कोभी आकर्षण करते एकदिन परमशैव एक बैश्य भस्म औ रुद्राक्ष धारण किये उस बेश्या के घर आयावह बेश्या भी उस को देख अति मुदित हो बहुत सत्कारसे समीप बैठाय उसके हाथ में एक उत्तम कंकण देखकहने लगी कि यह आपका कंकण मुझे बहुत अच्छा लगता है औ मेरे चित्त को आकर्षण करता है

क्योंकि यह उत्तम स्त्रीयों के पहिरने योग्य है यह उसका बचन सुन वहबैश्य हंसकर बोला कि जो आपकी इसरत्नके कंकणपर इच्छाहोतो लीजिये परंतु इसका मूल्य क्यादोगे यहसुन वेश्या ने कहा कि हम बेश्या हैं औ व्यभिचार कर धन का उपार्जन कर नाही हमाराधर्म है जो यह रत्न कंकणमुझे आप देवेंतो तीन रात आपके आधीन होजाऊं वैश्यने कहा कि बहुतठीकहै हमको भी स्वीकार है यह कह हाथ से रत्न कटक उतार उस को दे दिया औ एक रत्न का शिव लिंग भी उस बेश्या को दिया औ कहा कि यह शिवलिंग मेरे प्राणों के तुल्य है इसको तुम भली भांति रखना जो यह जाता रहेगा तो मेरे प्राणहीं जांयगे वेश्या ने भी कहा कि मै इस शिव लिंगको अच्छे स्थान में रख देती हूं यह कह नाट्यमण्डप के एक खंभे में रखदिया औ आप दोनों सुख पूर्बक एक पलंग पर सोगये इतनेमें अकस्मात् वहां अग्निलगी तब बेश्या घबड़ा कर उठी औ मर्कट तथा कुक्कुट को खोल दिया वेभी दोनों अग्निके भय से भाग कर दूर चले गये औ वहशिवलिंग वहांही अग्निके तेजसेटूक २ होगया शिवलिंग की यह दशा देख बेश्यने उस बेश्यासे कहाकि अबमैं क्षणमात्र भी नहीं जीना चाहता तू जल्दी मुझे चिता बनवादे कि मैंशिव जीका ध्यान करता हुवा अग्नि में प्रबेश करजाऊं जो मुझे इस समयब्रह्मा, बिष्णु, इन्द्र आदिकभी रोकनाचाहेंतौभी न रुकौंगाऔ अवश्य प्राणत्याग करूंगा यह उसका दृढ़निश्चय देख अतिदुःखी हो बेश्याने नगर के बाहिर चिता रचवाई वह बैश्यभी वहां जा उसमें अग्नि लगाय तीन प्रदक्षिणाकर शिवका ध्यान करताहुवा अग्निमें प्रबेशकरताभया तबवह बेश्या अतिक्लेशपाय अपनेबंधुओं से कहने लगी किमैंने इससे रत्न कंकणलेकर यह कहाथाकि तीन

दिन आपकी पत्नीहूं औ मेरे अपरावसेही इस महात्माको अग्नि में प्रवेश करना पड़ा इसलिये मैंभी इसशरीरको रखनानहीं चाहती औ जबमैंने यहभी कहाथा कि तीनदिन तुम्हारीसहधर्म चारिणी हूंगी इसलिये अब मुझे सत्यकी रक्षा करनी उचित है क्योंकि सत्य से सब देवता प्रसन्न होतेहैं सत्य से स्वर्ग औ मोक्ष मिलता है इसलिये मैंभी अग्नि में प्रवेश करतीहूं यह उसका बचन सुन उसके सब बन्धु व्याकुल हो समुझाने लगे परंतु उसने एक को नमानी औ अपनी सब संपति शिव भक्तों को बांटि स्नान कर अग्निकी तीनि प्रदक्षिणादे शिव का ध्यान करती हुई चिता में प्रवेश करतीहीथी कि शिवजीने प्रकटहो उसको रोंका वहभी सब देवताओं के गुरु मस्तकपर चंद्र धारण किये सूर्यचंद्र औ अग्नि जिनके तीननेत्र ऐसे महादेवजी को देख भय भीतसी बिह्वलसीजडसी हो खड़ी रह गई तब महादेवजी उसका हाथ पकड़ कहने लगे कि तेरे धैर्य,धर्म सत्य औ हमारे में भक्तिकी परीक्षा करने को वैश्यकारूप धार हमहींआयेथे औनृत्य मंडपमें मायासे अग्निभी हमनेहीं लगादी औ फिरि शिवलिंगका नाशहोनेसे वैश्य रूप करके अग्निमें भी हमनेहीं प्रवेश किया औ तैनेभी सच्चेसंकल्पसे अग्निमेंप्रवेश करना चाहा नहीं तो वेश्याओंमें सत्यकहां इसहेतु हम तेरेसे बहुत प्रसन्नहैं अबतुझे दीर्घ आयु आरोग्य औ उत्तम २ भोग जो देवताओंको भी दुर्लभ हैं देतेहैं औरभी जो कुछ तू चाहे वह मिले यह सुन बेश्याने कहा कि महाराज भूमि पर अथवा पाताल वा स्वर्ग में भी भोगनहीं चाहती यही चाहती हूंकि ये मेरेबन्धु दास दासी आदि आपकीपूजनमें तत्पर हं इन सबके सहित मुझे आप अपने लोकमें लेचलं औ फिर जन्म मरण का भयनहो इसप्रकार उसकी प्रार्थना सुन भक्त

वत्सल श्री महादेवजी उन सबको अपने लोकमें लेजाते भये औ वे दोनों मर्कट औ कुक्कुट अग्नि लगनेके समय जो दूर भगगये थे कुछकाल में मृत्यु बश भये उनमें से मर्कट तो यह तेरापुत्र भया औकुक्कुट मंत्रीका पुत्र भया रुद्राक्ष धारणके प्रभाव से उत्तम कुल में इन्होंनेजन्मपायाऔ पूर्व जन्मकेअभ्याससे येदोनों बालक रुद्राक्ष धारणकरतेहैं अब इसजन्ममें शिवजीका आराधन करदोनों अंतमें शिवलोकपावेंगे यहइनदोनोंबालकोंके पूर्वजन्मका वृत्तांतऔअति शिव भक्ताबेश्याकी कथासुनाई अब और तुमक्या पूछनाचाहतेहो॥

इक्कीसवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो इसप्रकार अमृतसे भीमीठी पराशर मुनि की बाणी सुन आनन्द में मग्नहो राजा कहने लगा कि महाराज सत्संग वड़ी बस्तु है इस से सब मनोर्थ सिद्ध होते हैं आप के संसर्ग से हमारा सब अज्ञान दूरभया औ दिव्य दृष्टि का प्रकाश भया औ इन बालकों के पूर्व जन्म का वृत्तांत भी सुना अब आप अनुग्रह कर यह बतावें कि इस मेरे पुत्र का आयुष् कितना है औ बिद्या शक्ति कीर्ति औ श्रद्धा इस-में कैसी होगी यह आप कृपाकर कहें मैंआपका भक्त औ शरणा-गत हूं यह पराशर मुनि राजा का बचन सुन कहनेलगे कि हे राजा यह बात कहने की तो नहीं है क्योंकि इसके सुनने से धैर्यवान् भी दुखी हो जाय परन्तु जो तुम सच्चे हृदय से पूछते हो तो यह बात है कि इस तुम्हारे पुत्रका आयुष् बारह बर्षका है सो अब पूरा हो आया आज से सातवें दिन यह मृत होजाय गा यह बज्रसा कठोर बचन सुनतेही राजा मूर्छित हो गिरपड़ा तब पराशर मुनि उस को उठाय मूर्छा दूर कर आश्वासन दे

कहने लगे कि राजा भय मतकर फिर तेरे को हित उपदेश करताहूं कि सृष्टिके पहिले निष्कल चिदानन्द मयजो परमशिव वेही रजोगुण से ब्रह्माको उत्पन्न कर संसार में कर्म कांडकी प्रवृत्ति होनेके अर्थ चार वेद उसको देतेभये औ फिर अपने तत्व का संग्रहरूप औ सब उपनिषदों का सार रुद्राध्यायभी देतेभये कि जिस रुद्राध्याय में सनातन ज्योतिः परमशिव सदा निवास करते हैं जब ब्रह्माजीने सृष्टि रची औ चारों मुखों से चार बेद पढ़ने लगे तब दक्षिण मुखसे जो ययुर्बेद निकला उसी में सब बेदका सार रुद्रध्याय है इस रुद्राध्याय को मरीचि अत्रि आदि ऋषि ब्रह्मा जीके मुखसे पाते भये औ उन्हों ने अपने शिष्य प्रशिष्य तथा पुत्र पौत्रों को पढ़ाया इसप्रकार यह रुद्राध्याय सब देवताओं औ मनुष्यों में फैलगया मनुष्योंके लिये रुद्राध्याय का पाठ परम तप औ बड़ा पुण्य देनेवाला है इसके पाठ से पातक उपपातक सब दूरहोते हैं औ अन्त में मोक्ष मिलता है ब्रह्मा जीने सृष्टि रचनेके समय सबप्रकार के भले औ बुरे जीव रचे उनमें देवता, मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतंग सब भांति के सिरजे कि जिन से यह जगत् भरगया औ सब अपने २ कर्मोंके अनुसार सुख दुःख भोगनेलगे औ ब्रह्मा जीने अपने वक्षःस्थल अर्थात् छाती से धर्म औ पीठ से अधर्म को उत्पन्न किया उन जीवोंमेंसे जो धर्म का आचरण करते हैं वे अच्छा फल पाते हैं औ पाप के आचरणसे बुरा औ धर्म से स्वर्ग अधर्म से नरक मिलता है फिर ब्रह्माजीने स्वर्ग का स्वामीइन्द्र औ नरक का यमराज बनाया औ काम, क्रोध, लोभ, मद, मान आदिअधर्मकेपुत्र नरकोंके स्वामी भये इनमें कामके पुत्र गुरुदारागमन चंडाली गमन सुरापान ये उपजे क्रोधके पुत्र मातृबध पितृबध ब्राह्मण

बध ये भये देवद्रव्य हरण परद्रव्यहरण सुवर्णस्तेय अर्थात् सोना चोराना जो महा पातकोंमें गिनाजाताहै ये लोभके तनय कहाये इन सबको बुलाये यमराज ने नरक के अधिकारी बनाये ये नौके नौ सब बाकी उपपातकोंको साथले नरककी रक्षाकरने लगे परन्तु जब रुद्राध्याय भूमिपर आया तब ये अति भयभीत हो यमराजके समीप जाय प्रार्थना करने लगे कि महाराजआप ने नरककी वृद्धि के अर्थ हमको अधिकार दियाहै परंतुआजकल हमारी दुर्दशा होरही है रुद्राध्याय के तेजसे दग्ध होकर भागते फिरते हैं भूमि पर नहीं ठहर सकते ग्राम २ औ घर २ में तथा सब पुण्य तीर्थ औ आश्रमों में रुद्राध्यायही फैल रहा है औ हमको कहीं स्थान नहीं और तो किसी प्रायश्चत्त व्रत आदि को हम कुछ नहीं समझते परन्तु रुद्राध्याय का एक अक्षर भी हमसे नहीं सम्हाराजाता अब इस रुद्राध्याय के बड़े भारीभयको आपही दूर कर सकते हैं यह सुन यमराज भी व्याकुल हो सब को साथ ले ब्रह्मलोक में गया औ ब्रह्मा जी से करजोर बिनती करनेलगा कि महाराज आप ने मुझे पापी जीवों के दण्ड देने का अधिकार दिया परंतु रुद्राध्याय के प्रभाव से सब पाप नष्ट होगये पापी कोई रहा नहीं इसीहेतु सब नरक सूने पड़ेहैं औ मेरा राज्य भी नरक शून्य होजाने से जातारहा इससे मैंने अति दुःखी हो आप से प्रार्थना करी अब आप प्रभु हैं इसमें कुछ उपाय बतावें जिस से मैं राजा बना रहूं क्योंकि आप का दियाही राज्य है यमराज का यह अति दीन बचन सुन रुद्राध्याय के बिघात के लिये ब्रह्मा जीने उपाय कल्पना किया कि अबिद्या में जो दो कन्या अश्रद्धा औ दुर्मेधा उत्पन्न भई थीं उनको श्रद्धा औ मेधाके बिघात करने को आज्ञादी वे भी ब्रह्मा

जीकी आज्ञा पाय भूमिपर आय सब मनुष्यों की श्रद्धा औ मेधा अर्थात् सद्बुद्धि को नष्टकर रुद्राध्याय से बिमुख सबको करदेतीभई तब फिर जगत् में पाप बढ़ने से नरक सब भरगये औ यमराजभी सुखसे राज करनेलगे इतना कह पराशर मुनि बोले कि हे राजा पूर्वजन्म के पापों से अल्पायुजीव होतेहैं जो रुद्राध्याय के पाठ से सब पाप कटजांय तो अवश्यही दीर्घ आयु बल, धैर्य, आरोग्य, ज्ञान औ ऐश्वर्य की वृद्धि होय जो रुद्राध्यायसे श्रीमहादेव जीको स्नान करावे वेभी मृत्यु के भय से बच जावें और जो रुद्राध्याय से अभिमंत्रित जल करके स्नान करें वे मृत्युके भयसे छुट शिवलोक में बास करते हैं रुद्राध्याय से महादेव जी का अभिषेक करने से पुरुष सौ बर्ष की आयु भोग कर अंत में शिव लोक पाता है इतना कह फिर पराशर जी ने कहा कि यह तेरा पुत्र जो दश सहस्र रुद्राध्याय से स्नान करे तो मृत्युसे बच आरोग्य हो बहुत बल औ ऐश्वर्य पाय सब शत्रुओं का बिध्वंस कर इंद्र के तुल्य दश हजार बर्षतक निष्कंटक राज्य करे औ वेदके जाननेवाले शिवभक्त शांत चित्त समदर्शी ज्ञान यज्ञ तप में निष्ठ ऐसे ब्राह्मण रुद्राध्याय का पाठ करेंतो अवश्यही कल्याण हो यहपराशर जीका बचन सुन राजा ने पहिले तो पराशर जीके हीबरण किया पीछे और भी बड़े२ तपस्वी एक सहस्र मुनि बुलाय सबको पराशर जीकी आज्ञानुसार बरण देताभया वेभी सौकलश पुण्य वृक्षोंके रससे पूर्ण स्थापन कर रुद्राध्याय का जप करते औ जपके अनन्तर राज पुत्रको स्नान भी करातेभये इसप्रकार सातवें दिन स्नान कराते कराते राजपुत्रकोअकस्मात् मूर्छा हो होगई परंतु मुनियों के प्रभाव से क्षणमात्र मेंही फिर चैतन्य होगया औ कहनेलगा कि

महाराज एक कृष्णवर्ण बड़ा भयानक पुरुष दण्ड हाथ में लि-
ये मुझे मारने आया परंतु यहांसे कई बीर पुरुषों ने उठ कर
उसको मारा औ बांधकर कहीं दूरले गये इतना मैंने इस मूर्छा
में देखा यह उसका बचन सुन सब मुनि प्रसन्न भये औ राजा
भी पुत्रको मृत्युके भय से छुटाजान सब मुनियों को दक्षिणादे
भक्ति से भोजन कराय उन के आशीर्बाद ग्रहण कर आप भी
अपने बन्धुओं सहित भोजन करताभया भोजनके अनन्तर सब
मुनि औ राजा एक सभा में बैठे श्रीमहादेव जीके गुण बर्णन
कररहे थे उसी अवसर में देवर्षि श्रीनारद जी आये उनकोदेख
राजा औ सब मुनि उठकर खड़े भये औ राजा ने भक्ति से सिंहा-
सन पर बैठाय उनकी पूजा की इस प्रकार भक्ति से नारद
मुनि का पूजन कर बिनय से राजा पूछने लगा कि महाराज
आप तीन लोक में बिचरते हौ जोकहीं कुछ आश्चर्य आपने
देखा होय तो कृपा कर कहो यह सुन नारद जी ने कहा कि
हे राजा आज आकाश से उतरते समय जो आश्चर्य हमने देखा
वह बर्णन करते हैं तुम सब सुनों आज दंड हाथ में ले मृत्यु
यहां तेरे पुत्र को मार ने आया था यह वृत्तांत शिव जीने भी
जान कर कुछ अपने गण साथ दे बीरभद्र को यहां भेजा
बीरभद्र जी भी यहां आय मृत्यु को पाय झट पट पाश से बांध
कैलास को ले चले तब यमराज घबराय उन के समीप पहुंचे
औ बीरभद्रके चरणों पर प्रणाम कर कहने लगे कि यह मृत्यु
निरपराध है आप इस पर इतना क्रोध न करें राज पुत्र की तो
आयुष् अपने पूर्व कर्म से इतनीही है औ यह उस को आयु पूरी
हो ने पर मार ने गया इस में इस का कुछ अपराध नहीं यह
यमराज की प्रार्थना सुन बीरभद्र जी ने कहा कि रुद्राध्याय के

प्रभाव से उस की आयु दश सहस्रबर्ष की होगईहै इसलिये वह बीच में नहीं मर सक्ता जो तुम को हमारे कह ने पर संदेह होय तो चित्र गुप्त को बुलाय पूछ लो यह बीरभद्र जी का बचन सुन चित्र गुप्त को बुलाय यमराज ने पूछा कि उस राज पुत्र की कितनी आयुष् है यह सुन एक बार तो जल्दी से चित्र गुप्त ने कहा कि बारह बर्ष की है फिर बीरभद्र जी को देख कुछ देर बिचार कर अपनी वही भली भांति देख कहा कि उसकी आयु दश हज़ार बर्ष की है बारह बर्ष मैं ने भूल से कह दिये यह सुन यमराज भी लज्जित भये औ बहुत सी प्रार्थना कर मृत्यु को बीरभद्र जी के पास से छुटाय साथ ले अपने धामको गये औ बीरभद्र जी कैलास को गये इतना कह नारद जी बोले कि यह सब चरित्र हम आखों से देखकर यहां आयेहैं अब यह तेरा पुत्र रुद्राध्याय के प्रभाव से मृत्यु के भय से बचा औ सुख पूर्वक दश हजार बर्ष राज्य करेगा इतना कह राजा से बिदा हो नारद जी तो स्वर्ग को गये औ सब ऋषि अपने २ आश्रम को जाते भये इस प्रकार वह कश्मीर के राजा भद्रसेन का पुत्र रुद्राध्याय के प्रभाव करके अति कष्टसे छुटा यह कथा जो भक्ति से पढ़े अथवा सुने सो कोटि जन्मके पापोंका नाशकर शिवलोकमें प्राप्तहोय दिव्यभोगभोगकर शिवजी मेंलीन होजाय

बाईसवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो संसार में मुक्ति देने वाला यह कल्याण दायकमार्ग शिवजी नेही दिखा दियाहै परंतु स्त्री शूद्र आदि जो वेदके अनधिकारी हैं उनको कल्याण देने वाला यह उपाय है कि भक्तिसे शिव कथा श्रवण करें औ सदा शिव

नाम स्मरण करते रहैं क्योंकि शिवकथा अज्ञानरूप अंधकार हरने कोदीपक हैं संसार रोग के दूर करने को परम औषध है औ महा पातक पर्वतों के लिये मानों बज्र ही है तीन लोक को पबित्र करने हारी शिवकथा जो पुरुष भक्ति से सुनते हैं वे भी शिव तुल्यही हैं औ उन पुरुषों के चरणों का रज तीर्थ के तुल्यहै इसलिये जो पुरुष अपना कल्याण चाहें वे सदा पुराणों में बर्णित शिवकथा श्रवण कियाकरें जो सदा न श्रवण करसकें तोभी पुण्य मास औ पबित्र दिनोंमें अवश्य सुनें जो भक्ति से शिवकथा सुनते हैं वे कर्म रूप बनको दग्धकर संसार सागरके पार होजाते हैं औ कभी दुर्गति नहीं पाते चाहे क्षण मात्रही शिवकथा सुनें जो फल बड़े २ दान औ यज्ञ करने से मिलताहै वह पुराण श्रवण से भी मिल सक्ता है बिशेष करके कलि युग में तो पुराण श्रवण से सुगम मोक्षके लिये और कोई उपाय नहींहै पुराण श्रवण औ शिवजी का नामोच्चारण येदोनों मनुष्यों के लिये कल्प वृक्षहैं कलियुग में सब मनुष्य अल्पायुष् रोगी दुर्बल दुर्बुद्धि भाग्यहीन धर्म औ आचारसे हीन होंगे यह शोच कर श्री वेदव्यास जीने उनके उद्धारके लिये अठारह पुराणरचे कि जिस पुराण रूप अमृतके पीनेसे मनुष्य अजर औ अमर हो-जांय तिस में अमृत तो पीने वाले कोही अमरकरता है औ शिव कथा सुननेवाले पुरुषके कुलको भी अजर औ अमर कर देती है पुराणको जानने वाला पुरुष बालक वृद्ध युवा दरिद्र दुर्बल चाहे कैसाही हो वह सदा पूजनीय है पुराण के जानने वाले पुरुषमें कभी दुष्ट बुद्धि न करनी चाहिये क्योंकि उसके मुखसे निकली भई पुराण रूप बाणी मनुष्योंके लिये कामधेनु है औ लोकमें जो पुरुष बिद्या औ अवस्था करके सबके पूज्यहैं पुराण वेत्ता उन-

का भी गुरु औ पूज्यहै जोजीव अनेक जन्मोंमें दुःख भोगते फिरते हैं उनको पुराण सुनाय उद्धार करने वाला क्या गुरू से न्यून है पुराणको जानने वाला भी शुचि शांत जितेंद्रिय दयालु औ ईर्षा रहित चाहिये औ व्यासगद्दी पर बैठकरकथा कहे जब तक कथा समाप्त नहोय किसीको नमस्कार न करे औ धूर्तदुष्ट कुटिल आदि पुरुषों के आगे कथा न कहे औ जहां बहुत शूद्र दुराचार द्यूत खेलने वाले आदि खोटे पुरुष रहतेहों तथा सिंह व्याघ्र आदि का भय होवे वहां भी पुण्य कथा न बांचे अच्छे ग्राम पुण्यतीर्थ पर देवता के स्थानमें सदा कथा कहे औ श्रौता भी श्रद्धा युक्त पबित्र एकाग्र चित्त हो मौन से कथा सुनें बीचमें परस्पर बार्तालाप न करें जो बिना भक्तिकथा सुनते हैं उनको जन्म २ में दुःखही होता है औ जो तांबूल आदि कुछ भेट बिना चढ़ाये पुराण सुनने जाय बैठते हैं वे भी दूसरे जन्म में दरिद्री होतेहैं औ जो कथा समाप्त होनेसे पहिलेही उठकर इधर उधर चलदेते हैं जन्मांतरमें वे स्त्री हीन होतेहैं जो पगड़ी बांधे कथा सुनतेहैं उनको भी पूरा फल नहीं होता जो अहंकार से तांबूल खाते २ कथा सुनते हैं उनको अगिले जन्म में यमदूत श्वानका बिष्टा खिलाते हैं जो ऊंचे आसन परबैठ कथा श्रवण करते हैं वे बहुतदिन नरक भोगकर काक योनिमें जन्मलेते हैं जो बीरासन से बैठ सुनें वे अर्जुन वृक्ष होतेहैं बिना प्रणाम किये जो सुनने बैठ जांय वे बिष वृक्ष हो ऊगते हैं सोते २ कथा सुनने वाले अजगर होते हैं जो पौराणिक अर्थात् कथा कहने वाले के तुल्य आसन पर बैठ कथा सुनेउनको गुरु दारा गमनका पाप होताहै अंतमें नरक में जातेहैं जो पुराण जानने वालोंकी औ पुराण की निन्दा करते हैं वे सौ जन्म तक श्वान होतेहैं कथा के समय जो

कुतर्क करें वे गर्दभ होतेहैं जो कभी कथा न सुने वे भी नरक भोग कर बन सूकर हो जन्मतेहैं और जो होतीहुई कथा में बिघ्न करतेहैं वे करोड़ बर्ष तक नरक में बासकर ग्राम सूकर होतेहैं जो पुरुष भक्ति से कथा श्रवण करतेहैं वे तथा जो मनुष्यों को पुण्य कथा सुनातेहैं ये दोनों ब्रह्मलोक पातेहैं जो पुरुष पुराण बांचने वाले को वस्त्र,भूषण,चौकी,पर्यंक, कंबल,मृगचर्म,आदि भक्ति से देतेहैं वे बहुत काल स्वर्ग में बासकर उत्तम कुल में जन्म पातेहैं इस में एक बहुत उत्तम कथा हे मुनीश्वरो हम कहतेहैं ॥ कथा ॥

दक्षिण देश में एक कष्कल नाम ग्रामथा उसमें जितने मनुष्य रहते सब मूर्ख औ धर्म से हीनथे औ उस ग्राम के ब्राह्मण भी महा मूर्ख,दुराचार,पर स्त्रियों में आसक्त पूजा पाठ सेहीन कोई शस्त्र धारकर पराई सेवा करें औ कोई खेतीकरें औ स्त्री भी सब उस गांव की बड़ी दुर्बुद्धि औ व्यभिचारिणीथीं उसी ग्राम में अत्यंत कुमार्गी औ सब से अधम एक बिदुर नाम ब्राह्मण था जो सदा अपनी कंजुलानाम पत्नी को छोड़ एक बेश्या के पास जाय रात्रि को रमा करता वह उसकी नवयौबना स्त्री भी इकल्ली न रहसकती इस लिये रात्रि को एक अपने जार के पासजा सोती एक दिन दैव योग से उस ब्राह्मण ने जार के साथ सोते अपनी स्त्री को देखा औ क्रोध से मारने को भगा उसको आते देख वह उसका जार तो पलायन करगया औ वह स्त्री हाथ आगई उसको बांध कर वह मारने लगा तब वह स्त्री बहुत दुख पाय बोली कि तू तो नित्यबेश्याके पासचलाजाताहै मैं नवयौबना औ रूपवती एकाकिनी क्योंकर रहसकूं मुझे भी कामदेव सताताहै यह सुन वह ब्राह्मण बोलाकि कहातो तैंने ठीक परंतु जिस प्रकार मैंकहूं वैसा कर कि तू अपने जारों से धन लियाकर औ मुझे देदियाकर जिस

से वही धन वेश्या को दे मैं भी सुख पूर्वक भोगकरूं इस रीति दोनों प्रसन्न रहैंगे क्योंकि बिना धन वेश्या के यहां मेरा भी प्रवेश नहीं होसक्ता यह पतिका कहा उसने स्वीकार किया औ जो धन मिलता उस को देदेती वह भी वेश्याओंका दे चैन उड़ाता इस प्रकार दुराचार से कुछ काल बीतते २ वह ब्राह्मण मरगया औ वह ब्राह्मणी भी कुछ वृद्ध भई औ अपने पुत्रों सहित घरमें रहने लगी कुछ काल के अनंतर किसी पर्वदिनमें वह ब्राह्मणी अपने बंधुओं के साथ गोकर्ण क्षेत्रको गई वहां तीर्थ में स्नानकर महाबलेश्वर का दर्श न पाय बाहिर आई तो देखा कि एक ओर पुराण की कथा होरही है वहभी सुनने बैठगई औ कथा में भी उस समय यही प्रसंग आ रहाथा कि जोस्त्री व्यभिचार करतीहै मरने के अनंतर नरक में जातीहै औ वहां यमदूत तपा कर लोह का दंड उसकी योनिमें प्रवेश करातेहैं यह सुन वह ब्राह्मणी बहुत घबड़ाई औ जब कथा समाप्त भई तब पौराणिकके समीप गई औ हाथ जोड़ एकांतमें कहने लगी कि महा राज मैंने अपनी युवा अवस्थामें बड़ा व्यभिचार कियाहै अब मेरी क्यागति होगी औ वह तप्त लोहदंडका कष्टमैं क्योंकर सहोंगी जब वे भयंकर यम दूत आय मेरे गलेमें फांसी डाल खैंचते हुये नरक में लेजायंगे औ मेरे शरीर को टूक २ करेंगे तब मेरा कौन सहायक है जबसे आपकी कथा सुनी तबसे मेरी भूख प्यास जाती रही औ मेरा चित्त ऐसा दुःखी है कि बर्णन नहीं कर सकती औ जब आपका बचन याद आताहै तब हृदय फटने लगताहै मैंने इतने पाप कियेहैं कि सौ अश्व मेध अथवा सैकड़ों बार गंगा स्नानकरने से भी न कटैं अब मैं क्या करूं औ किसके शरण में जाऊं किजो मुझे नरक की घोर यातनासे बचावे अब आपही मेरे गुरु माता

औ पिता हैं किसी प्रकार आपही मेरी रक्षाकरें मैं आपके शरण हूं इतना कह बड़ा पश्चात्ताप करती हुई पौराणिकजी के चरणों पर गिर पड़ी तब पौराणिक भी उसकी दीनता देख अपने चरणोंपर से उठा बड़ी कृपा कर बोले कि अब भी तैंने भले समय चेत किया नहीं तो बड़ाही कष्ट भोगती अबतू भय मतकर हम एक उपाय तुझे बताते हैं कि उत्तम कथा सुनने सेही ऐसी बुद्धि उत्पन्न होती है पाप करके जो पश्चात्ताप करे कह उस पापसे छुट जाताहै औ पाप कर अनेक प्रायश्चित्ततोकरे परंतु पश्चात्ताप कभी न करे वह पुरुष पाप से नहीं छुटता सब पापों के लिये बड़ा भारी प्रायश्चित्त पछताना है कि हमने यह बुरा काम क्यों किया जैसा सत्कथा श्रवणसे सज्जनों की सेवासे औ पुण्य क्षेत्र में रहने से चित्त निर्मल होजाता है इस प्रकार और किसी व्रत आदि से चित्त शुद्धि नहीं होती जैसे बिभूति केमार्जन करने से दर्पण निर्मल होजाता है ऐसेही सत्कथा श्रवण से चित्त स्वच्छ होजाता है औ चित्त निर्मल होजाने से श्रीसदा शिवका ध्यान ठीक २ होसक्ताहै कि जिस ध्यानके करने से तन मन औ बचनसे कियेहुवे सब पाप दूर होजाते हैं औ पाप दूर होने से शिवलोकमें बास होताहै जो पुरुष ध्यान नहीं करसक्ते उनकोतो अवश्यही कथा सुननी चाहिये बड़ाभारी पापी एक ब्राह्मण अजामिल नाम अनेक पापकर पश्चात्तापसे एकबार परमेश्वरका नाम उच्चारण करनेसे परमगति को प्राप्तभया इसलिये सब कल्याण देनेवाला एक कथा श्रवणहै जिसको कथा सुननेमें भक्ति न हो वह पशु के तुल्यहै इससे तू भी सब बिषयोंसे अपने मनको रोंककर परमभक्ति से सदा कथा सुनाकर कथा सुनते २ तेरा चित्त शुद्ध होजायगा तब श्रीमहादेवजी का ध्यानकर मुक्ति पावेगी क्योंकि

शिवजी महाराजके चरणारविंद का ध्यान करनेसे एक जन्ममेंही मुक्ति मिलतीहै यहसुन वह ब्राह्मणी हर्षसे अश्रुपात करतीहुई पौराणिक के चरण पर शिर धर कहनेलगी कि महाराज आपने मुझे कृतार्थकिया कि यह उत्तम उपदेश दिया फिर उसी दिनसे वह ब्राह्मणी गोकर्णक्षेत्रमें निवास करनेलगी औ प्रतिदिन भक्ति से कथाभी सुनती पौराणिक नेभी ऐसी उत्तम कथा सुनाई कि जिससे उसक हृदयकी बिषयबासना सब दूरहोय अंतःकरण शुद्ध होगया औ शिवजी में भक्तिभी उत्पन्न भई औ हृदयमें शिव जीका ध्यान करने लगी इसी प्रकार ध्यान करते२कुछ दिनोंमें उस ब्राह्मणी के हृदय कमल में वह परमेश्वर का त्रिगुणातीत स्वरूप स्थिर होने लगा इस प्रकार सद्गुरुकी कृपासे वह ब्राह्मणी सन्मार्गमें प्रवृत्त भई नित्य तीर्थ में स्नान करती औ जटा रखाये वृक्षकी छाल ओढ़े सब अंगोंमें भस्म लगाये रुद्राक्ष पहिने स्वल्प भोजन करती हुई मौन से सदा श्री शिव जी का नाम स्मरण किया करती औ सब भाई, बंधु, पुत्र, मित्र आदिकों में मोह छोड़ गुरू की सेवा करती औ नित्य कथा श्रवण करती नित्य इस प्रकार शिवजी की स्तुति करती ॥ स्तोत्र ॥ बिश्वेशबिश्व बिलयस्थिति जन्म हेतोबिश्वैकबन्धुशिवशाश्वतबिश्वरूप बिध्वस्तकालभयशांतगुणावभास श्रीमन्महेशममदेहिकृपाकटाक्षम् १ शम्भोशशांककृतशेखरशान्तमूर्ते गंगाधरामरवरार्च्चित पादपद्मं नागेन्द्रभूषणनगेंद्रनिकेतनेश भक्तार्तिहन्मयिनिधेहि कृपाकटाक्षम् २ श्रीबिश्वनाथकरुणाकरशूलपाणे भूतेशभर्गभुवनत्रयगीत कीर्ते श्रीनीलकण्ठमदनान्तकबिश्वमूर्ते गौरीपतेमयिनिधेहिकृपा कटाक्षम् ३ इस प्रकार नित्य शिवजीका आराधन करते २ वह ब्राह्मणी कर्म बंधों से छुटगई औ कुछ कालके अनन्तर मृत्युहोने

पर बिमान में बैठ शिव लोक में गई वहां देखाकि सब देवताओं करके उपासित, नन्दी, भृंगी, बाण, चंडेश्वर आदिगणों करके सेवित, कोटि सूर्य के तुल्य जिनका प्रकाश त्रिनेत्र पंचमुख नीलकण्ठ श्री सदाशिवजी सिंहासन पर बैठे हैं औ उनके बाम भाग में श्रीपार्वती जी बिराजमान हैं यह देख वह ब्राह्मणी भक्तिसे रोमांचित हो अश्रुपात करती हुई बार २ प्रणाम करती भई श्रीमहादेव जीने भी प्रसन्न हो उसको अपने लोक में निवास दिया वह भी सुख पूर्वक कैलाश में रहने लगी एक दिन उस ब्राह्मणी ने बड़ी भक्ति से श्री पार्वती जी को प्रसन्न करि पूछा कि हे माता वह मेरा पति अति दुराचार किस गति को गया यह सुनि श्री पार्वती जीने कहा कि वह अति पातकी तेरा भर्त्ता बहुत काल नर्क भोग कर अब बिंध्याचल में पिशाच हो रहाहै यह सुनि फिरि ब्राह्मणी ने प्रार्थना करी कि माता कौन उपाय से उसकी सद्गति होय यह आप अनुग्रह कर मुझसे कहैं तब पार्वती जीने कहा कि वह जो कभी हमारी पुण्य कथा सुने तो उस दुर्गति सेछूटइस लोकमें प्राप्त होजाय तब फिर ब्राह्मणी ने हाथ जोड़ बिनती करी कि आपही किसी उपाय से उसका उद्धार करें इसबिधि ब्राह्मणी की प्रार्थना सुन औ उसकी अति भक्ति देखि श्री पार्वती जीने तुम्बरु नाम गंधर्वको बुलाय आज्ञा दी कि तुम बिंध्याचल में जावो औ जहां इस ब्राह्मणी का पति पिशाच होकर रहता है वहां जाय उसको हमारी कथा सुनाय पिशाच योनि से उस को मुक्त कर हमारे समीप ले आवो इस प्रकार भगवती की आज्ञा पाय उस ब्राह्मणी को संगले बिमान पर चढ़ बिंध्याचल में गया वहां देखा कि वह पिशाच पर्वत के तुल्य जिसका भयंकर शरीर है रक्त नेत्र औ बड़े २ दांत जिस

के अति कृष्णवर्ण कभी हंसताहै कभी रोने लगताहै कभी नाचता है यह उसकी दशादेखतुम्बरु ने उसको बल से पकड़ कर पाश से बांध अपने पास बैठाया औ शिव कथा श्रवण कराना आरम्भ किया इस प्रकार कथा सुनते २ सात दिन भयेतब सब पाप निवृत्त होजाने से पिशाच देह को त्यागकर वह दिव्य शरीर होगया औ शिव जी के गुण गाने लगा तुम्बरु भी उसको पिशाच योनिसे मुक्त देख बिमान पर बैठाय कैलाश में शिवजी के समीप ले आया औ वहां दोनों स्त्री पुरुष दिव्य देह पायसुख भोगने लगे इतनी कथा सुनाय सूत जी बोले कि हे मुनीश्वरो यह पुण्य कथा सब पाप दूर करने हारी औ शिव जीमें भक्ति बढ़ाय मोक्ष देनेवाली हमने सुनाई जो पुरुष संसार रोग की परम औषध इस उत्तम कथा को सुने अथवा सुनावे वे दोनों ही संसार सुख भोग अन्तमें शिवलोक पावें हे मुनीश्वरो आप भी धन्य हो जो शिव जीके कथा रूप अमृत को सदा पान करते हौ संसार में उनकाही जन्म सफल है जिनका चित्त निरन्तर शिव ध्यान करता है बाणी शिव जी के गुणवर्णन करती है औ कान निरन्तर शिव कथा सुनतेहैं औ ऐसेही पुरुष सदा भोग औ मोक्ष पातेहैं ॥ श्लोक ॥ बिबिधगुणबिभेदैर्नित्यमस्पृष्टरूपंजगतिचवहिरन्तर्भासमानंमहिम्नास्वमहसिविहरन्तंवाङ्मनोवृत्तिदूरंपरमशिवमनन्तानन्दसान्द्रंप्रपद्ये १॥दोहा॥ भाषामाहिंबिचारिकैबुधदुर्गापरसाद रचीरुचिरयहशिवकथातजिमनकोपरमाद १ हरनेहारी श्रवणतैंभक्तनकेभवफंद बनीरहैयहभूमिपरजबलगसूरजचन्द २ सुखीहोंयशिवभक्तसबभूतिबिभूषितभाल जिनकेदर्शनपायकैकटैं पापकेजाल ३ सदासदाशिवकेतनयदेवनकेशिरताज बिघ्नहरैंसब जगतकोअतिकृपालुगणराज ४ ग्रन्थसमाप्तः नमःशिवाय ॥

ब्रह्मोत्तरखण्ड का शुद्धाशुद्धपत्र॥

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	४	आरसी	आश्रमो	३५	८	मनोऽर्थ	मनोरथ
१	६	मोक्षभी	मोक्षही	३५	२६	गिनी	गिरणी
२	१७	अनुश्ररण	अनुसरण	३८	१	आनंद	आनन्दसे
३	२५	मनोर्थ	मनोरथ	४०	२३	कैलाश	कैलास
४	८	अनूबाद	अनुवाद	४१	२५	पूर्ण	पूरण
५	२०	प्रवीणजो	प्रवीण	४४	८।२९	कैलाश	कैलास
६	१८	वेदांतका	वेदान्तके	४७	१८	आवर्ण	आवरण
७	६	गुरू	गुरु	४७	१९	पूजते जो	पूज मेजो
७	६	वाले	वाला	४८	२१	देह्य	दृश्य
७	७	वाले	वाला	४८	२२	मैं	में
७	२०	किया	करी	४८	२४	बलक	बलकी
८	२५	मनोर्थ	मनोरथ	४९	१	तेरे	तुम्हारे
८	२७	मनोऽर्थ	मनोरथ	४९	२०	मैं श्री	श्री मैं
९	२४	येसब	वेसब	४९	२१	दारिद्र	दारिद्र्य
११	२३	सन्मुख	सम्मुख	५१	४	दूसके	दूनके
१३	१८	वोली	वोलीकि	५२	६	सों	से
१५	१२	आपकी	आपके	५२	१३	मनोऽर्थ	मनोरथ
१५	४	इक्त	व्रत	५२	२४	आशक्त	आसक्त
१७	४	वैताल	वेताल	५३	१०	कैलाश	कैलास
१७	१९	स्वाम	स्वामि	५३	१९	मनोऽर्थ	मनोरथ
१८	१०	प्राप्ति	प्राप्त	५३	२४	कैलाश	कैलास
१८	११	अमावश्या	अमावस्या	५४	२०	मनोऽर्थ	मनोरथ
१८	१९	है	है	५४	२२	प्रदोश	प्रदोष
१९	२३	पूप	पूय	५५	९।१९	मनोऽर्थ	मनोरथ
२१	१४	आदिका	आदि	५७	१	बंधे	बढे
२१	२५	ब्राह्म	ब्राह्मण	५८	२२	इंद	इन्द्र
२६	७	दृष्टि	दृष्ट	५८	२३	उनमत्त	उन्मत्त
२६	२०	नर्क	नरक	५९	८	अस्थान	स्थान
२७	३।५	नर्क	नरक	६०	२५	की	का
३३	१३	कैलाश	कैलास	६५	१६	लगी	लगे
३३	२२	मुनि	हे मुनि	६६	१	भय	भया
३४	३	किया	किया	६६	१८	मी	भी
३४	१६	नपुन्सक	नपुंसक	६६	२२	नथ	नथा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६६	३३	प्राभर्थे	प्राप्तभवे
६७	१	नवर्षा	नर्वा
६७	१७	र्थ	रथ
६८	६	मिलतेहैं ३	मिलतेहैं
७२	३	अंतर्ध्यान	अन्तर्द्धान
७३	१२	सगृभो	सगर्भो
७३	१३	गर्दुं	भर्दुं
७३	१४	नामरी	वहनभरी
८२	१५	धृतिं	धृतिः
८२	१८	जिह्वाः	जिह्व :
८३	१	अम्बकः	यम्बकः
८३	२	नान्न	नान्य
८३	७	निषन्नं	निषण्णं
८४	२४	नैश्र	श्रौ
८६	८	हाथी	हाथ
८६	११	क्रंदन	कदन
८०	२४	षणुषा	स्नुषा
८४	१	नर्क	नरक
८४	१८	सेवा	से-
८६	२	अर	और
८६	५	यहो	यही
८८	२४	नर्क	नरक
८८	११	मरकट	मर्कट
१०२	१	कणदा	षादा
१०३	२३	पत्य, अग्नि	पत्याग्नि
१०४	१२	कूंठी	कूठे
१०४	१८	उसके	उनके
१०५	१३	लगाने	लगाने
१०५	२३	का वे	वे
१०६	८	मनोऽर्थ	मनोरथ
१०६	१७	मैं	हैं
१०६	२१	अनर्जुसिंह	अर्जुनसिंह
१०७	३	राजा	राज
१०७	६	करो	करूं

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१०८	१	स्मशान	श्मशान
१०८	६	नहों	नहीं
१०९	१८	हुवा	हुवा
११०	२३	वही	वह
१११	७	मिलाप	विलाप
१११	७	डसका	उसका
१११	१४	ब्यान	व्यजन
११३	१८	मनोऽर्थ	मनोरथ
११३	२२	अम्बक	यम्बक
११४	२३	मनोऽर्थ	मनोरथ
११८	१६	शांव	साम्ब
१२०	२२	शिवा	शिवा में
१२१	१७	मंत्री	मन्त्रिपुत्र
१२४	७	समुझाने	समझाने
१२४	८	बांटे	बोट
१२५	१२	मनोऽर्थ	मनोरथ
१२६	८	यशुर्वेद	यजुर्वेद
१२७	११	प्रायश्चत्त	प्रायश्चित्त
१२८	२४	हो हो	हो
१३०	७	वही	वही
१३०	१०	पास	पाश
१३६	१९	देहि	धेहि
१३७	५	मान	मान
१३७	८	कैलाश	कैल्यास
१३७	१२	नर्क	नरक
१३८	७	कैलाश	कैलास
१३८	२५	समाप्तः	समाप्त

ब्रह्मोत्तरखण्ड का शुद्धाशुद्ध पत्र समाप्त भया ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
भजनावली	वैद्यकभाषा	बालाबोध	जातक भरण
प्रेमरत्न	निघण्टु	विद्यार्थीकी प्रथम पु-	हीरामकरन्द
युगलविलास	अमरविनोद	किताबजंची	जातक चन्द्रिका
चित्रचन्द्रिका	वैद्यजीवन	गणितकामधेनु	जातकालंकार
बारहमासबलदेवज-	कोषधिसंग्रहकल्पवल्ली	लीलावती	देवज्ञाभरण
मनोहरलहरी	अमृतसागरबड़ाबड़ो	पटवारियोंकीपुस्त	ज्ञानरत्नोदय
गंगालहरी	वैद्यमनोत्सव	कचार भाग	रमलसार
यमुनालहरी	भूतफ़र्क़ात	संस्कृतकी पुस्तकें	दुन्दुजाल
जगद्विनोद	ज्ञानेश्वरकीकथा	लघुकौमुदी	संस्कृतहूंढ़ी-स-
रागा	ज्ञानमाला	सिद्धान्तचन्द्रिका	मनुस्मृति
रागप्रकाश	गोपीचंद भरतरी	अमरकोषतीनोकांड स-	विष्णुसहस्रनाम
लावनी	कथाश्री गंगाजी	पंचमहायज्ञ	महिम्न स्तोत्र
शृंगारबत्तीसी	अवधयात्रा	निर्णयसिन्धु	संस्कृतभा-टी-
किस्सा वीररङ्ग	रासलीलाबनमालीला	संग्रहशिवोमणि	अमरकोश
नानार्थनोसंग्रहावली	दोहावलीवस्त्रावली	भगवद्गीता सटीक	याज्ञवल्क्यस्मृति
ब्रह्मसार	गोकर्णमाहात्म्य	दुर्गापाठ सटीक	संध्यापद्धति
शिवसिंहसरोज	श्रीगोपालसहस्रनाम	विष्णुभागवत	व्रतार्क
भक्तमाल	कथासत्यनारायणज-	भविष्योत्तरपुराण	भगवद्गीताटी-हनं-
छन्दसभा	हनुमानबाहुक	अपराधभंजन स्तोत्र	भगवद्गीतादीपा-ती-
विक्रमविलास	जैनकपच्चीसी	दुर्गास्तोत्र	गीतगोविन्द
बैतालपच्चीसी	हरिहरसयुगानिर्गु	कायस्थकुलभास्कर	कथासत्यनारायण
सिंहासनबत्तीसी	रासपञ्चावली	कायस्थधर्म्मनिरूपण	परमार्थसार
पद्मावतीखंड	वनयात्रा	तथाछोटा	शार्ङ्गधर संहिता
शुकबहत्तरी	कायस्थवर्णनिर्णय	मथुरासभा	पाराशरी सटीक
वसावली सुमन	बिहारवृन्दावन	ज्योतिष	श्रीघ्रबोध सटीक
बहारदरवेश	रामविहारसिंहासन	मुहूर्त्तगणपति	लघुजातक
किस्साहातमताई	सत्यभाष्य	मुहूर्त्तचक्रदीपिका	घटपंचाशिका
अपूर्वकथा	रासी	मुहूर्त्तचिंतामणिस-	सामुद्रिक
किस्सागुलसनोबर	अक्षरावली	मुहूर्त्तभार्गवीय स-	सामुद्रतत्त्वकौमुदी
सहस्रत्रजनीचरित्र	स्वयम्बोध	मुहूर्त्तदीपक	बरुड़पुराण श्लोक
रविन्सनकाइतिहास	ज्ञानचालीसी	बृहज्जातक सटीक	ल्य
भजनरीगीत	दोहावली	जातकालंकार स-	पंचरत्न फूल

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
हरिश्चंद्रमाखीम की पुस्तकें संस्कृत	भाषा चंद्रोदय	किष्किन्धाकाण्ड	सन् १८६६ ई०
	भूगोल तत्व	सुन्दरकाण्ड	ऐक्तस्थ्य अदालत
	भूगोल दर्पण	लंकाकाण्ड	२६ सन १८६७ ई०
	द्युति ह्रास तिमिर	उत्तरकाण्ड	मजमूआ ऐक्तबध
ऋजुपाठ १ भाग	नाशक १ भाग	गुटका १ भा० २ व ३	लगान १८ सन १८६८
तथा २ व ३ भाग	तथा २ व ३ भाग	हिस्बतमाचा मुद्द	ई० फ़ौजदारी २६
भास्वतीव	प्रबंध देशीय भूगोल	रिसान	सन १८६८ ई० वग़ैरह
बारहखड़ी बच्चोंकी	दूंदुलिस्तानका द्युति	पशुचिकित्सा	ऐक्तदाम्य दस्तावेज़ा
वर्णमाला कैथी अ-	ह्रास	पहाबरत कैथी	त १८६८ ई० ऐक्त ना-
तथा २ भाग	भारतवर्षीय द्युति	तथा क़ानूलियत	मुक़ाबरान मक़रू-
कैथी क़ायदी ना-	ह्रास	रजिस्टर दारियल	ज़ अवध २४ सन्
गरी	हितोपदिका	ख़ारिज़ुलुलखाम-	१८७० ई०
हरूफ़ मुफ़र्रदात	बाला भूषण	दमा	ऐक्तवीपायों का म-
अक्षर रूप	पद्यसंग्रह	रजिस्टर हाज़िरी-	बाख़्लत देजा १सन्
वर्ण प्रबोधिका	भाषा काव्य संग्रह	साठशाला	१८७७ ई०
१ भाग २ भाग	कविरत्नाकर	क़ानून कैथी	ऐक्त मजमूआ ज़ाब-
सूबे पूरबकी कहानी	१ भाग व २ भाग	पटवारियोंके क़ायदे	ता फ़ौजदारी २० सन्
पर्म सिंहका इतांत	मंगल कोष	उर्दू कैथी महाजनी	१८७२ ई०
शिक्षावली	अंक प्रकाश	टिकट के साथ सनद	ऐक्त मालगुज़ारी-
शिशु बोध	गणित प्रकाश १	का ऐक्ट २ सन्	मग़रबी वशिमाली
पत्रहितैषिणी	भाग	१८७८ ई०	१६ सन् १८७३ ई०
पत्र दीपिका	तथा २ व ३ व ४	नागरी	तरमीम मजमूआ
विद्यादक	गणित क्रिया	एक्तलगान मग़रबी	जाबिता फ़ौजदारी
विद्यांकुर	क्षेत्र प्रकाश	व शिमाली २० सन्	१२ सन् १८७४ ई०
पदार्थ विद्यासार	क्षेत्र चंद्रिका २ भा-	१८५८ ई०	तक़ादी के क़ायदे
पदार्थ ज्ञान विटप	सकील हायरा	यूरिडयन पिनल	सवाल व जवाब
भोज प्रबंध सार	रेखा गणित २ भा० २	कोर्ट मजमूआ जा-	पुलिस
राज नीति	बीज गणित १ भा० २	बिता फ़ौजदारी ऐ	अवध रुहेल खंड
भाषा लघु व्याकरण	रामायण तुलसीदास	क्ट २५ सन १८६३ ई०	रेलवे का दस्तूरुल
२ भाग	बाल काण्ड	ऐक्तस्टाम्प २ सन्	अमल
तथा २ भाग	अयोध्या काण्ड	१८६३ ई०	द्युति
भाषा तत्व दीपिका	आरण्य काण्ड	ऐक्त रजिस्ट्री २०	

